सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 02, नई दिल्ली । गुरुवार, 13 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 दिल्ली में 40 जगहों पर "आप" ने प्रदर्शन कर भाजपा को याद दिलाया
06 होली महोत्सव के सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व
08 'नई सोच' के साथ समाज सेवा की अनूठी पहल

राजधानी में ट्रैफिक पुलिस ने बढ़ाई भारी वाहनों पर सख्ती, इन वाहनों को नहीं मिलेगा प्रवेश

संजय बाटला

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने भारी वाहनों पर सख्ती बढ़ा दी है। सड़कों पर प्रवेश निषेध प्रतिबंधों को कड़ा किया जा रहा है। जनवरी और फरवरी में भारी वाहनों से 122 सड़क हादसे सामने आए हैं। अब ओवरलोड वाहनों को सड़कों पर चलने की अनुमति नहीं दी जाएगी। इनमें भारी परिवहन और माल वाहन टेम्पो क्रेन ट्रैक्टर और डिलीवरी वैन भी शामिल हैं।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में रात के समय सड़कों पर भारी ट्रक और वाणिज्यिक वाहन मौत बनकर दौड़ती हैं। ट्रैफिक नियमों की अनदेखी कर इन वाहन चालकों की चपेट में आने से लोग अकसर हादसे का शिकार होते हैं।। इस वर्ष जनवरी और फरवरी में इन भारी वाहनों से 122 सड़क हादसे सामने आए हैं।

इन भारी वाहनों पर सख्ती बरतते हुए दिल्ली ट्रैफिक पुलिस राजधानी की सड़कों पर प्रवेश निषेध प्रतिबंधों को कड़ा कर रही है और अब ऐसे ओवरलोड वाहनों को सड़कों पर चलने की अनुमति नहीं दी जाएगी। इन वाहनों में भारी परिवहन और माल वाहन, टेम्पो, क्रेन, ट्रैक्टर और डिलीवरी वैन भी शामिल हैं, जिनमें से लगभग 48 प्रतिशत परिवहन और माल वाहन हैं।

ट्रैफिक पुलिस ने क्यों लिया ये फैसला?

आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2021 से माल वाहनों और अन्य वाणिज्यिक वाहनों से जुड़ी दुर्घटनाएं 2024 तक 14 प्रतिशत बढ़ी हैं। 2023 में, इन वाहनों से जुड़ी ऐसी दुर्घटनाओं की संख्या कम से कम 267 थी, जो 2024 में बढ़कर 294 हो गई। इससे पहले, 2021 में यह कम से कम 240 और 2022 में कम से कम 258 थी।

इन भारी वाहनों से 2023 में 292 और 2024 में 317 मौतें हुई हैं। वाणिज्यिक वाहनों पर अंकुश लगाने में एक बड़ी चुनौती कानून का प्रवर्तन है। मौजूदा नो-एंट्री नियमों के बावजूद, कई ट्रक अवैध रूप से प्रतिबंधित क्षेत्रों में प्रवेश करते हैं। 2024 में नो-एंट्री उल्लंघन के लिए 93,684 चालान जारी किए गए, जबकि एक साल पहले 66,459 चालान जारी किए गए थे।

जनवरी और फरवरी में हुए कितने हादसे?

अधिकारियों ने कहा कि इनमें से कई वाहन ओवरलोड थे, जिससे वे अधिक असंतुलित हो गए और दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ गई। इससे निपटने के लिए, दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने अब जनवरी और फरवरी में हुई 122 दुर्घटनाओं में शामिल वाहनों को शहर में प्रवेश देने से मना कर दिया है।

ऐसे वाणिज्यिक वाहनों पर प्रतिबंध कूसे क्या होगा?

अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (ट्रैफिक) सत्यवीर कटारा के मुताबिक ये भारी वाणिज्यिक वाहन विशेष रूप से घनी आबादी वाले क्षेत्रों में और यहां तक कि कभी-कभी गैर-पीक ट्रैफिक घंटों के दौरान भी गंभीर जोखिम पैदा करते हैं।

इनमें से कई दुर्घटनाएं ओवरलोडिंग, ब्रेक फेल होने, चालक की थकान और लापरवाही से वाहन चलाने के कारण होती हैं। उन्हें प्रवेश की अनुमति न देना केवल नियमों को लागू करने के बारे में नहीं है, यह उनके लिए हमारे सड़कों पर संभावित हादसों से बचने का एक सबक है।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योतिषाचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

सोनिया विहार से जगतपुर तक उठाएं क्रूज का आनंद

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में यमुना नदी में क्रूज पर्यटन की शुरुआत होने जा रही है। यह एक नई पर्यावरण अनुकूल परिवहन प्रणाली होगी। इससे दिल्ली के पर्यावरण को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। यमुना को स्वच्छ और निर्मल बनाने के लिए ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। केंद्रीय बंदरगाह जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने इस योजना के लिए हर संभव मदद देने का आश्वासन दिया है।

नई दिल्ली। क्रूज पर्यटन, जिसका दिल्ली के लोगों को वर्षों से इंतजार था और जिस पर पिछले एक साल से काम चल रहा था, अब दिल्ली में निजाम बदलने के साथ ही कागजों पर आ गया है और जल्द ही इसके धरातल पर आने की उम्मीद है।

इसके लिए प्रस्ताव बनाया गया, मंजूरी दी गई और मंगलवार को इस योजना को लेकर दिल्ली और केंद्र सरकार के विभागों के बीच समझौते पर हस्ताक्षर भी हुए। सरकार की योजना अप्रैल से शुरू हो रहे नए वित्त वर्ष के पहले महीने में यमुना के पानी में ये क्रूज उतारने की है।

केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने इस योजना के लिए हर संभव मदद देने का आश्वासन दिया है।

यमुना नदी में क्रूज चलाने का रास्ता साफ

सोनिया विहार से जगतपुर (शनि मंदिर) तक यमुना नदी में क्रूज चलाने का रास्ता साफ हो गया है। करीब छह किलोमीटर की इस दूरी को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा।

इस योजना को मूर्त रूप देने के लिए मंगलवार शाम को आइटीओ के पास असिता पार्क में दिल्ली सरकार के पर्यटन विभाग, सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण, दिल्ली जल बोर्ड, दिल्ली विकास प्राधिकरण और केंद्र सरकार के भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (आइडब्ल्यूएआइ) के बीच समझौता हुआ।

इस मौके पर केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी एवं जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल, राज्य मंत्री शांतनु ठाकुर, उपराज्यपाल वीके सक्सेना, मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, दिल्ली सरकार के मंत्री प्रवेश वर्मा, कपिल मिश्रा, मुख्य सचिव धर्मेंद्र समेत अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

पुनर्जीवित होगी यमुना की सांस्कृतिक विरासत

केंद्रीय मंत्री सोनोवाल ने इस अवसर पर कहा कि केंद्र सरकार ने वर्ष 2016 में यमुना को राष्ट्रीय जलमार्ग 110 घोषित किया था। उन्होंने कहा कि क्रूज पर्यटन और फेरी सेवा की शुरुआत के साथ ही हम दिल्ली में एक नई पर्यावरण अनुकूल परिवहन प्रणाली की नींव रख रहे हैं।

दिल्ली में जाम से राहत के लिए अब ट्रैफिक पुलिस करेगी पीक आवर में लाउड हेलर का इस्तेमाल

दिल्ली पुलिस ने ट्रैफिक जाम की समस्या से निपटने के लिए एक पुराने तरीके को फिर से अपनाने का फैसला किया है। पुलिस अब पीक आवर में लाउड हेलर का इस्तेमाल करेगी। इस पायलट प्रोजेक्ट के तहत मथुरा रोड आईआईटी से मोदी मील धौलाकुआं से गुरुग्राम बॉर्डर महरौली-बदरपुर रोड आदि पर यह व्यवस्था शुरू की जाएगी। अगर यह प्रयोग सफल होता है तो इसे पूरी दिल्ली में लागू किया जाएगा।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दस साल से यातायात जाम को लेकर दिल्ली पुलिस की दिल्ली सरकार व सरकार के संबंधित विभागों से आपसी सामंजस्य न बन पाने के कारण समस्या का हल नहीं हो पा रही थी। मगर, दिल्ली में अब डबल इंजन की सरकार बन जाने पर दिल्ली पुलिस की दिल्ली सरकार से बेहतर सामंजस्य हो जाने के कारण जाम की समस्या का काफी हद तक हल निकालने की कोशिश की जा रही है।

पीक आवर में जाम को संभालने के लिए होगा इसका इस्तेमाल

रोड इंजीनियरिंग आदि को लेकर यातायात पुलिस की तमाम संबंधित विभागों से पिछले कई दिनों से लगातार बैठकें हो रही हैं। इसी कड़ी में यातायात पुलिस ने सबसे कारगर प्रयास के तौर पर पहले पीक आवर में जाम को संभालने के लिए लाउड हेलर का इस्तेमाल करने का निर्णय लिया है।

यातायात पुलिस (Delhi Police) का यह पुराना परंपरागत तरीका है जिसे इस तकनीकी युग में बंद कर दिया गया था, लेकिन अब फिर से पुलिस इस परंपरागत तरीके को अपनाने जा रही है।

इन रूटों पर होगी व्यवस्था

विशेष आयुक्त यातायात अजय चौधरी के मुताबिक सुबह और शाम पहले पीक आवर में बाइक सवार यातायात कर्मी लाउड हेलर का इस्तेमाल करेंगे। पायलट प्रोजेक्ट के तहत इसे मथुरा रोड, आईआईटी से मोदी मील, धौलाकुआं से गुरुग्राम बॉर्डर, महरौली-बदरपुर रोड आदि पर केवल तीन-तीन कैरिज्वे में इस तरह की व्यवस्था जल्द शुरू करेगी।

प्रयोग अगर सफल हुआ तब पूरी दिल्ली में इस तरह की व्यवस्था शुरू की जाएगी। यातायात पुलिस के पास हजारों की संख्या में लाउड हेलर हैं। बाइक पर सवार होकर दो-दो यातायात कर्मी लाउड हेलर लेकर गश्त करेंगे। पुलिसकर्मियों को जहां कोई गाड़ी रोककर खड़ा होते, वाहन चलाने के दौरान मोबाइल का प्रयोग करते नजर पड़ेगी।

पुलिसकर्मियों को चालान काटने की दी जाएगी अनुमति

सड़कों पर अतिक्रमण दिखेगा, वाहनों के ब्रेक डाउन होने का पता चलेगा तब पुलिसकर्मी लाउड हेलर से वाहन चालकों को निर्देश जारी करेंगे। यातायात नियमों का उल्लंघन करने पर उन्हें नसीहत देंगे। पुलिस अधिकारी का कहना है कि यह बहुत कारगर प्रयोग साबित हो सकता है। धीरे-धीरे गश्त करने वाले पुलिसकर्मियों को चालान काटने की अनुमति दे दी जाएगी।

एडिशनल पुलिस आयुक्त सत्यवीर कटारा का कहना है कि जाम को खत्म करने के लिए हर संभव रणनीति तैयार की जा रही है। सड़कों से अतिक्रमण हटाए जा रहे हैं। 66 दिल्ली पुलिस एक्ट के तहत रेहड़ी पटरी वालों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है।

सभी सड़कों व खासतौर पर बोटलनेक वाले जगहों पर संबंधित विभाग के अधिकारियों के साथ मौके का मुआयना किया जा रहा है। वहां रोड इंजीनियरिंग को लेकर मंथन किया जा रहा है। जिस विभाग के जिम्मे जिस काम के बारे में पता चल रही है उन्हें ठीक करने की जिम्मेदारी सौंपी जा रह है।

नई दिल्ली स्टेशन पर प्लेटफॉर्म टिकट बंद कर दिया...

होली पर भारी भीड़ को लेकर करनी पड़ी क्लोन ट्रेनों की व्यवस्था

परिवहन विशेष न्यूज

रेलवे स्टेशन पर अतिरिक्त टिकट काउंटर बनाने के बाद भी यात्रियों को अनारक्षित टिकट लेने के लिए कतार में लगना पड़ा। हालात का जायजा लेने के लिए दिल्ली डिवीजन के डीआरएम पुष्पेश आर त्रिपाठी खुद अपनी टीम के साथ पहुंचे। बसों में चढ़ने के लिए मारामारी मची रही और यात्रियों को सीट मिलना मुश्किल हो गया। भीड़ को देखते हुए रेलवे स्टेशन ने प्लेटफॉर्म टिकट बंद कर दिया है।

दिल्ली। आनंद विहार रेलवे स्टेशन और बस स्टेशन पर बुधवार को भीड़ रही। अपनों के साथ होली मनाने घर जाने वाले यात्रियों की भारी भीड़ थी। ऐसे में रेलवे को क्लोन ट्रेनों की व्यवस्था करनी पड़ी।

रेलवे स्टेशन पर अतिरिक्त टिकट काउंटर बनाने के बाद भी यात्रियों को अनारक्षित टिकट लेने के लिए कतार में लगना पड़ा। हालात का जायजा लेने के लिए दिल्ली डिवीजन के डीआरएम पुष्पेश आर त्रिपाठी खुद अपनी टीम के साथ पहुंचे। बसों में चढ़ने के लिए मारामारी मची रही और यात्रियों को सीट मिलना मुश्किल हो गया।

रेलवे स्टेशन ने प्लेटफॉर्म टिकट बंद कर दिया

होली पर होने वाली भीड़ को देखते हुए रेलवे स्टेशन ने प्लेटफॉर्म टिकट बंद कर दिया है। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए आरक्षित व अनारक्षित टिकट वाले यात्रियों को अलग-अलग लाइन से प्लेटफॉर्म पर भेजा गया।

आरपीएफ जवानों ने प्लेटफॉर्म पर रस्सी से एक सीमा तय कर दी, ट्रेन आने से पहले किसी को उस सीमा से आगे जाने की इजाजत नहीं थी। मुजफ्फरपुर की ओर जाने वाली सप्तक्रांति एक्सप्रेस के समय काफी भीड़ थी। कई यात्रियों की यह ट्रेन छूट गई।

यात्रियों की छूटने पर चलाई गई क्लोन ट्रेन

इसके बाद रेलवे के आला अधिकारियों से बात कर सप्तक्रांति एक्सप्रेस की क्लोन ट्रेन की व्यवस्था की गई। बुधवार को एक अतिरिक्त होली स्पेशल ट्रेन भी चलाई गई। आनंद विहार बस स्टैंड पर सभी बसें फुल मिलीं।

यात्रियों को बसों में चढ़ने के लिए मशक्कत करनी पड़ी। कई यात्री जो भारी भीड़ के कारण बस में नहीं चढ़ पाए, वे दूसरी बस का इंतजार करते दिखे।

250 स्पेशल ट्रेनें चलाने की घोषणा

महाकुंभ के बाद अब होली की भीड़ रेलवे स्टेशनों पर पहुंचने लगी है। रेलवे प्रशासन के सामने रेलवे स्टेशनों पर भीड़ को संभालने की चुनौती है। इसे ध्यान में रखते हुए नई दिल्ली, आनंद विहार टर्मिनल समेत अन्य प्रमुख स्टेशनों पर विशेष कदम उठाए गए हैं। होली तक लगभग सभी रूटों की ट्रेनों में भीड़ है। पूर्व दिशा की ओर जाने वाली ट्रेनों में सबसे ज्यादा भीड़ है। किसी भी नियमित ट्रेन में जगह नहीं है। लंबी वेटिंग लिस्ट है। इसे देखते हुए उत्तर रेलवे के विभिन्न स्टेशनों से करीब 250 स्पेशल ट्रेनें चलाने की घोषणा की गई है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

होली के रंग चुने अपनी राशि के अनुसार

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक (इंजी)

होली का त्यौहार रंगों और खुशियों, मेल मिलाप, आपसी सौहार्द का को बढ़ाने वाला त्यौहार है यह तब और शुभ हो जाता है जब हम अपने राशि के अनुसार रंगो का प्रयोग करें। किस राशि के लिए कौन सा रंग शुभ होता है, ये रंग राशि के ग्रह स्वामी के आधार पर बताए जा रहे हैं।

मेष राशि : लाल केसरिया तथा गुलाबी रंग का होली में आपके लिए भाग्यशाली साबित होगा। सबसे पहले केसरिया रंग हनुमान जी को अर्पित करें।

वृष राशि : वृष राशि के जातकों को सफेद,नीला और सिल्वर रंग का उपयोग करना भाग्यशाली साबित होगा। भगवान राधा कृष्ण को सबसे पहले यह रंग अर्पित करके होली खेलें।

मिथुन राशि : मिथुन के जातकों को हरा तथा केसरिया रंग का प्रयोग करना शुभ रहेगा। सबसे पहले यह रंग भगवान गणेश जी को अर्पित करें।

कर्क राशि : कर्क राशि के जातकों को सफेद,सिल्वर और गुलाबी रंग का प्रयोग शुभ साबित होगा। भगवान शिव को पहले अर्पित करके होली खेलें।

सिंह राशि : सिंह के लोगो के लिए पीला और केसरिया रंग का उपयोग भाग्यशाली सिद्ध होगा। भगवान सूर्य को या हनुमान जी को रंग सबसे पहले अर्पित करें।

कन्या राशि : कन्या राशि वालों को हरा,सफेद और पीले रंग का उपयोग शुभकारी रहेगा। भगवान गणेश और कृष्ण जी को सबसे पहले रंग अर्पित कर होली की शुरुआत करें।

तुला राशि : सफेद,केसरिया और लाल रंग का उपयोग तुला के लिए भाग्यशाली सिद्ध होगा। भगवान राधा कृष्ण को सबसे पहले यह रंग अर्पित करें।

वृश्चिक राशि : वृश्चिक राशि के जातकों के लिए लाल, पीला तथा केसरिया रंग का उपयोग लाभकारी रहेगा। हनुमान जी को रंग अर्पित करके होली का आरंभ करें।

धनु राशि : धनु राशि के जातकों के लिए पीला, हरा,केसरिया,लाल रंग का उपयोग लाभकारी सिद्ध होगा। भगवान विष्णु को यह रंग सबसे पहले अर्पित करके होली की शुरआत करें।

मकर राशि : मकर राशि के लिए नीला,सफेद और काला रंग भाग्यशाली सिद्ध होगा। भगवान शिव को यह रंग अर्पित करके होली की शुरुआत करना लाभकारी।

कुंभ राशि : कुंभ के लिए नीला,काला,सफेद,पीला रंग भाग्यशाली रहेगा। भगवान हनुमान और शिव जी को रंग अर्पित कर होली की शुरुआत करें।

मीन राशि : मीन राशि के लिए पीला,लाल,सफेद,गुलाबी रंग लाभकारी सिद्ध होगा। सबसे पहले भगवान कृष्ण को यह रंग अर्पित करें।

होलिका दहन

होली पर भद्रा का साया रहने से आज रात 11 बजकर 27 मिनट से मध्य रात्रि 12 बजकर 30 मिनट तक है। होलिका दहन का मुहूर्त आज देर रात यानी 13 मार्च गुरुवार करीब आधी रात में होलिका दहन किया जाएगा और अगले दिन यानी शुक्रवार को रंगों वाली होली खेली जाएगी। हर वर्ष फाल्गुन मास की पूर्णिमा तिथि को होलिका दहन किया जा है और इस छोटी होली भी कहा जाता है. होलिका दहन में तिथि, भद्रा और शुभ मुहूर्त का विशेष ध्यान रखा जाता है. लेकिन होलिका दहन पर इस बार सुबह 10 बजकर 35 मिनट से रात 11 बजकर 26 मिनट तक भद्रा का साया रहने वाला है. शास्त्रों के अनुसार, होलिका दहन कभी भी भद्रा काल में नहीं करना चाहिये। पूरे दिन भद्रा का साया रहने से होलिका दहन के लिए शुभ समय क्या होगा, आइए जानते है, बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व होलिका दहन का पर्व बुराई पर अच्छाई के जीत के तौर पर मनाया जाता है और हर वर्ष यह पर्व फाल्गुन मास की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है. कहा जाता है कि विधि पूर्वक और नियमों के साथ होलिका दहन किया जाए तो सभी चिंता व परेशानियां भी उसी अग्नि में स्वाहा हो जाती हैं और परिवार में सुख-शांति का वास होता है. इस पर्व का सभी बेसब्री से इंतजार करते हैं और दूर दूर से अपने घरों में जाते हैं. इस शुभ दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के साथ चंद्र देव की भी पूजा की जाती है. मान्यता है कि ऐसा करने से मानसिक शांति मिलती है और धन धान्य की कभी कमी नही होती। 13 मार्च को होलिका दहन

फाल्गुन पूर्णिमा प्रारंभ – 13 मार्च, सुबह 10 बजकर 35 मिनट से

फाल्गुन पूणिमा समापन – 14 मार्च, दोपहर 12 बजकर 24 मिनट तक। 13 मार्च को दिन और रात को पूर्णिमा तिथि होने की वजह से होलिका दहन इसी दिन किया जाएगा।

भद्रा का समय भद्रा काल – 13 मार्च, सुबह 10 बजकर 35 मिनट से 11 बजकर 26 मिनट तक।

भद्रा की पूंछ – शाम 6 बजकर 57 मिनट से रात 8 बजकर 14 मिनट से।

भद्रा का मुख – रात 8 बजकर 14 मिनट से रात 10 बजकर 22 मिनट तक।

तेरह मार्च को चंद्रमा सिंह राशि में संचार करेंगे, जिसकी वजह से भद्रा का साया मृत्यु लोक में रहेगा. शास्त्रों के अनुसार, जब भद्रा मृत्यु लोक में होती है, तब सबसे ज्यादा हानिकारक मानी जाती है. होलिका दहन पर भद्रा करीब 12 घंटे 51 मिनट तक रहेगी।

होलिका दहन का पूजा मुहूर्त तेरह मार्च को होलिका दहन वाले दिन दोपहर 1 बजकर 30 मिनट से दोपहर 3 बजे तक राहुकाल का समय रहेगा इसलिए इस अवधि में होली पूजन से बचें. शास्त्रों के अनुसार, राहुकाल में पूजन करना अशुभ माना गया है इसलिए होली पूजन का समय 10 बजकर 35 मिनट से 1 बजकर 29 मिनट तक रहेगा।

होलिका दहन का शुभ मुहूर्त 13 मार्च को होलिका दहन वाले दिन होलिका दहन के लिए 1 घंटा 4 मिनट का समय मिलेगा. दरअसल रात 11 बजकर 26 मिनट तक भद्रा व्याप्त रहने की वजह से होलिका दहन नहीं किया जा सकेगा। होलिका दहन मुहूर्त – रात 11 बजकर 27 मिनट से मध्य रात्रि 12 बजकर 30 मिनट तक रहेगा।

कर्म फल की मान्यता क्यों?

भारतीय संस्कृति में कर्मफल के सिद्धांत को विश्वासपूर्वक मान्यता प्रदान की गई है। मनुष्य को जो कुछ भी उसके जीवन में प्राप्त होता है, वह सब उसके क्मो का ही फल है। मनुष्य के सुख-दुख, हानि-लाभ, जीत-हार, सुख-दुख के पीछे उसके कर्मो को आधार माना गया है।

कर्म फल भोगने की अनिवार्यता पर कहा गया है

नाभक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतरपि।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ॥ -ब्रह्मवैवर्तपुराण 37/16

अर्थात् करोड़ों कल्प वर्ष बीत जाने पर भी कर्मफल भोगे बिना, मनुष्य को कर्म से छुटकारा नहीं मिल सकता। वह शुभ या अशुभ जैसे भी कर्म करता है, उसका फल अवश्य भोगना पड़ता है। यही बात शिवमहापुराण और महाभारत के वनपर्व में भी कही गई है।

ऐहिकं प्राक्तनं वापि कर्म यचितं स्फुरत। पौरुषोऽसौ परो यत्नो न कदाचन निष्फलः ॥ -योगवासिष्ठ 3/95/34

अर्थात्पूर्वजन्म और इस जन्म के किए हुए कर्म, फल रूप में अवश्य प्रकट होते हैं। मनुष्य का किया हुआ यत्न, फल लाए बिना नहीं रहता है।

रामायण के अयोध्याकांड में देवगुरु बृहस्पति देवराज इंद्र को भगवान्की कर्म-मर्यादा का बोध कराते हुए कहते हैं

कर्म प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करै सो तस फल चाखा॥
काहु न कोउ सुख-दुख कर दाता।
निज कृत करम भोग सब भ्राता।

अर्थात्विश्व में कर्म ही प्रधान है, जो जैसा करता है, उसे वैसा फल भोगना ही पड़ता है। दुनिया में कोई किसी को न दुख देने में समर्थ है, न सुख देने में। सभी व्यक्ति अपने किए हुए कर्मो का ही फल भोगते हैं। कहा जाता है कि बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों, ज्ञानी-ध्यानी, महाराजाधिराज, पराक्रमी, बड़े-बड़े सम्राट, महापुरुषों, बलशाली व्यक्तियों को भी अपने- अपने कर्मों का फल भोगना पड़ा है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान्-श्रीराम को 14 वर्ष का वनवास मिला और उनकी पत्नी माता सीता का अपहरण हुआ। महाबलशाली भीम को रसोइया बनकर नौकरी करनी पड़ी। महाप्रतापी सम्राट् नल को अपनी प्राण प्यारी पत्नी दमयंती को वन में अकेला छोड़कर राजा ऋतुपर्ण का कोचवान बनना पड़ा। महाराजा हरिश्चन्द्र को श्मशान में चांडाल की चाकरी करनी पड़ी। महारानी द्रौपदी को सैरन्ध्री बनकर रानियों की सेवा करनी पड़ी। महाप्रतापी और गांडीवधारी अर्जुन को हिजड़ा बनकर विराटूराज की कन्या को नाचना सिखाना पड़ा।

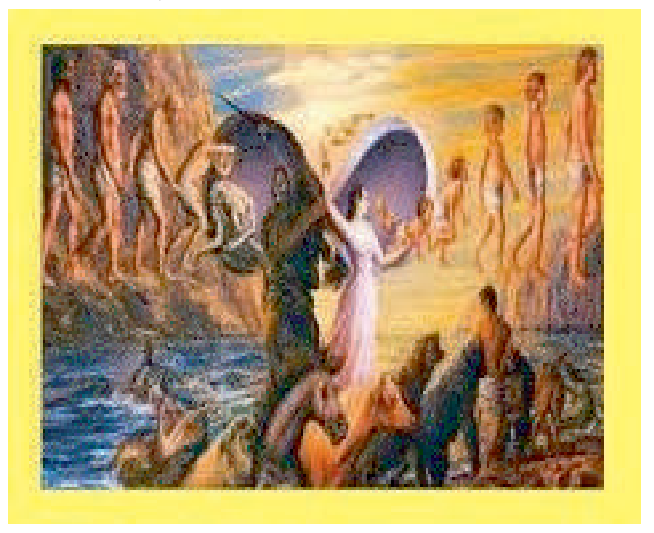

एक व्यक्तित्व है जो अपने ही संबंध में कभी कुछ समझा नहीं पाता और दूसरे उसे समझ नहीं पाते। वह व्यक्तित्व है पुरूष।

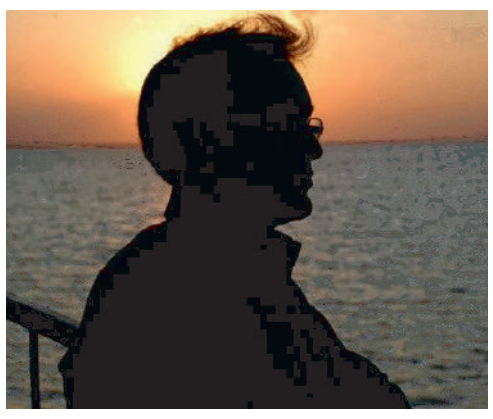

कहीं वह पुत्र, कहीं भाई, कहीं पति, कहीं पिता के रूप में, हमारे आसपास ही है लेकिन समझने/जानने में सदा वह दूर ही दिखाई देता है। पैदा होने के साथ ही, छठी के दूध के साथ उसको 'पुरूष/आदमी रोते नहीं हैं' कह कर उसके सहज/स्फूर्त व्यवहारिक हृदय-संरचना को भी अवरूद्ध कर दिया। थोड़ा बड़े होने पर, पिता के बाद उसे घर/मां/बहन/भाभी की सुरक्षा का दायित्व भी मिल जाता है। किशोरावस्था में उठते हार्मोनल चैंजिज के चलते अपनी बात/जिज्ञासायें/कौतुहल शांत/समाधान करने का वरिष्ठों से कोई शिक्षण/सहयोग/साथ नहीं मिलता। समझा यही जाता है कि यह तो पुरुष/लड़के हैं और सब अपने-आप जान जाते हैं या जानी-जान होते हैं। उनके प्रश्न अनसुलझे ही रह जाते हैं। तब वह सड़क छाप पत्रिकाओं का सहारा लेकर, सिनेमा/फिल्मों की फूहड़ता/दिखावा लेकर, अपने जैसे अनघढ दोस्तों के साथ निकल लेते हैं
भटकाव/नशे/वासना/मौज-मस्ती की दुनिया में। अपने चारों तरफ स्त्री किरदारों को देखकर भी समझ नहीं पाते और अपने स्वयं के संबंध में समझा/बता भी नहीं पाते। भयभीत रहते हैं कि कहीं उनके पौरूष का मज़ाक न बन जाये? कोई तो हो जो उनको समझे। अपनी तरफ से बहुत कोशिश करते हैं सबको खुश रखने की लेकिन सब गड़बड़ हो जाता है। शादी के बाद, मां की असुरक्षा ताने मारती है और पत्नी, पति के रिश्तों से सामंजस्य नहीं बिठाना चाहती। न पत्नी खुश और न मां सुखी, दोनों के बीच में, चक्की के पाटों में गेंहू की भांति पिसता हुआ पुरूष, उस स्थिति को न निगल पाता है, न उगल पाता है। अपनी क्षमता के भीतर, सारी जिम्मेदारियों को निभाते हुये भी वह प्रतिक्षण जहर का घूंट पीने को मजबूर रहता है। जबकि हर मां अपने पुत्र को और हर पत्नी अपने पति की दीर्घायु की कामना करती हैं लेकिन वह सभी समझ ही नहीं पातीं कि अपनी इस रस्साकसी में अपने उसी प्राण-प्यारे का गला घोंट देतीं हैं। ध्यान रहे कि हम जिसके साथ होते हैं, उसको ही हम समझने में सबसे ज्यादा वंचित/अंधेरे में रह जाते हैं।

बवासीर के घरेलू उपाय

काले तिल, नागकेसर और मिश्री प्रत्येक समान मात्रा में लेकर वह पीसकर मक्खन में मिलाकर सेवन करने से जो खूनी बवासीर होती है उसमें फायदा मिलता है यह मेरा परीक्षित प्रयोग है

अकेले काले तिल 10 ग्राम लेकर 10 ग्राम मक्खन में मिलाकर प्रतिदिन सुबह के समय निरंतर एक हफ्ता लेने से खूनी बवासीर खत्म हो जाती हैं

अगर खूनी बवासीर ज्यादा हो तो सुबह के समय बकरी का दूध खाली पेट पीने से भी फायदा मिलता है

अगर मस्सों में खुजली दर्द व सूजन आदि कष्ट हो तो भांग को जल में पीसकर उसकी लुगदी को गाय के घी में सेक कर कुछ गर्म करके एक टिकिया से बनाकर मस्सों पर लगा दें मास झाड़ भी जाएंगे और समस्या भी दूर हो जाएगी।

हंसी मजाक करने वाले को अक्सर हल्का आदमी समझ लिया जाता है

अगर आप ज़्यादातर वक़्त 'लाइट मूड' में रहते हैं और हंसी ठिठोली करते हैं तो इसका यह अर्थ लिया जाता है कि आपमें ज्ञान, परिपक्वता और रिस्पांसिबिलिटी का अभाव है। यही वज़ह है कि भारत में ज़्यादातर लोग गंभीरता का लबादा ओढ़े रहते हैं।
पिता अपने बच्चों से हंसी मज़ाक नहीं करता,
अधिकारी कर्मचारियों के सामने तने रहता है।
सार्वजनिक स्थलों पर भी सभी लोग रुखे और शुष्क बने रहते हैं। ज़िन्दिगी भर इस गंभीरता को ओढ़-ओढ़े, उनके चेहरे के नक्शो-खुतूत और मांसपेशियां, एक स्थायी 'खड़ूसपन' को प्राप्त हो जाती हैं।
यही पथराया चेहरा भारत के लोगों का कॉमन फीचर है। फिर दिन भर न हंस पाने वाला यह व्यक्ति,
1. मोबाइल पर चुटकुले और लाफ्टर शो देखकर हंसता है,
2. सुबह योगासन के बाद नकली हास्यासन करता है,
3. देखभाल कर सिर्फ़ वहीं हँसता है जहां हंसने को सार्वजनिक स्वीकृति प्राप्त है, और पुन: अपनी 'खड़ूसावस्था' में लौट आता है,
4. वह मज़ाक भी सिर्फ़ उन्हीं से करता है जो एकदम करीबी है, अजनबी के सामने तन जाता है गोया, हँस बोल लेने से वह जेब ही काट लेगा,
5. फिर स्त्री का हंसी मज़ाक करना तो और भी कठिन है. इसे उसके चरित्र से जोड़कर देखा जाता है। शायद इसीलिए दो स्त्रियां जब अकेले में मिलती हैं तो बात-बेबात खूब हंसती हैं। क्योंकि अन्य जगहों पर उनके हंसने बोलने पर सौ निगाहें लगी हैं।
6. मज़दूर, कामगार, स्वीपर, मिस्त्री से मज़ाक करना तो जैसे अपराध ही है। मानो मज़ाक करने से वह हमें कम आंक लेगा और हम लुट जाएंगे इसीलिए गैर प्रतिभाशाली, मूर्ख, डंब डफर लोग, गंभीरता का मुखौटा पहनकर अपनी ठसक बनाए रखते हैं। उन्हें मालूम है कि 'बंद मुट्ठी लाख की' कि कहीं ज़्यादा हंस-बोल लिए तो हमारा अज्ञान और नासमझी न प्रकट हो जाए।

ज्ञान पड़ता है कि सिर्फ हंस-बोल न पाने के कारण ही आधी आबादी बीपी, शुगर और हृदय रोग की चपेट में है क्योंकि गंभीर आदमी के भीतर कोई हैप्पी हारमोंस ही सीक्रेट नहीं हो रहे उल्टे 'बेड हारमोंस' ही आर्टिरीज और वेंस को सिकोड़े दे रहे हैं। हम लोगों ने गंभीरता को आभूषण की तरह सर पर चढ़ा रखा है जबकि सच इसका उल्टा है। सच तो यह है कि
1. अनावश्यक गंभीरता, अज्ञान की निशानी है।
2. हास्य विनोद तो बुद्धिमता का ट्रेडमार्क है,
3. महात्मा गांधी, आइंस्टीनसे लेकर, अटल जी तक सभी विद्वान, सरल हृदय और हास्य प्रधान रहे हैं,
4. भगवान कृष्ण तो इतने हँसोड़ थे कि बहुत बार उन्हें मसखरा समझ लिया जाता था,
5. हास्य विनोद, सरल व्यक्तित्व की निशानी है,
6. हंसना-बोलना, आत्मविश्वास का सूचक है।
गंभीरता गहन में किसी अज्ञान की खबर है। यह ना-काबालियत को छिपाने के लिए ओढ़ा गया आवरण है। गंभीरता को बहुत ग्लोरिफाई करने की जरूरत नहीं है। गैर जरूरी गंभीरता, एक ठहरा हुआ पोखर है जबकि हास परिहास, तीव्र बहती नदी है:ये निर्मल, स्वच्छ, गंभीरता, रुग्ण मस्तिष्क की खबर है। हंसी, पाकीज़ा दिल की पहचान है।

निर्ग्रंथ जीवन जीने के लिए जितना दुख की निकासी जरुरी है उतना ही हास्य का प्राकट्य भी

प्राण प्रतिष्ठा का पूरा सत्य?

प्राण प्रतिष्ठा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक गूढ़ आध्यात्मिक विज्ञान है। क्या सच में मूर्ति में 'प्राण' डाले जाते है, या यह केवल आस्था का विषय है? आइए इसका गूढ़ रहस्य समझते हैं। प्राण प्रतिष्ठा शब्द में श्प्राणश् का अर्थ केवल सांस लेने वाली जीवन शक्ति नहीं, बल्कि एक सूक्ष्म ऊर्जा है। यह ऊर्जा पांच स्तरों पर कार्य करती है: स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण और ब्रह्म।
प्राण प्रतिष्ठा कैसे कार्य करती है? यह प्रक्रिया मुख्य रूप से तीन स्तरों पर काम करती है:
1. मानसिक स्तर : व्यक्ति की आस्था और विश्वास
2. ऊर्जात्मक स्तर : यंत्र, मंत्र और तंत्र द्वारा ऊर्जा स्थानांतरण
3. दिव्य स्तर : किसी भगवत महापुरुष द्वारा मूर्ति में इष्ट का आवाहन
क्या मूर्ति सच में चेतन बन जाती है? मूर्ति एक माध्यम है, जिसमें देवता की चेतना को आमंत्रित किया जाता है। विज्ञान के अनुसार जब किसी वस्तु पर बार-बार ध्यान केंद्रित किया जाता है तो उसमें विशेष ऊर्जा संचित होने लगती है।

सुन्दरता के तीन पुराने रत्न पुदीना-आलू-टमाटर

1. महकता पुदीना आपको मुंहासों की समस्या से मुक्ति दिला सकता है। पुदीना पेस्ट में चंदन पाउडर और मुल्तानी मिट्टी मिलाकर चेहरे पर लगाएं। सूखने पर धो लें। इसका नियमित इस्तेमाल पिम्पल्स दूर करने में सहायक है।
2. आलू की पतली स्लाइसें आंखों पर रखने से थकी आंखों को राहत मिलती है। कच्चे आलू का रस आंखों के डार्क सर्कल्स दूर करता है। आलू उबालने के बाद बचा पानी फेंकिए नहीं, बल्कि इसमें कुछ देर हाथ डुबोकर रखें, फिर साफ पानी से धोएं। आपके हाथ साफ व मुलायम हो जाएंगे।
3. टमाटर के रस में नींबू का रस मिलाकर लगाने से खुले रोम छिद्रों की समस्या दूर होती है। तैलीय त्वचा होने पर टमाटर को आधा काटकर चेहरे पर रगड़ें। कुछ देर बाद चेहरा धोकर पोंछ लें। ऐसा करने से अतिरिक्त तैलीयता दूर होती है।

शाब्दिक ज्ञान पहेली

1 सखा? - मित्र
2 इकट्ठा?- एकत्र*
3 सभी जगह?- सर्वत्र
4 पंचगव्य में से एक?- गौमूत्र
5 महाभारत युद्ध की जगह?- कुरुक्षेत्र
6 पढ़ाई का छः माह का काल?- सत्र
7 लड़का?- पुत्र
8 विद्यार्थी?- छात्र
9 केवल?* मात्र
10 गणित के नियम?- सूत्र
11 आंख?- नेत्र
12 नाटक के कलाकार?- पात्र
13 श्लोक? - मंत्र
14 चिट्ठी/संदेश? - पत्र
15 नक्शा?- मानचित्र
16 तारे ग्रह?- नक्षत्र
17 चाल चलन?* चरित्र
18 कपड़ा?- वस्त्र
19 लक्ष्मण का दूसरा नाम?- सौमित्र
20 हथियार?- अस्त्र
21 उटपटांग? - विचित्र
22 शुभ-पावन?- पवित्र
23 सौभाग्य के लिए पहने जाने वाली माला? - मंगलसूत्र
24 हजार?- सहस्त्र
25 छल-कपट? - षड़यंत्र
26 बेटे का बेटा?- पौत्र
27 बर्तन?- पात्र

दिल्ली में 40 जगहों पर "आप" ने प्रदर्शन कर भाजपा को याद दिलाया होली पर मुफ्त सिलेंडर देने का चुनावी वादा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने महिलाओं को 2500 रुपए देने का वादा जुमला साबित होने के बाद भाजपा को होली पर मुफ्त सिलेंडर देने के उसके दूसरे वादे को याद दिलाया है। ''आप'' के वरिष्ठ नेता व पूर्व विधायक ऋतुराज झा, दिल्ली की पूर्व मेयर डॉ. शैली ओबेरॉय समेत कई नेताओं ने दिल्ली के अंदर करीब 40 जगहों पर प्रदर्शन कर भाजपा से होली पर मुफ्त सिलेंडर देने के पीएम मोदी के वादे को पूरा करने की मांग की। प्रदर्शन में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल हुई। इस दौरान भाजपा की दिल्ली सरकार से खाली सिलेंडर को भरने की मांग करते हुए नारेबाजी कर रहे ऋतुराज झा समेत कई ''आप'' कार्यकर्ताओं को दिल्ली पुलिस ने हिरासत में ले लिया।

आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता और नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने कहा कि भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनाव से पहले दिल्ली की महिलाओं को कई वादे किए थे। भाजपा का महिलाओं को 8 मार्च तक 2500 रुपए देने का वादा तो जुमला और धोखा साबित हो गया। पीएम मोदी ने होली-दिवाली पर हर महिला को एक फ्री सिलेंडर देने का दूसरा वादा किया था। दिल्ली की महिलाएं मुफ्त सिलेंडर देने के वादे को पूरा होने का इंतजार कर रही हैं। अभी होली में दो दिन और बचे हैं। दिल्ली की महिलाएं इंतजार कर रही हैं कि क्या उनको फ्री का सिलेंडर मिलेगा या फिर 2500 रुपए की तरह ही फ्री सिलेंडर का वादा भी जुमला साबित होगा? दिल्ली की महिलाएं खाली सिलेंडर लेकर अलग-अलग इलाको में भाजपा के खिलाफ प्रदर्शन कर रही हैं।

आम आदमी पार्टी का कहना है कि दिल्ली में भाजपा को उसके चुनावी वादे याद दिलाना भी अब जुर्म हो गया है। बुधवार को आईटीओ पर आम आदमी पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भाजपा को होली पर्व पर मुफ्त सिलेंडर देने के उसके चुनावी वादे याद दिलाया तो दिल्ली पुलिस ने उनको हिरासत में ले लिया। भाजपा ने पहले महिलाओं को

2500 रुपए देने का वादा करके ठगा और अब वह मुफ्त सिलेंडर देने से भी मुकरने की तैयारी कर रही है। क्या भाजपा अपने सभी वादे जुमले साबित करेगी? वहीं, दिल्ली की पूर्व मेयर डॉ. शैली ओबेरॉय समेत ''आप'' कार्यकर्ताओं ने मंडी हाउस पर प्रदर्शन कर भाजपा से चुनावी वादे पूरे करने की मांग की। इसी तरह, कालकाजी और संगम विहार समेत अन्य जगहों पर ''आप'' कार्यकर्ताओं सिलेंडर के साथ प्रदर्शन किया और कहा कि 2500 रुपए का वादा तो जुमला निकला, क्या होली पर मुफ्त सिलेंडर मिलेगा या फिर यह भी जुमला निकलेगा?

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व विधायक ऋतुराज झा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनाव से पहले दिल्ली के लोगों से बहुत सारे वादे किए थे। इसमें महिलाओं के खाते में 2500 रुपए डालने और होली-दिवाली पर एक सिलेंडर मुफ्त देने के दो प्रमुख वादे थे। महिलाओं को 8 मार्च तक 2500 रुपए देने थे। 8 मार्च निकल चुकी है। लेकिन अभी तक महिलाओं का पंजीकरण भी शुरू नहीं हुआ है। पैसे आने तो बहुत दूर की बात है। अब दिल्ली की महिलाएं होली पर मुफ्त सिलेंडर मिलने का इंतजार कर रही हैं। घर में सिलेंडर खाली पड़ा है। लोग त्यौहार कैसे मनाएं? लोगों को लगा कि मोदी ने गारंटी दी तो सच ही होगा। लेकिन सच नहीं हुआ। भाजपा दिल्ली के लोगों को बताए कि मोदी जी की गारंटी कहां गई? दिल्ली की हमारी माताएं-बहनें अपने खाली सिलेंडर भरने का इंतजार कर रही हैं। कहीं ऐसा न हो कि दिल्ली की भाजपा सरकार कह दे कि बुरा न मानो होली है, सिलेंडर खाली ही रहेगा।

विपक्ष के रूप में भी जारी उनकी आराजक टकराव एवं झूठ की राजनीति "आप" को दिल्ली की राजनीति से ही साफ कर देगी -- वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नईदिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की आम आदमी पार्टी बहुत तेज़ी से अपने पतन की ओर बढ़ रही और वो दिन दूर नही जब 'आप' विपक्षी दल का दर्जा भी खो दे।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की 'आप' ने महिला समृद्धि योजना को लेकर दिल्ली वालों को गुमराह करने की कोशिश की और जब 8 मार्च को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने योजना को लेकर बजट एवं समयबद्ध घोषणा कर दी तो अब वह होली पर गैस सिलेंडर को लेकर गुमराह करना चाह रहे हैं।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की आज संचार एवं सोशल मीडिया के युग में लोग भलीभांति जानते हैं की फ्री गैस सिलेंडर जैसी बड़ी योजना प्रारम्भ करने की प्रशासनिक सवीकृतियां एवं नियम बनाने के काम में थोड़ा समय लगेगा और आज अनेक भाजपा शासित राज्यों में फ्री गैस सिलेंडर नियमित दिए जा रहे हैं और शीघ्र दिल्ली में भी दिए जायेंगे।

'आप' नेता कितनी मर्जी ब्यानबाज़ी कर लें, आराजक प्रदर्शन कर झूठ बोल लें पर दिल्ली की जनता का प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पर अटूट विश्वास है जो कभी डगमगायेगा नही।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की आराजक टकराव एवं झूठ की राजनीति ने ₹आप₹ नेताओं को सत्ता से बाहर किया अब विपक्ष के रूप में भी जारी उनका आराजक टकराव एवं झूठ की राजनीति 'आप' को दिल्ली की राजनीति से ही साफ कर देगी।

गुरु नानक पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन के किंडरगार्डन छात्रों ने मनाई ग्रेजुएशन सेरेमनी

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। विद्यालय की मैनेजमेंट तथा प्रधानाचार्या मनप्रीत कौर के संरक्षण में गुरु नानक पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन के नन्हे -मुन्ने विद्यार्थियों ने अपनी प्री स्कूल शिक्षा पूरी करने की उपलब्धि में जोर शोर से उत्सव मनाया ।सर्वप्रथम छोटे-छोटे एंजल्स ने पौधा देखकर अपनी प्रधानाचार्य का स्वागत किया और नर्सरी क्लास के बच्चों नेअपने छोटे-छोटे हाथ जोड़कर परम शक्ति परमेश्वरी का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु 'शबद' गायन किया ।

कक्षा एक के भवतेज सिंह नेअन्य छात्रों के साथ मिलकर माता-पिता अध्यापकों तथा उपस्थित अन्य लोगों का' स्वागत- गीत' के माध्यम से भावपूर्ण स्वागत किया ।

कक्षा एक की जसविन कौर मैं अन्य छात्राओं के साथ मिलकर बहुत ही मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया जिसमें पूरे वर्ष बिताए गए समय को याद करते हुए छोटी-छोटी झलकियाँ प्रस्तुत की गईं थीं ।लड़कों का रिदमिक मूव्स में नृत्य और बिनीत कौर का साइकिल चलाते हुए पंजाबी नृत्य देखकर उपस्थित लोगों ने दाँतों तले उंगलियां दवा लीं।

इन नन्हे कलाकारों को देखकर उपस्थित लोगों का मन भी बिल्कुल उन्हीं की तरह भोला और मासूम बन गया था ।एक के बाद एक सुंदर से सुंदरतम कार्यक्रमों की प्रस्तुति

वातावरण में तालियों की गूंज को रुकने ही नहीं देती थी ।

प्रेप के सभी विद्यार्थियों का प्रतिनिधित्व करते हुए जस मायरा कौर ने एक धन्यवाद कविता प्रस्तुत की ।प्रैप के छात्रों ने विद्यालय और अपनी अध्यापिकाओं को कहानी-कविताएँ सुनाने और अपनी भावनाओं को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने के लिए सक्षम बनाने हेतु ,अध्यापिकाओं द्वारा मैथ्स, इंग्लिश, हिंदी, ई .वी .एस को सरल बनाकर समझाने के लिए आभार प्रकट किया ।ये छात्र गुड - बाय करते हुए अपने आप को बहुत बड़ा महसूस कर रहे थे ।अपने बच्चों की स्टेज - गतिविधि देखकर कुछ माता-पिता भावुक हो उठे और खुशी से उनकी आँखें भर आईं ।.

प्रधानाचार्या मनप्रीत कौर ने इन नन्हे मुन्हें ग्रैजुएट्स को सर्टिफिकेट्स देते हुए इनको तथा इनके अभिभावकों को मुबारकबाद तथा शुभकामनाएँ दीं .उनका मानना है कि नर्सरी ग्रेजुएशन समारोह बच्चों की शिक्षा की यात्रा में पहले मील का पत्थर होता है इसलिए इसे मनाने से इन्हें सीखने में मदद मिलती है कि उनकी शिक्षा कितनी महत्वपूर्ण है ।उनमें स्टेज पर आने का आत्मविश्वास भी विकसित होता है ।उन्होंने मैनेजमेंट,नर्सरी- प्रैप की अध्यापिकाओं,कार्यक्रम को सफल बनाने वाले सभी सहयोगियों का ,विशेष रूप से अभिभावकों के सहयोग के लिए दिल से धन्यवाद दिया ।

कार्यक्रम को इति प्रदान करते हुएअंग्रेजी विभाग की अध्यक्षा ज्योति चीमा ने अभिभावकों को उनके बच्चों के ग्रेजुएट होने पर मुबारकबाद दी ।उन्होंने कहा कि वे ही अपने बच्चोंको के प्रथम अध्यापक होते हैं . कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी सहयोगियों का उन्होंने धन्यवाद देते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार विद्यालय को सहयोग देने की कामना की ।

गोल दुनिया का गोल रहस्य — π दिवस की अनूठी कहानी

एक अलौकिक उत्सव की शुरुआत होती है, जब कैलेंडर 14 मार्च को ठहरता है—एक दिन जो गणित के सबसे रहस्यमयी और जादुई नायक, π (पाई), को नमन करता है। यह महज़ एक तारीख नहीं, बल्कि उस अनंतता का रंगारंग जश्न है, जिसने सहस्राब्दियों से मानव मस्तिष्क को हैरत में डाला है। π कोई साधारण संख्या नहीं—यह तो एक जीवंत सूत्र है, ब्रह्मांड की सिम्फनी में गूँजती वह अनश्वर धुन, जो हमारे जीवन के हर पहलू को अनायास ही सँवार देती है। प्रकृति के गहन रहस्यों को खोलने वाली यह चाबी विज्ञान को नई ऊँचाइयाँ देती है और रोज़मर्रा की छोटी-छोटी चीज़ों में भी अपनी चमक बिखेरती है। इस अनोखे मौके पर π की उस अनंत दुनिया में कदम रखें—जहाँ संख्याएँ नृत्य करती हैं, जिज्ञासा की कोई सीमा नहीं होती, और हर कदम पर एक नया रोमांच इंतज़ार करता है।

π कोई साधारण अंक नहीं, बल्कि एक गणितीय चमत्कार है—3.141592653'—जो अनंत तक फैलता है, बिना रुके, बिना थके। इसके दशमलव अंकों का सिलसिला ऐसा है मानो कोई अनंत काव्य, जिसमें न तुकबंदी है, न दोहराव। यह हर वृत्त की आत्मा है—चाहे वह सूर्य का विशाल गोला हो, चंद्रमा की शीतल गोलाई हो, या आपके हाथ में थमा एक सिक्का—हर जगह यह परिधि और व्यास के बीच के उस शाश्वत संतुलन को रचता है। इतिहास के धूमिल पन्नों में झाँकें, तो प्राचीन मिस्र और बेबीलोन के गणकों से लेकर यूनानी मनीषी आर्किमिडीज तक, सभी इसके जादू से बँधे नज़र आते हैं। भारत के गणितज्ञ आर्यभट्ट और माधव ने इसे और परिष्कृत कर एक नया आयाम दिया। कभी हाथ से लिखे कागज़ों पर लाखों अंकों तक गणना हुई, और आज सुपरकंप्यूटर खरबों अंकों तक इसके रहस्य को खंगाल चुके हैं—फिर भी π का अंत

एक अनबुझी पहेली बना हुआ है। यह अनंतता का वह प्रतीक है जो मानव कौतूहल को ललकारता है और कहता है—आगे बढ़ो, और जानो!

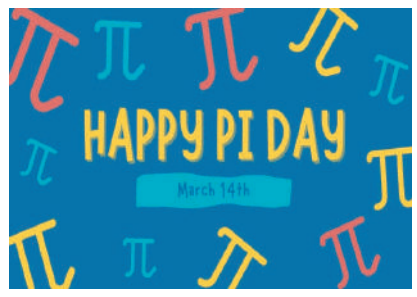

लेकिन क्या π सिर्फ गणितज्ञों का खिलौना है? नहीं, यह उससे कहीं विशाल है। यह वह अदृश्य शक्ति है जो अंतरिक्ष की गहराइयों में ग्रहों की कक्षाओं को नापती है, अंतरिक्ष यानों को उनकी मंजिल तक पहुँचाती है। नासा हो या स्पेसएक्स, इनके हर अभियान में π एक नन्हा सितारा बनकर चमकता है। इंजीनियरिंग की दुनिया में यह विशाल पुलों, गहरी सुरंगों और ऊँची अट्टालिकाओं को आकार देता है। तकनीक के जादूगर—जीपीएस, सैटेलाइट, और आपके स्मार्टफोन की स्क्रीन—सब इसके बिना अधूरे हैं। चिकित्सा विज्ञान में भी यह कमाल दिखाता है—एमआरआई की जटिल गणनाओं से लेकर मानव शरीर के बायोमेट्रिक विश्लेषण तक, π हर कदम पर साथ देता है। यह एक ऐसी शक्ति है जो विज्ञान की नींव को मज़बूत करती है और मानव सभ्यता को प्रगति के पथ पर ले जाती है।

14 मार्च को π दिवस क्यों? क्योंकि यह तारीख इसके पहले तीन अंकों—3.14—से एक सुंदर संयोग बनाती है। 1988 में भौतिक विज्ञानी लैरी शॉ ने इस उत्सव की नींव रखी, और तब से यह दिन गणित के प्रति प्रेम और विज्ञान के प्रति उत्साह का परचम लहराता है। दुनिया भर में इसे अनोखे अंदाज़ में मनाया जाता है—अमेरिका में ₹पाई खाने₹ की मस्ती होती है, जहाँ ₹Pie₹ और π का स्वादिष्ट संगम देखने को मिलता है। गणितीय पहेलियों का दौर, π के अंकों को याद करने की रोमांचक होड़ (70,000 से अधिक अंकों का रिकॉर्ड अब तक कायम है!), और विज्ञान के चमत्कारिक प्रयोग इस दिन को जीवंत बनाते हैं। यह सिर्फ उत्सव नहीं, बल्कि एक प्रेरणा है—जिज्ञासा को जागृत करने और ज्ञान की सीमाओं को तोड़ने की।

अब एक पल को ठहरें और सोचें—क्या π आपके जीवन को छूता है? जवाब है—हर पल, हर क्षण! सुबह की घड़ी का गोल चेहरा, कार के पहियों की लय, संगीत की मधुर तरंगें, या दोस्तों को भेजी गई लोकेशन—हर जगह π की छाप है। प्रकृति में भी यह कम जादुई नहीं—फूलों की पंखुड़ियों का घुमाव, नदियों की बलखाती चाल, और यहाँ तक कि आकाशगंगा की संरचना में भी π की गूँज सुनाई देती है। यह सिर्फ एक संख्या नहीं, बल्कि वह सूत्र है जो हमारी सृष्टि को एक अद्भुत सामंजस्य में बाँधे रखता है।

π एक अलौकिक चमत्कार है—अनंत, रहस्यमयी और सर्वव्यापी। यह गणित की धड़कन है, विज्ञान का आधार है, और ब्रह्मांड की गीतिका है। यह हमें सिखाता है कि कुछ रहस्य अनंत हो सकते हैं, और यही उनकी असली ताकत है। तो इस 14 मार्च को आइए, इस गणितीय महोत्सव में डूब जाएँ। π को नमन करें, विज्ञान की अनंत संभावनाओं को अपनाएँ, और उस अनश्वर जिज्ञासा का उत्सव मनाएँ जो हमें हर दिन नई ऊँचाइयों तक ले जाती है। क्योंकि π सिर्फ एक संख्या नहीं—यह अनंतता का वह दर्पण है जिसमें हमारी खोजों का अक्स झलकता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

भारतीयों के इतने बड़े अपमान पर अमेरिका के खिलाफ एक शब्द न बोलकर पीएम मोदी ने भारत के सम्मान को ठेस पहुंचाई है- संजय सिंह

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। अमेरिका द्वारा भारतीयों को बेड़ियां बांध कर भारत भेजने के मुद्दे पर मोदी सरकार की चुप्पी के खिलाफ बुधवार को आम आदमी पार्टी के सांसदों ने संसद परिसर में प्रदर्शन कर अपना विरोध जताया। इस दौरान सांसदों ने 'देश के अपमान पर मोदी खामोश' लिखे बैनर के साथ जमकर नारेबाजी की और उनसे चुप्पी तोड़ने की मांग की। ''आप'' सांसद संजय सिंह ने कहा कि अमेरिका ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के लोगों को बेड़ियां बांध कर ग़ुलामों की तरह पंजाब के अमृतसर एयरपोर्ट पर उतारा, जबकि नेपाल जैसे छोटे से देश के लोगों को सम्मान के साथ भेजा गया। इतने बड़े अपमान पर अमेरिका के खिलाफ मोदी जी ने एक शब्द न बोलकर भारत के सम्मान को ठेस पहुंचाई है।

सांसद संजय सिंह ने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के नागरिकों को बेड़ियां बांध कर अमेरिका द्वारा पंजाब के अमृतसर एयरपोर्ट पर उतारा गया। अमेरिका ने भारत के लोगों को गुलामों की तरह अपमानित कर भेजा गया। इसमें पंजाब, हरियाणा, गुजराज और महाराष्ट्र के लोग शामिल थे। वहीं, भारत के पड़ोस में ही नेपाल है। नेपाल के नागरिकों को पूरे सम्मान के साथ फ्लाइट में भेजा गया। मोदी जी ने भारत का गौरव और सम्मान खत्म कर दिया, भारत के स्वाभिमान को मिट्टी में मिला दिया। इतने बड़े अपमान पर प्रधानमंत्री मोदी एक शब्द नहीं बोल रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने टैरिफ बढ़ा दिया है, उस पर भी प्रधानमंत्री नहीं बोल रहे हैं। मैक्सिको, कोलंबिया जैसे देश अपना जहाज भेजते हैं और अपना विरोध दर्ज कराते हैं। लेकिन दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रधानमंत्री जो खुद को महामानव, विश्वगुरु कहते हैं, शेर के बच्चे को दूध पिला रहे हैं और इस मामले में बोलने के लिए तैयार नहीं हैं।

वहीं, राज्यसभा सदस्य डॉ. संदीप पाठक ने कहा कि पूरे विश्व के इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि अवैध प्रवास के नाम पर एक देश के नागरिकों को जंजीर में बांध कर डिपोट किया गया है। हम अपने देश में इतना दंभ भरते हैं। प्रधानमंत्री जाते हैं और झप्पी ले-लेकर कहते हैं कि भारत का मान बढ़ गया। प्रधानमंत्री से सवाल है कि क्या यही मान बढ़ गया। क्या प्रधानमंत्री इसी तरह से भारत का मान बढ़ाएंगे कि अवैध प्रवास के नाम पर भारतीयों को जंजीरों में बांध कर लाओ। यह सही तरीका नहीं है। अमेरिका या कोई भी किसी देश के सम्मान के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता है। क्या प्रधानमंत्री हमारे देश के सम्मान को इसी तरह नीलाम करेंगे, क्या प्रधानमंत्री इस मुद्दे पर डर गए हैं कि वह जवाब नहीं दे रहे हैं।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री को अमेरिका को सीधे जवाब देना चाहिए था कि यह बिल्कुल सही नहीं है। जंजीरों में बांध कर हमारे नागरिकों को भेजना गलत है। लेकिन हम मजबूत तरीके से प्रतिक्रिया ही नहीं दे पाए। भारत के अलग-अलग राज्यों के नागरिकों को अमेरिका से लाकर पंजाब के अमृतसर में डिपोट करना दुर्भाग्यपूर्ण और दुर्भावना से प्रेरित था। आम आदमी पार्टी पंजाब और देश का अपमान बर्दाश्त नहीं करेगी। यह बहुत दुख की बात है कि प्रधानमंत्री इतने कमजोर क्यों हो गए? उनको दंभ भरना चाहिए कि उनके आने से भारत का मान बढ़ा है। देश को इस तरह की कमजोर राजनीति बर्दाश्त नहीं है।

आगामी त्यौहारों को देखते हुए ऐ टी ओ प्रमोद कुमार ने समाजसेवियों और अन्य लोगों के साथ बैठक की

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

पूर्वी दिल्ली: पूर्वी दिल्ली के मयूर विहार थाने में होली और ईद उल फितर को देखते हुए क्षेत्र में अमन शांति बनाए रखने के लिए आवश्यक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता ए टी ओ प्रमोद कुमार ने की बैठक में पुलिस मित्रा , आर डब्ल्यू एम, एम डब्ल्यू ए, अमन कमेटी, हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई एकता कमेटी, सोशल वरिष्ठ समाज सेवक एवं सभी धर्मो के धर्म गुरु शामिल हुए। क्षेत्र में होली और जुम्मा एक साथ होने के कारण थाना के आला अधिकारियों ने होलीऔर ईदउल *फितर* के त्यौहारो को लेकर क्षेत्र में अमन शान्ति को बनाए रखने के लिए आवश्यक बैठक का आयोजन किया बैठक में किस तरह से जुम्मा और होली दोनों क्षेत्र में संपन्न हो बिना किसी व्यवधान के इस पर सभी ने अपनी राय कायम की की किस तरह से बिना किसी आपसी रंजिश या मतभेद के क्षेत्र में दोनों त्योहार सकुशल संपन्न हो। और आगे भी ईद उल फितर को लेकर और अन्य कई समस्याओं को लेकर भी बैठक में चर्चा की गई।

आज नहीं छोड़ेंगे सब को रंग देंगे।

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

' आज मस्ती मजाक ठिठोली के बीच पूरे मोहल्ले में उमंगता व उल्लास का माहोल था। होली है का शोर था चारों ओर बच्चे कच्चे रंग बिरंगे नजर आ रहे थे। फागुन की बहार में गीतों का गुंजन ढोलक की थाप में थिरकते हुरियारे निकला शुरू हो गये थें। इस रंग-बिरंगी दुनिया में सब रंग अच्छे भी और सच्चे भी ।क्योंकि लाल गुलाबी केसरिया नीला पीला व गुलाल की होली रे होली। बहुत अच्छी लगती हैं। बच्चों के हाथों में गुब्बारे व पिचकारी लेकर एक दूसरे से कहते नजर आते हैं, बुरा ना मानो होली है। हम भी अपने दोस्तों के साथ निकलें की तैयारी में थे , तभी मोहल्ले के भल्लू दादा जो बुजुर्ग थे , पर उनकी आवाज में अभी भी जोर था। वह बोल रहे थे रंग बरसें भींगे चुनर वाली रंग बरसें। भल्लू दादा का पोता व अन्य बच्चों के साथ दादा के साथ मस्ती करता नजर आ रहा था। कभी दादा के उपर गुलाल व रंग उड़ता तो कभी पिचकारी से पानी डालता था। वही मोहल्ले की युवा तरुणाई जो मोहल्ले के थे वह भी उनके पैर छुए रहे थे दादा होली की शुभकामना व बंधाई। हर घर में सभी जगह मोहल्ले में गुलाल लगा कर एक दूसरे को बधाई दे रहे थे। तभी भल्लू दादा के पास श्यामू आया और बोला दादा होली है। दादा बोले हां श्यामू चिंता छोड़ो रंगों से नाता जोड़ो। रंग हमारे जीवन में हमेशा सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। हां दादा सही कहे रहे हों। इसी बीच कुल्फी वाला आवाज लगता हुआ आया होली की स्पेशल भांग की कुल्फी ले लो ।भल्लू दादा आवाज लगाते हैं अरे भाई एक कुल्फी मुझे और श्यामू को भी दे दो ।अरे दादा आप खाओ। क्यों श्यामू यह तो पर्व आनन्द व मस्ती का है इसमें चकाचक व मस्ती में रहो। एकजुटता से गलतियों को भूल कर दुश्मन को भी गले लगा कर एक रंग हो जाओ सभी । देखो इन बच्चों को मस्त है ना भुख की चिंता ना किसी से कोई बेर। इन बच्चों की होली देखो दौड़ दौड़ कर कहते जा रहे हैं होली है। हम बड़ों को इन से सीख लेनी चाहिए। तभी दादा ने देखा मोहल्ले के सभी बड़े छोटे बच्चे सब टोली में आ रहें थे। भल्लू दादा ने भी अपनी गुलाल की बोरी निकल कर उन सभी पर रंग गुलाल डालने लगें और कहने लगें, आज नहीं छोड़ेंगे सब को रंग देंगे। यह मस्ती अपनापन रिश्तों में सादगी वातावरण में एकजुटता व सौहार्द के इसी रंग में हम सब होली मानते हैं।

होली रंगों और खुशियों का त्योहार है।

कोई भी उत्सव और त्योहार धर्म से ज्यादा मनुष्य के प्रेम और जुनून को जागृत करता है। हमारे मुल्क भारत में होली भी एक त्योहार के रूप में बढ़ चढ़ मनाया जाता है, इसलिए इस मौके पर हिंदू और मुसलमानों के बीच अंतर करना न्याय संगत नहीं है। क्योंकि ये त्योहार

होली रंगों और खुशियों का त्योहार है । मुहब्बतों का त्यौहार भाई चारे का त्योहार है। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत, सर्दियों के मौसम की बिदाई , और बसंत ऋतु के आगमन की खुशी, एक दूसरे से मिलने, मुस्कुराने,खेलने और हंसने, क्षमा करने और क्षमा मांगने और टूटे हुए रिश्तों को फिर से जीवंत करने का प्रतीक है। इसे अच्छी फसल के लिए ईश्वर को धन्यवाद देने के रूप में भी मनाया जाता है। होली खास हिंदू त्यौहारों में से एक है।

यह खास तौर से हिंदुस्तान और नेपाल देशों में मनाया जाता रहा है।

एक पहलू यह भी है कि होली एक वसंत त्योहार है, जो सर्दियों के मौसम के अंत में मनाया जाता है। यानी सर्दियों का मौसम एक तरह से बिदाई ले रहा होता है ।दूसरी ओर, यह ख़रीफ़ सीज़न की फसल का त्यौहार भी है। लेकिन इस त्यौहार की पृष्ठभूमि बहुत दिलचस्प है।

ऐसा कहा जाता है कि हिरण्यकश्यप नामक एक प्राचीन राजा की पूजा से प्रसन्न होकर देवताओं ने उसे एक उपहार या वरदान दिया था कि न तो मनुष्य और न ही जानवर उसे मार सकते थे, वह न दिन में मरेगा, न रात में, न ही वह पृथ्वी पर मरेगा। न जल में, न वायु में, न घर के अन्दर मरेगा, न बाहर।

हिरण्यकश्यप ने सोचा कि वह अब अमर है और कभी नहीं मरेगा। यह सोचकर वह अहंकार से फूल गया और उसने अपने राज्य में क्रूरता का बाजार गर्म कर दिया। यहां तक कि उसने अपनी प्रजा को अपनी पूजा करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया।

हालाँकि, उनके बेटे प्रह्लाद ने अपने पिता की पूजा करने से साफ़ इनकार कर दिया। क्रोधित होकर, हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका को प्रह्लाद को जलाकर मारने का आदेश दिया। होलिका आग से प्रतिरक्षित थी, इसलिए वह प्रह्लाद को साथ लेकर आग में कूद गई।

दर्शकों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि आग ने प्रह्लाद को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, लेकिन होलिका जलकर राख हो गई। ऐसी परंपरा है कि अंतिम सांस लेने से पहले होलिका को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने प्रह्लाद से माफी मांगी। प्रह्लाद ने वादा किया कि उसका नाम हमेशा जीवित रहेगा। ऐसा कहा जाता है कि 'होली' शब्द की उत्पत्ति होलिका के नाम से हुई है।

जब भगवान विष्णु का धैर्य समाप्त हो गया, तो एक दिन उन्होंने विद्रोही राजा को मार डाला। आख़िर कैसे?

भगवान विष्णु ने रचना की कि गोधूलि बेला (न दिन, न रात) में नरसिंह (आधा मनुष्य, आधा सिंह) (न मनुष्य, न पशु) का रूप धारण करके, अपनी गोद में लेकर (न पृथ्वी पर, न जल में, न वायु में), राजा का गला घोंट दिया। घर की दहलीज (न तो घर के अंदर और न ही बाहर)।

होली, भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख त्योहार है। जो रंगों का उत्सव मनाने के लिए मनाया जाता है। यह त्यौहार हिन्दू पंचांग के फाल्गुन मास की पूर्णिमा को भारत व अन्य कई देशों में धूमधाम से मनाया जाता है।

होली के रंग भी प्रतीकात्मक हैं। लाल रंग प्रेम और उर्वरता का प्रतीक है, हरा प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है, पीला भोजन का प्रतीक है, जबकि नीला रंग भगवान विष्णु से संबंधित होने के कारण धर्म और आध्यात्मिकता का प्रतिनिधित्व करता है।

डॉ.मुश्ताक ,अहमद शाह
सहज़ हरदा मध्यप्रदेश.

बुरा ना मानो होली है : जिसकी किस्मत असर दिखाये , उल्लू से नेता बन जाये

सुनील बाजपेयी, कानपुर
कवि, गीतकार,लेखक एवं वरिष्ठ पत्रकार

: नरेन्द्र मोदी :जितना चाहे लगाओ जोर, नहीं पाओगे मेरा छोर।
: मोहन भागवत : ईश्वर मन की पूर्ण कराए, जल्द राष्ट्र हिंदू बन जाये।
: अमित शाह : हर दम भैया यही मनाऊं, एक बार उनकी पा जाऊं।
: राजनाथ सिहः अब उनकी ना पाना है, बस यूं ही काम चलाना है।
: नितिन गडकरी : मुझको बढ़ते जाना है, क्योंकि उनकी पाना है।
: जेपी नड्डा : ठोकूं अंदर अंदर ताल, मैं भी चलता तगड़ी चाल ।
: एल के आडवानी :समय ने कितनी डाली धूल, अपने भी गये मुझको भूल।
: मुरली मनोहर : सबकुछ जग में समय कराये, तभी तो अब हैं मुझे भुलाये।
: मल्लिकार्जुन खड़गे : अब क्या मैं कर पाऊंगा, केवल नाम चलाऊंगा।
: सोनिया गांधीः जो चाहा वह हो ना पाया, बेटा भी पप्पू कहलाया।
: राहुल गांधी : जीते जी क्या पाना है, या फिर यूं मिट जाना है।
: प्रियंका गांधी : देती भइया हर दम साथ,तब क्यों लकवा वाला हाथ ।
: योगी आदित्य नाथ : जब भी मौका पाऊंगा, हिंदू राष्ट्र बनाऊंगा।
: सतीश महाना : जो चाही वह मिल ना पाई, जय जय तेरी कुर्सी माई।
: अखिलेश यादव : भैया हर जन सत्य पुकारे, अब तो दिन लद गए हमारे।
: शिवपाल यादव : दिल ने मेरे माना है, नहीं कभी अब पाना है।
: मायावतीः अब नम्बर ना आयेगा, फिर भी हाथी खायेगा।
: लालू यादव : अब तो कभी ना पाना है, बस जोकर कहलाना है।
: तेजस्वी यादव : देखो क्या कर पायेंगे ।केवल जीभ चलाएंगे।
: नितीश कुमारः अंतिम इच्छा पूर्ण करा दो,एक बार उनकी दिलवा दो।
:रेखा गुप्ताः समय कहां कब देखा है, भाग्य चमकती रेखा है।
: अरविंद केजरीवालः कैसे खेलूं अब कोई खेल, भिजवाएंगे क्या फिर जेल।
: मनीष सिसौदिया : मेरा सारा बिगड़ा खेल, अब क्या भाई बेचूं तेल।
: संजय सिंह : हथकंडे सारे अपनाए, लेकिन वे भी काम ना आए।
: ममता बनर्जी : सपना मेरा पूर्ण करा दो। उन्हें हटा मुझको बैठा दो।
: डॉ मोहन यादव : चली भाग्य की मेरी रेल, मेरा भी तो तगड़ा खेल।
: नायब सिंह सैनी : बड़े भाग्य से मैंने पाई,कौन रास्ता होय कमाई।
: भगवंत मानः हम भी अपना काम बनाते, सबसे पहले पैग लगाते।
: हेमंत सोरेन : किया बहुत है लंबा खेल, भिजवाएंगे क्या फिर जेल।
: चंपई सोरेन : जब भिजवाया उनको जेल, तभी बना था मेरा खेल।
: पुष्कर सिंह धामी : कोई विरोधी समझ ना पाता, कैसे अपना काम बनाता।
: एम के स्टालिन : बहुत रास्ते आये माल, दुश्मन समझ ना पाये चाल।
: हिमंत विस्वा सरमा : किससे कैसे रखना मेल, कोई ना समझे मेरा खेल।
:मोहन चरण माझीःकर्मों से ही पाया हूं, नीचे से ही आया हूं।
: सुखबिन्दर सिंह सुक्खू : मेरा भी तो समझो हाल,मैं भी करता भाई कमाल।
:देवेन्द्र फडनवीसःमेरा मन भी सत्य बताए,जाने कितने घात लगाए।
: एक नाथ शिंदे : कुछ भी भाई समझ ना पाऊं, कैसे अपना काम बनाऊं।
: उद्धव ठाकरे : नहीं जमाओ मुझ पर धाक, मैं भी सत्ता का चालाक।
: राज ठाकरे : कोई तो अब राह बताए,राज सुंदरी कैसे आए।
: शरद पवार : मन की सरल नहीं हो पाना,बस ऐसे ही मिटते जाना।
: संजय राउत : अपना काम बनाना है, सब में टांग अड़ाना है।
: भजन लाल शर्मा :ना जाने कोई मेरा हाल, मैं भी चलता पक्की चाल।
:भूपेन्द्र पटेलःअपना काम बनाना आए, मेरी कुर्सी वही बचाए।
:उमर अब्दुल्लाःमुश्किल से है मैंने पाई, इसीलिए कर रहा कमाई।
: गौतम अडानी : यदि चाहो सरकार चलाना,मुझको भूल कभी मत जाना।
: मुकेश अंबानी : केवल उससे मुझको प्यार,देता है पूरा संसार।
: अनिल अंबानीः समझो ना मुझको कमजोर, मेरा भी उसपर ही जोर।
: बाबा रामदेव : मौ भी खेलूं जमकर पारी, मैं भी बहुत बड़ा व्यापारी।

असली होली

वह बार बार अन्दर से बाहर आती।
चिन्ता की लकीरें थीं, साफ नजर आतीं।।
भय का भी साफ - साफ चेहरे पर साया था।
कारण इकलौता बेटा घर नही आया था।।

जाते वक्त उसने कारण बताया था।
रोटी की मजबूरी का हाल समझाया था।।
मां का दिल फिर भी नही माना था।
मजबूरी थी पेट के लिए, शहर उसे जाना था।।
मां ने रोका मत जा, यह मेरे दिल की बोली है।
फिर चले जाना क्योंकि आज होली है।।

देर शाम जब बन्धु होने को आई ।
तभी कोई सडक़ पर पड़ा आता दिखलाई।।
कोई भी उसे पहचान नही पाया।
कपड़े लाल और कीचड़ से नहाया।।
दूर से चिल्लाया अम्मा लौट आया।।
कपड़े रंग लाल और कीचड़ भरी झोली।
सच बता बेटा क्या खेली है होली।।
हां मां मौके का फायदा उठाया।
दिल खुश है सच्ची होली मनाया।।
किस्सा सच हूं तुझको सुनाता।
कीचड़ रंग लाल का कारण बताता ।।

थी तेज चाल मेरी और सूरज चढ़ा था।
सडक़ के किनारे वह बूढ़ा पड़ा था ।।
उसको उठाया कर्तव्य भाव जागा।
मां मैं सीधे अस्पताल भागा ।।
ईश्वर से प्रार्थना काम मेरी कर गई।
तभी तो उस बूढ़े की जान मां बच गई।।

झूठ नही बोलता, सत्य यही हाल हैं।
उसके ही खून से कपड़े मेरे लाल हैं ।।
ईश्वर की कृपा से भरती सदा झोली है।
मैंने तो खेली मां आज असली होली है ।।
मैंने तो खेली मां आज असली होली है ।।

फिल्म "शोले" के संग 'होली' के रंग

आज बसंती से ज़ब होली खेलने आया वीरू,
मौसी बोली तू दारू छोड़कर पी आया जीरू।
मौसी ने कहा मैं शादी के लिए अभी तैयार हूँ,
रामू काका बोले मैं तो अभी तक ख़बेकरारख हूँ।

ये गब्बर पूछ रहा था बार-बार कब है ख़होलीख,
सांभा बोला कैलेंडर देख लियाकर हमजोली।
टंकी पे चढ़ गया हैं ये वीरू, रंग लगा दे बसंती,
ऐ मैं शादी नहीं करूंगी, तू मत कर ज़बरदस्ती।

अंग्रेजो के रज़मानेख के जेलर ने खेली ख़होलीख,
हरिराम नाई जूते बेच लाया ख़भाँगख की गोली।
गब्बर बोला हमसे-ये हाथ हमको दे दे ठाकुर,
अपने हाथों से होली खेल के दिखा नामाकूल।

अरि ओ...छमिया हमको रंग नहीं लगाओगी,
तेरे दांत कपड़े धोने के ब्रश से साफ़ कराऊंगी।
चल-चल धन्नो आज तेरी इज्जत का सवाल हैं,
बताओं मेरे ऊपर नहीं कोई फेंकता गुलाल है।

राधा मैं तुम्हारे गालों पर रंग लगाना चाहता हूँ,
जय, पहले ठाकुरजी से परमिशन लें आती हूँ।
सूरमा भोपाली से दिनभर दस झूठ बुलवाते हो,
होली में एक रूपये का भी रंग नहीं लगाते हो।

संजय एम तराणेकर

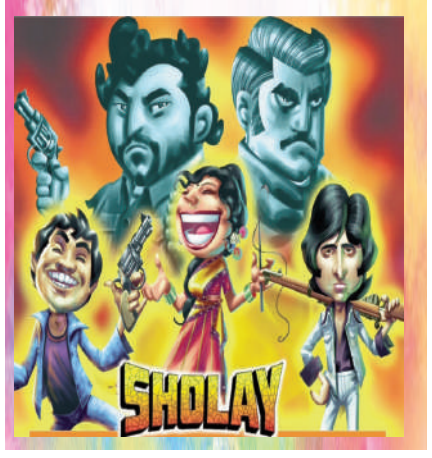

बदलते ज़माने की रंग बदलती होली

प्रियंका सौरभ

होली एक ऐसा त्यौहार है जिसे हर पृष्ठभूमि के लोग मनाते हैं, जिसमें दुश्मनी भुलाकर गले मिलते हैं। फिर भी, एकता और प्यार का यह त्यौहार बदल रहा है। फाल्गुन की खुशियाँ अब दूर की यादों की तरह लगती हैं। होली के रंग, कुछ सालों में फीके पड़ गए हैं। बड़े-बुजुर्ग इस बात पर अफ़सोस जताते हैंकि अबहंसी-मजाक, उत्साह और वह जीवंत भावना नहीं रही जो कभी इस उत्सव की पहचान हुआ करती थी। पानी की बौछारों की आवाज़ और होली की जीवंतता ने कुछ ही घंटों के उत्सव के बाद एक शांत ले ली है। ₹आओ राधे खेलें फाग, होली आई₹ के हर्षोल्लास और उत्सव के इर्द-गिर्द होने वाली मस्ती-मजाक की आवाज़ें समय के साथ दबती जा रही हैं।

फाल्गुन आते ही होली का उत्साह हवा में घुलने लगा। मंदिरों में फाग की ध्वनि गूंजने लगी और हर तरफ़ होली के लोकगीत सुनाई देने लगे। शाम होते ही ढप-चंग के साथ पारंपरिक नृत्यों ने होली के रंग चारों ओर बिखेर दिए। लोग ख़ुशी से एक-दूसरे पर पानी की छींटे मारते रहे और कोई कड़वाहट नहीं थी, बस ख़ुशी थी। होली की तैयारियाँ वसंत पंचमी से ही शुरू हो जाती थीं और समुदाय के आंगन और मंदिर चंग की थाप से जीवंत हो उठते थे। रात में चंग की थाप के साथ नृत्य ने सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। दूर से फाल्गुन गीत और रसिया गाने वाले लोग नृत्य में शामिल होकर तारों की छांव में होली का आनंद मनाते थे। हालांकि, जैसे-जैसे समय बदला है, रिश्तों की गर्माहट फीकी पड़ती नज़र आती है। आजकल होली की बधाई अक्सर मोबाइल या इंटरनेट के जरिए भेजे गए ₹हैप्पी होली₹ के साथ शुरू और ख़त्म होती है। पहले जैसा उत्साह और जश्न का माहौल अब नहीं रहा। पहले बच्चे हर मोहल्ले में होली के लिए समूह बनाकर होली का दान इकट्ठा करते थे और खुशी-खुशी किसी पर भी रंग फेंकते थे। यहाँ तक कि जब उन्हें चिढ़ाया या डांटा जाता था, तो वे हंसते थे। अब ऐसा लगता है कि लोग मौज-मस्ती करने के बजाय बहस करने में ज़्यादा रुचि रखते हैं।

पहले के समय में पड़ोसियों की बहू-बेटियों को परिवार की तरह माना जाता था। घर स्वादिष्ट व्यंजनों की ख़ुशबू से भर जाते थे और मेहमानों का खुले दिल से स्वागत किया जाता था। आज, समारोह ज्यादातर अपने घर तक ही सीमित रह गए हैं और समुदाय की भावना कम होती जा रही है। फ़ोन पर एक साधारण ₹होली मुबारक₹ ने पहले के दिल से जुड़े रिश्तों की जगह ले ली है, जिससे रिश्ते कम मधुर लगने लगे हैं। इस बदलाव के कारण परिवार अपनी बहू-बेटियों को दोस्तों या रिश्तेदारों से मिलने देने में हिचकिचाते हैं। पहले लड़कियाँ होली के दौरान ख़ुशी और हंसी-मजाक करती हुई खुली हवा में घूमती थीं, लेकिन अब अगर कोई लड़की किसी रिश्तेदार के घर ज़्यादा देर तक रुकती है, तो उसके परिवार में चिंता पैदा हो जाती है।

होली का त्यौहार खुशियों का मौसम हुआ करता था, जिसकी शुरुआत होली के पौधे लगाने से होती थी। छोटी-छोटी लड़कियाँ गाय के गोबर से वलुडिया बनाती थीं, खूबसूरत मालाएँ बनाती थीं, जिन पर आभूषण, नारियल, पायल और बिछिया होती थीं। दुख की बात है कि ये परंपराएँ अब ख़त्म हो गई हैं। पहले घर पर ही टेसू और पलाश के फूलों को पीसकर रंग बनाया जाता था और महिलाएँ होली के गीत गाती थीं। होली के दिन सभी लोग चंग की ताल पर नाचते हुए जश्न मनाते थे। बसंत पंचमी से ही फाग की धुनें गूंजने लगती थीं, लेकिन अब होली के गीत कुछ ही जगह सुनाई देते हैं। परंपरागत रूप से, विभिन्न समुदायों के लोग ढोलक और चंग की थाप के साथ होली खेलने के लिए एकत्रित होते थे। अब वह जीवंत भावना कहाँ चली गई है?

आज, होली महज़ एक परंपरा की तरह लगती है। हाल के वर्षों में, सामाजिक गुस्सा और विभाजन इतना बढ़ गया है कि कई परिवार इस त्यौहार के दिन घर के अंदर ही रहना पसंद करते हैं। वैसे तो लोग सालों से होली का त्यौहार उत्साह के साथ मनाते आ रहे हैं, लेकिन इस त्यौहार का असली उद्देश्य भाईचारा बढ़ाना और नकारात्मकता को दूर करना है, जो अब कहीं खो गया है। समाज कई चुनौतियों का सामना कर रहा है और सामाजिक असमानता प्रेम, भाईचारे और मानवता के मूल्यों को ख़त्म कर रही है। एक समय था जब होली एक महत्त्वपूर्ण अवसर था, जब परिवार होलिका दहन देखने के लिए इकट्ठा होते थे और उसी दिन वे खुशी-खुशी एक-दूसरे पर रंग लगाते और अबीर फेंकते थे। समूह होली की खुशियाँ बाँटने के लिए एक-दूसरे के घर जाते और भांग की भावना में डूबे हुए फगुआ गीत गाते थे। अब, वास्तविकता यह है कि होली पर कुछ ही लोग घर से बाहर रहना पसंद करते हैं। हर महीने और हर मौसम में एक नया त्यौहार आता है, जो हमें उस ख़ुशी की याद दिलाता है जो वे ला सकते हैं। ये उत्सव हमें उत्साहित करते हैं, हमारे दिलों में उम्मीद जगाते हैं और अकेलेपन की भावनाओं को दूर करते हैं, भले ही कुछ पल के लिए ही क्यों न हो। हमें इस त्यौहारी भावना को संजोकर रखना चाहिए।

विजय गर्ग की पुस्तक शीर्षक सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा , प्रिंसिपल संध्या बठला द्वारा लोकार्पण की गई जारी

परिवहन विशेष नयूज

डीएवी एडवर्ड गंज सीनियर सेकेंडरी स्कूल मलोट की प्रिंसिपल श्रीमती संध्या बठला ने आज बुक लोकार्पण की, ₹सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा₹ जो प्रसिद्ध लेखक और सेवानिवृत्त प्राचार्य विजय गर्ग द्वारा लिखी गई थी। इस अवसर पर वरिष्ठ पीजीटी अभय शर्मा, परदीप गुप्ता, श्रीमती आशु गांधी, श्रीमती रचना श्री रविंदर कुमार भी उपस्थित थीं। पुस्तक विमोचन समारोह के दौरान प्रिंसिपल ने शिक्षा क्षेत्र में किए गए विजय गर्ग के कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक उन छात्रों के लिए बहुत उपयोगी है जो सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में उपस्थित होने जा रहे हैं। प्रिंसिपल ने आगे कहा कि विजय गर्ग द्वारा लिखी गई यह पुस्तक हमेशा छात्रों और समाज के लिए मार्गदर्शन के लिए काम करेगी और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए बहुत उपयोगी होगी। बुक जारी करने की आपत्ति पर बोलते हुए, विजय गर्ग ने कहा कि नोटों पर मुख्य ध्यान संक्षिप्त और इंगित करने के लिए, कम समय में पूर्ण विषय कवरेज को सक्षम करें। पुस्तक में एक आवश्यक शब्दावली है, सारांश में, यह पुस्तक एक मूल्यवान उपकरण है जो किसी भी छात्र को परीक्षा में एक्सेल का लक्ष्य देता है। सभी उम्मीदवारों के शिक्षार्थियों को सशक्त बनाने और व्यक्तियों को उनकी बौद्धिक क्षमता को अनलॉक करने में मदद करने के लिए भी। गर्ग ने आगे कहा कि प्रतिष्ठित सैनिक स्कूलों में प्रतिष्ठित स्थान पर छात्रों के लिए पुस्तक विशेष रूप से फायदेमंद है। इस पुस्तक को तैयार करने के लिए एक सावधानीपूर्वक देखभाल की गई है। सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा की तैयारी के लिए अच्छी किताबें महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे एक अच्छी तरह से और प्रभावी ढंग से वर्गीकृत आसान प्रदान करते हैं। सरल भाषा, अभ्यास के लिए पर्याप्त प्रश्न और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए परीक्षक को समग्र रूप से तैयार करता है, अवधारणाओं की संरचित समझ भी प्रदान करता है, परीक्षा पैटर्न के साथ संरेखित अभ्यास प्रश्न प्रस्तुत करता है, छात्रों को उनकी तत्परता को बढ़ाने में मदद करता है, और सुनिश्चित करता है गर्ग ने आगे कहा कि गुणवत्ता की किताबें जटिल अवधारणाओं को विस्तार से बताती हैं, जिससे विषय वस्तु की गहरी समझ हो जाती है। वे कई अभ्यास प्रश्न प्रदान करते हैं जो सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा परीक्षा प्रारूप की नकल करते हैं, जिससे छात्रों को परीक्षा लेने के कौशल और समय प्रबंधन विकसित करने में मदद मिलती है। विश्वसनीय पुस्तकें नवीनतम सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम के साथ संरेखित करने के लिए अपडेट की जाती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि छात्र प्रासंगिक जानकारी का अध्ययन कर रहे हैं। अभ्यास प्रश्नों का प्रयास करके, छात्र उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जहां उन्हें अधिक ध्यान देने और अपने कमजोर क्षेत्रों में सुधार करने की आवश्यकता है। अच्छी गुणवत्ता के सवालों के साथ लगातार अभ्यास परीक्षा के लिए आत्मविश्वास और तैयारियों को बढ़ावा दे सकता है। एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों को प्रवेश परीक्षा की तैयारी की नींव माना जाता है क्योंकि परीक्षा के महत्वपूर्ण भाग सीधे उन पर आधारित होते हैं, गर्ग ने कहा।

राष्ट्रहित से ज्यादा प्राथमिकता अपनी विचारधारा को देना,हमारे देश व लोकतांत्रिक व्यवस्था का बहुत बड़ा नुकसान

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर सबसे युवा देश जिसकी 65 फ़ीसदी आबादी उसकी सबसे मूल्यवान संपत्ति है वह है भारत !जहां दुनियाँ की युवा आबादी का पांचवा हिस्सा है जो एक जनसांख्यिकीय लाभांश पैदा करने की ताकत रखता है, इतिहास गवाह है कि आज तक दुनियाँ में जितने भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं, चाहे वे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक,सांस्कृतिक और वैज्ञानिक रहे हों, उनके मुख्य आधार युवा ही रहे हैं। भारत में भी युवाओं का एक समृद्ध इतिहास है। प्राचीनकाल में आदिगुरु शंकराचार्य से लेकर गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने अपनी युवावस्था में ही धर्म और समाज सुधार का बीड़ा उठाया था।पुनर्जागरण काल में राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती के साथ विवेकानंद जैसे युवा विचारक ने धर्म और समाज सुधार आंदोलन का नेतृत्व किया। इतिहास ने युवाओं की शक्ति का प्रभाव देखा है। उदाहरण के तौर पर भारत की आजादी में अनेक युवाओं ने अपना योगदान दिया और कई युवाओं ने बलिदान तक दिया। इसके परिणामस्वरूप हमारा देश ब्रिटिश सरकार को भागने में कामयाब हुआ। युवाओं ने इस प्रकार अनेक ऐतिहासिक बदलाव किए हैं। इसलिए आज का युवा भी विजन 2047, विज़न 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की देश की अर्थव्यवस्था के महत्वकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जो कार्यबल के साथ साथ बाजार की उपलब्धि करा सकता है।नवाचार, नवोन्मेष, स्टार्टअप,उद्यमशीलता, विविधता की संस्कृति को चला रहे हैं ऐसी मुल्यवान ताकत युवाओं में हमें राष्ट्र हित से जुड़े मुद्दों की समझ विकसित करने, उनकी चिंताओं जिज्ञासाओं को समझकर उनको उत्साहवर्धन करनेकीतात्कालिक ख़ास ज़रूरत है जो सर्वोपरि राष्ट्र सेवा है, क्योंकि यदि राष्ट्रहित सर्वोपरि होगा तो हमारा राष्ट्र आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, अन्तर्राष्ट्रीय बाधाओं सहित अनेक मुद्दों और विषयों में सुरक्षित होगा।

साथियों बात अगर हम युवाओं को उत्साहवर्धन की करें तो आज अभिभावकों शिक्षकों बुद्धिजीवियों, राजनीतिक नेताओं से लेकर हर उस जानकार व्यक्तित्व का कर्तव्य है कि युवाओं में राष्ट्रहित की भावना को तेजी से विकसित करें युवाओं में यह भाव पैदा करना होगा कि घर से महत्वपूर्ण समाज, उस से महत्वपूर्ण गांव, शहर, राष्ट्र है। इसलिए राष्ट्र हित की भावना सबसे पहले युवाओं में जागृत कराना जरूरी हैं। क्योंकि,युवा राष्ट्रका संरचनात्मक और कार्यात्मक ढांचा है। हर राष्ट्र की सफलता का आधार उसकी युवापीढ़ी और उनकीउपलब्धियाँ होती हैं। राष्ट्र का भविष्य युवाओं के सर्वांगीण विकास में निहित है। इसलिए युवा राष्ट्र निर्माण में सर्वोच्च भूमिका निभाते हैं, इसके साथ ही देश का प्रत्येक नागरिक अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट और सर्वोच्च विकास के लिए प्रयासरत रहे। वास्तव में यही राष्ट्रहित है। जाति, धर्म और क्षेत्रीयता की संकीर्ण मानसिकता से उपर उठकर देश के प्रति गर्व की एक गहरी भावना महसूस करना ही राष्ट्रवाद है।

साथियो बात अगर हम भारत के सबसे कम उम्र वाली आबादी होने की करें तो,भारत के 1.35 बिलियन लोग इसे दुनियाँ का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश बनाते हैं, लेकिन औसतन 29 वर्ष की आयु के साथ, यह विश्वस्तर पर सबसे कम उम्र की आबादी में से एक है। जैसे ही युवा नागरिकों का यह विशाल संसाधन कार्यबल में प्रवेश करता है, यह एक जनसांख्यिकीय लाभांश बना सकता है।संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष द्वारा जनसांख्यिकीय लाभांश को जनसंख्या की आयु संरचना में बदलाव के परिणामस्वरूप आर्थिक विकास के रूप में परिभाषित किया जाता है, मुख्यतः जब कामकाजी उम्र की आबादी आश्रितों की संख्या से बड़ी होती है।

साथियों बात अगर हम युवाओं में राष्ट्रहित, राष्ट्रीयता भावना जगाने की करें तो, पहला कार्य व्यक्ति निर्माण का है और राष्ट्रीयसंस्कार व्यक्ति में

बनेंगे तो निश्चित तौर से वह निज हित से ऊपर राष्ट्र हित को प्राथमिकता देगा। देश के हर वर्ग के युवा राष्ट्रहित को सर्वोपरि समझे तभी हम एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण कर पाएंगे। युवाओं को हमरे पूर्वजों से प्रेरणा लेनी चाहिए संस्कृति को समझना होगा। युवा संगठन से ऑनलाइन जुड़कर भी देश को मजबूती दे सकते हैं।राष्ट्र से बड़ा कोई संगठन नहीं है और राष्ट्रीय भाव से बड़ी विचारधारा नहीं हो सकती। इसलिए आज नौजवानों में राष्ट्रीयता की भावना को जगाने की जरूरत है।

साथियों बात अगर हम बच्चों, युवाओं में राष्ट्रहित राष्ट्रवाद को गहराई से समझाने की करें तो, प्रत्येक नागरिक के लिए अपने राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शन करना अनिवार्य है क्योंकि हमारा देश अर्थात हमारी जन्मभूमि हमारी मां ही तो होती है। जिस प्रकार माता बच्चों को जन्म देती है तथा अनेक कष्टों को सहते हुए भी अपने बच्चों की खुशी के लिए अपने सुखों का परित्याग करने में भी पीछे नहीं हटती है उसी प्रकार अपने सीने पर हल चलवाकर हमारे राष्ट्र की भूमि हमारे लिए अनाज उत्पन्न करती है, उस अनाज से हमारा पोषण होता है।

साथियों बात अगर हम माननीय पीएम द्वारा एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार, पीएम ने कहा, एक बात जिसने हमारे लोकतंत्र व्यवस्था को बड़ा नुकसान पहुंचाया वह है राष्ट्रहित से ज्यादा प्राथमिकता अपनी विचारधारा को देना।अगर कोई विचारधारा यह कहती है कि देशहित के मामलों में भी मैं इसी दायरे में काम करूंगा तो यह रास्ता सही नहीं है। दोस्तों यह गलत है। आज हर कोई अपनी विचारधारा पर गर्व करता है। यह स्वाभाविक भी है, लेकिन फिर भी हमारी विचारधारा राष्ट्रहित के विषयों में राष्ट्र के साथ नजर आनी चाहिए। राष्ट्र के खिलाफ कतई नहीं। आप देश के इतिहास में देखिए जब -जब देश के सामने कोई कठिन समस्या आई है हर विचारधारा के लोग राष्ट्रहित में एक साथ आए हैं। आजादी की लड़ाई में महात्मा गांधी के नेतृत्व में हर विचारधारा के लोग एक साथ आए थे। उन्होंने देश के लिए एक साथ संघर्ष किया था। उन्होंने कहा, आपातकाल के खिलाफ आंदोलन में कई राजनीतिक दलों के नेता, कार्यकर्ता और संगठन के लोग भी थे। समाजवादी लोग भी थे, कम्युनिस्ट भी थे, जेएनयू से जुड़े कितने ही लोग थे जिन्होंने एक साथ आकर इमरजेंसी के खिलाफ संघर्ष किया था। इस लड़ाई में किसी को अपनी विचारधारा से समझौता नहीं करना पड़ा था। पर सब सबसे ऊपर राष्ट्रहित का उद्देश्य था। इसलिए जब राष्ट्र की एकता, अखंडता का प्रश्न हो तो एक साथ आना चाहिए।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि राष्ट्रहित से ज्यादा प्राथमिकता अपनी विचारधारा को देना, हमारे देशव लोकतांत्रिक व्यवस्था का बहुत बड़ा नुकसान राष्ट्रहित सर्वोपरि होगा, तो राष्ट्र सुरक्षित होगा।युवाओं में राष्ट्रहित से जुड़े मुद्दों की समझ विकसित करने, उनकी चिंताओं, जिज्ञासाओं को समझकर उनका उत्साहवर्धन करना सर्वोपरि राष्ट्र सेवा है।

मार्च में खरीदें एमजी की कारें, मिल रहा 5.50 लाख रुपये बचाने का मौका, जानें किस गाड़ी पर कितना है डिस्काउंट ऑफर

ब्रिटिश वाहन निर्माता JSW MG मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। अगर आप इस महीने कंपनी की किसी गाड़ी को खरीदने का मन बना रहे हैं तो किस पर सबसे ज्यादा बचत की जा सकती है। किस गाड़ी पर March 2025 में कितना Discount Offer किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटिश वाहन निर्माता MG Motors की ओर से कई सेगमेंट में ICE और EV कारों की बिक्री भारतीय बाजार में की जाती है। कंपनी की अगर किसी गाड़ी को आप March 2025 में खरीदने का मन बना रहे हैं तो इस महीने किस गाड़ी पर कितनी बचत (MG Cars March 2025 Discount Offers) की जा सकती है। एमजी की ओर से इस महीने किस गाड़ी पर कितना Discount Offer किया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

JSW MG Comet EV पर कितना Discount Offer

देश की सबसे सस्ती इलेक्ट्रिक कार को JSW MG की ओर से Comet EV के तौर पर ऑफर किया जाता है। अगर आप March 2025 में इस गाड़ी को खरीदने का मन बना रहे हैं तो अधिकतम 45 हजार रुपये तक की बचत की जा सकती है। यह बचत इसके 2024 में बने मॉडल्स पर दी जा रही है। इसके अलावा अगर 2025 की बनी यूनिट को खरीदा जाता है तो कंपनी की ओर से अधिकतम 40 हजार रुपये तक के ऑफर्स दिए जा रहे हैं।

JSW MG Astor पर भी होगी बचत

JSW MG मोटर्स की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर एस्टर को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से ऑफर की जाने वाली इस एसयूवी को March 2025 में खरीदने पर अधिकतम 1.45 लाख रुपये तक बचाए जा सकते हैं। यह ऑफर इसके 2024 में बनी यूनिट्स पर दिया जा रहा है। अगर आपको 2025 में बनी यूनिट्स को खरीदना है तो इस महीने अधिकतम 70 हजार रुपये तक की बचत की जा सकती है।

JSW MG Hector पर मिलेगा कितनी बचत का मौका

एमजी मोटर्स की ओर से पांच, छह और सात सीटों के विकल्प के साथ JSW MG Hector को भारतीय बाजार में लाया जाता है। बेहतरीन फीचर्स और इंजन विकल्प के साथ आने वाली इस एसयूवी पर March 2025 में सबसे ज्यादा बचत का मौका दिया जा रहा है। कंपनी की ओर से Hector Diesel की 2024 की यूनिट्स पर 1.95 लाख रुपये तक के ऑफर्स दिए जा रहे हैं। इसके अलावा इस एसयूवी की 2025 यूनिट्स पर भी 70 हजार रुपये तक बचाए जा सकते हैं।

MG ZS EV पर भी मिलेगा डिस्काउंट

एमजी की ओर से इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर MG ZS EV की बिक्री की जाती है। इस एसयूवी को March 2025 में खरीदने पर अधिकतम 2.05 लाख रुपये तक की बचत हो सकती है। इस एसयूवी की 2025 यूनिट्स पर यह ऑफर दिया जा रहा है।

MG Gloster पर सबसे ज्यादा ऑफर

एमजी की ओर से फुल साइज एसयूवी के तौर पर MG Gloster की बिक्री की जाती है। इस महीने इस एसयूवी को खरीदने पर आपको 5.50 लाख रुपये तक की बचत हो सकती है। यह ऑफर इसकी 2024 की यूनिट्स पर मिल रहा है। 2023 की बची हुई यूनिट्स को इस महीने खरीदने पर आपको एक लाख रुपये तक ज्यादा की बचत हो सकती है।

कावासाकी बाइक्स पर मिल रहा तगड़ा डिस्काउंट, निन्जा पर 1.25 लाख रुपये तक की छूट

परिवहन विशेष न्यूज

कावासाकी की मोटरसाइकिलों पर मार्च में बंपर डिस्काउंट मिल रहा है। मार्च 2025 में कावासाकी की Ninja 300 Ninja 500 Eliminator 500 और Ninja 650 मॉडल पर भारी डिस्काउंट दिया जा रहा है। कावासाकी के इन मॉडल पर 70 हजार रुपये से लेकर 1.25 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। आइए जानते हैं कि किस बाइक पर कितना छूट मिल रहा है।

नई दिल्ली। अगर आप एक दमदार स्पोर्ट बाइक खरीदने का प्लान बना रहे हैं, तो आपके लिए यह एक सुनहरा मौका है। कावासाकी की Ninja 300, Ninja 500, Eliminator 500 और Ninja 650 मॉडल पर भारी छूट दे रहा है। Kawasaki की इन मॉडल पर 70,000 रुपये से लेकर 1.25 लाख रुपये तक का डिस्काउंट मिल रहा है। आइए जानते हैं कि कावासाकी के किस मॉडल पर कितना डिस्काउंट दिया जा रहा है।

Kawasaki के किस बाइक पर कितना डिस्काउंट ?

Ninja 300- कावासाकी की इस मोटरसाइकिल पर 69,000 रुपये की छूट दी जा रही है। यह बाइक अब 3.60 लाख रुपये में मिलेगी, जिसकी कीमत पहले 4.29 लाख रुपये थी।

Ninja 500- कावासाकी इस स्पोर्ट बाइक पर 1.20 लाख रुपये की छूट दी जा रही है। इसे आप 6 लाख में खरीद सकते हैं, जिसकी कीमत पहले 7.20 लाख रुपये थी।

Eliminator 500- इस मोटरसाइकिल पर भी 1.20 लाख रुपये की छूट मिल रही है। इसे अब आप 6.50 लाख रुपये में खरीद सकते हैं, जिसकी कीमत पहले 7.70 लाख रुपये थी।

Ninja 650- कावासाकी इस बाइक सबसे ज्यादा 1.25 लाख रुपये का डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसे आप 7.50 लाख रुपये में खरीद सकते हैं, जिसकी कीमत पहले 8.75 लाख रुपये थी।

Kawasaki की मोटरसाइकिल की खासियत

Kawasaki Ninja 300- इसमें 296 cc पैरेलल-ट्विन लिक्विड-कूल्ड इंजन दिया गया है, जो 39 PS की पावर और 26.1 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को असिस्ट और स्लिपर क्लच के साथ 6-स्पीड ट्रांसमिशन यानी गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

Kawasaki Ninja 500- इसमें 451 cc लिक्विड-कूल्ड, पैरेलल-ट्विन इंजन दिया गया है, जो 45 bhp की पावर और 42.6 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को स्लिप-एंड-असिस्ट क्लच के साथ छह-स्पीड ट्रांसमिशन से जोड़ा गया है।

Kawasaki Eliminator 500- इसमें 451 cc, पैरेलल-ट्विन, लिक्विड-कूल्ड इंजन दिया गया है, जो 45 PS की पावर और 42.6 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को असिस्ट और स्लिपर क्लच के साथ 6-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

Kawasaki Ninja 650- इसमें 649 cc लिक्विड-कूल्ड, पैरेलल-ट्विन इंजन दिया गया है। इसके इंजन को 67.3 bhp की पावर और 64 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को वेट, मल्टी-डिस्क क्लच वाले छह-स्पीड ट्रांसमिशन से जोड़ा गया है।

कब तक मिलेगी डील

कावासाकी की इन मॉडल पर डिस्काउंट मुंबई स्थित एन्जेन कावासाकी डीलरशिप के जरिए दिया जा रहा है, लेकिन भारत भर में कावासाकी के अन्य डीलर्स भी दे रहे हैं। यह ऑफर सिर्फ 2024 मैनुफैक्चर किए गए मॉडल पर मिल रहा है। यह ऑफर स्टॉक खत्म होने तक है

महाराष्ट्र में अप्रैल 2025 से किन पांच कारों को खरीदना हो सकता है महंगा, लिस्ट में शामिल हैं बीएमडब्ल्यू से लकर मर्सिडीज

महाराष्ट्र में राज्य सरकार की ओर से जल्द ही इलेक्ट्रिक वाहन सेगमेंट की कारों को खरीदना महंगा किया जा सकता है। अगर ऐसा होता है तो कौन सी कंपनी की किन पांच कारों को खरीदना महंगा हो सकता है। कीमत में कितनी बढ़ोतरी हो सकती है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। महाराष्ट्र में जल्द ही इलेक्ट्रिक सेगमेंट के वाहनों को खरीदना महंगा हो जाएगा। राज्य सरकार की ओर से इस बात की घोषणा भी की जा चुकी है। जिसके बाद किस कंपनी की कौन सी EV को खरीदना महंगा हो जाएगा। उसकी कीमत में कितनी बढ़ोतरी हो सकती है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

महाराष्ट्र में महंगी होंगी EV

महाराष्ट्र सरकार की ओर से हाल में ही बजट पेश किया गया है। जिसमें यह जानकारी दी गई है कि इलेक्ट्रिक वाहनों को खरीदना राज्य में महंगा होने जा रहा है। बजट के मुताबिक राज्य में EV सेगमेंट के वाहनों पर छह फीसदी का मोटर व्हीकल टैक्स लगाने की बात कही गई है। राज्य के सीएम देवेंद्र फडनवीस की ओर से बताया गया है कि इन टैक्स को सिर्फ 30 लाख रुपये से ज्यादा की EV पर ही लगाया जाएगा।

BYD Seal होगी महंगी

चीन की वाहन निर्माता BYD की ओर से भारत में इलेक्ट्रिक सेडान के तौर पर BYD Seal की बिक्री की जाती है। जिसकी एक्स शोरूम कीमत 41 लाख रुपये से लेकर 53 लाख रुपये के बीच है। महाराष्ट्र सरकार के फैसले के बाद इस गाड़ी को खरीदना महंगा हो जाएगा। जानकारी के मुताबिक राज्य में इस गाड़ी की कीमत में करीब 3.18 लाख रुपये तक की बढ़ोतरी हो सकती है। इसके अलावा कंपनी की Sealion, Atto3 को भी महंगा किया जाएगा।

Hyundai Ioniq5 भी होगी महंगी

साउथ कोरियाई वाहन निर्माता हुंडई की ओर से भी भारतीय बाजार में लग्जरी इलेक्ट्रिक गाड़ी के तौर पर Hyundai Ioniq5 की बिक्री की जाती है। इस गाड़ी को 46.05 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जाता है। राज्य सरकार के फैसले के बाद इसे खरीदना तीन लाख रुपये तक महंगा हो सकता है।

Kia EV6 की भी बढ़ेगी कीमत

किआ की ओर से EV6 को भी 30 लाख रुपये से ज्यादा की कीमत पर ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी की एक्स शोरूम कीमत 60.96 लाख रुपये से लेकर 65.96 लाख रुपये है। नए मोटर व्हीकल टैक्स के बाद इसे खरीदने के लिए चार लाख रुपये तक ज्यादा देने पड़ सकते हैं।

BMW iX1 LWB

बीएमडब्ल्यू की ओर से iX1 LWB की बिक्री की जाती है। इसे मौजूदा समय में 49 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है। लेकिन राज्य में टैक्स लगाए जाने के बाद इसकी कीमत में करीब तीन लाख रुपये तक बढ़ सकते हैं।

Mercedes EQA भी होगी महंगी

मर्सिडीज की ओर से EQA को 67.20 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लाया जाता है। महाराष्ट्र में नए टैक्स के बाद इस गाड़ी को खरीदना चार लाख रुपये तक महंगा हो सकता है।

सिम्पल वन एस इलेक्ट्रिक स्कूटर हुआ लॉन्च, फुल चार्ज में मिलेगी 181 किलोमीटर की रेंज, जानें कितनी है कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

इलेक्ट्रिक स्कूटर स्टार्टअप सिंपल वन की ओर से नए इलेक्ट्रिक स्कूटर S को लॉन्च कर दिया है। इस स्कूटर में किस तरह के फीचर्स को दिया गया है। कितनी दमदार मोटर और बैटरी को दिया गया है। किस कीमत पर स्कूटर को लॉन्च किया गया है। बाजार में इसका किनसे मुकाबला होगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में इलेक्ट्रिक स्कूटर सेगमेंट में लगातार नए वाहनों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। भारतीय स्टार्टअप Simple Energy की ओर से भी 12 March 2025 को S नाम से नए Electric Scooter को लॉन्च कर दिया है। कंपनी की ओर से इसमें किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितनी दमदार मोटर और बैटरी को दिया गया है। सिंगल चार्ज में इसे कितने किलोमीटर तक चलाया जा सकेगा। Simple OneS electric scooter को किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुआ Simple OneS Electric Scooter

सिंपल वन की ओर से S नाम से नए इलेक्ट्रिक स्कूटर को भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की ओर इस स्कूटर को ज्यादा बेहतर रेंज के साथ लॉन्च किया गया है। सिंपल वन का यह दावा है कि यह अपने सेगमेंट में सबसे ज्यादा रेंज के साथ आएगा।

कैसे हैं फीचर्स

कंपनी की ओर से स्कूटर में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। इसमें 35 लीटर अंडरसीट स्टोरेज, 770 एमएम सीट हाइट, ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, 5G e-SIM, Wifi, सात इंच टचस्क्रीन डैशबोर्ड, टर्न बाय टर्न नेविगेशन, ओटीए अपडेट्स, फाइंड माई व्हीकल, टीपीएमएस, रीजनरेटिव और रैपिड ब्रेकिंग सिस्टम, पार्क असिस्ट जैसे कई फीचर्स दिए गए हैं।

कितनी दमदार बैटरी और मोटर

सिंपल वन की ओर से नए स्कूटर में 3.7 kWh की क्षमता की फिक्स बैटरी दी गई है। जिसे एक बार चार्ज करने के बाद 181 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। इसके साथ स्कूटर में ईको, राइड, डैश और सोनिक मोड्स को दिया गया है। स्कूटर में 8.5 kW की मोटर दी गई है जिससे स्कूटर को 0-40 किलोमीटर की स्पीड से चलाने में 2.55 सेकेंड का समय लगता है। इसकी टॉप स्पीड 105 किलोमीटर प्रति घंटा तक है।

कितनी है कीमत

Simple One S इलेक्ट्रिक स्कूटर को बाजार में 1.39 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च (Simple OneS price) किया गया है। इसमें चार रंगों का विकल्प दिया गया है, जिसमें Brazen Black, Grace White, Azure Blue and Namma Red शामिल हैं। फिलहाल इस स्कूटर को बेंगलुरू, गोआ, पुणे, विजयवाड़ा, हैदराबाद, कोच्चि और मैंगलौर जैसे शहरों में कंपनी के 15 शोरूम पर उपलब्ध करवाया गया है।

किनसे है मुकाबला

Simple OneS स्कूटर को बाजार में Ola, Ather, TVS, Bajaj जैसे निर्माताओं की ओर से ऑफर किए जाने वाले इलेक्ट्रिक स्कूटर्स से चुनौती मिलेगी।

फरवरी में भी मारुति अर्टिगा ने महिंद्रा और टोयोटा को पछाड़ा, जानें टॉप-5 में शामिल हुईं कौन सी MPV और SUV

भारतीय बाजार में हर महीने लाखों की संख्या में वाहनों की बिक्री होती है। जिनमें Seven Seater MPV and SUV सेगमेंट का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है। November 2024 के दौरान देशभर में ग्राहकों ने किन सात सीटों वाली गाड़ियों को सबसे ज्यादा पसंद किया। बिक्री के मामले में Top 5 लिस्ट में कौन सी SUV and MPV ने अपनी जगह बनाई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहन निर्माताओं की ओर से उत्पादों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। बाजार में MPV और SUV सेगमेंट में कई बेहतरीन वाहन ऑफर किए जाते हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक February 2025 के दौरान 7 Seater MPV and SUV की कितनी बिक्री हुई है। Top-5 में कौन कौन शामिल हुआ है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Ertiga की कितनी हुई बिक्री

रिपोर्ट्स के मुताबिक देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल मारुति की ओर से अर्टिगा की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से बीते महीने इस एमपीवी की 14868 यूनिट्स की बिक्री (Maruti Ertiga Sales) की गई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में चार फीसदी की कमी दर्ज हुई है लेकिन फिर भी यह पहले नंबर पर रही है।

Mahindra Scorpio की बिक्री में आई गिरावट

सात सीटों वाली एसयूवी के तौर पर महिंद्रा की ओर से स्कॉर्पियो और स्कॉर्पियो एन को ऑफर किया जाता है। दोनों ही एसयूवी February 2025 के बिक्री के मामले में दूसरे नंबर पर रही हैं। बीते महीने में स्कॉर्पियो ब्रॉन्ड की एसयूवी की कुल बिक्री 13618 यूनिट्स दर्ज की गई है। जबकि पिछले साल February महीने में इनकी कुल बिक्री 15051 यूनिट्स हुई थी। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में 10 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है।

Mahindra Bolero की कैसी रही बिक्री

स्कॉर्पियो के अलावा महिंद्रा अपनी क्लासिक एसयूवी बोलेरो को भी सात सीटों के साथ ऑफर करती है। कंपनी की यह एसयूवी शहरों के साथ ही ग्रामीण इलाकों में भी सबसे ज्यादा पंसद की जाने वाली एसयूवी में से एक है। March 2025 के दौरान इसकी कुल 8690 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबकि February 2024 के दौरान इसकी कुल 10113 यूनिट्स की बिक्री हुई थी। आंकड़ों के मुताबिक ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में भी 14 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है।

Toyota Innova की कैसी रही मांग

जापानी वाहन निर्माता टोयोटा की ओर से लंबे समय से इनोवा को ऑफर किया जा रहा है। February 2025 के दौरान इसकी कुल 8449 यूनिट्स की बिक्री हुई। जबकि पिछले साल इसकी 8481 यूनिट्स की बिक्री हुई थी।

Mahindra XUV 700 की मांग बढ़ी

बीते महीने सात सीटों वाली एमपीवी और एसयूवी सेगमेंट में टॉप-5 लिस्ट में आखिरी पायदान पर Mahindra की XUV 700 रही। March 2025 के दौरान इसकी कुल 7468 यूनिट्स की बिक्री हुई थी। जबकि इसके पहले February 2024 में इस एसयूवी को 6546 लोगों ने खरीदा था। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में 14 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है।

होली महोत्सव के सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व

विजय गर्ग

भारत के प्रमुख त्यौहारों में शामिल होली को पूरा भारत देश मनाता है। होली के त्यौहार का सांस्कृतिक आधार देखा जाए तो यह वर्ष में हुए परस्पर मनमुटाव को समाप्त करने का एक माध्यम है। भारत की संस्कृति अत्यंत श्रेष्ठ भी इसीलिए ही कही जाती है कि यहां आपसी सामंजस्य का बोध है। यहां के सभी त्यौहार आपसी सामंजस्य को बढ़ावा देने वाले होते हैं। इसी प्रकार रंगों का पर्व होली का त्यौहार भी सामंजस्य को बढ़ावा देता है। जिस प्रकार से होली के अवसर पर सभी रंग आपस में घुल मिल जाते हैं, उसी प्रकार से व्यक्तियों के मिलने की भी कल्पना की गई है। इस त्यौहार पर दुश्मनों के भी भाव बदल जाते हैं, और सारे देश में दोस्ती का वातावरण निर्मित होता हुआ दिखाई देता है।

भारत भूमि के संस्कार वास्तव में एक ऐसी अनमोल विरासत है, जो सदियों से एक परंपरा के रूप में प्रचलित है। जो समाज में ऐक्य भाव की स्थापना करने का मार्ग प्रशस्त करता है। वर्तमान में जहां परिवार टूट रहे हैं, वहीं समाज में अलगाव की भावना भी विकसित होती जा रही है। इस भाव को समाप्त करने के लिए हमारे त्यौहार हर वर्ष पथ प्रदर्शक बनकर आते हैं, लेकिन विसंगति यह है कि हम इन त्यौहारों को भूलते जा रहे हैं। त्यौहार की परिपाटी को हमने अपनी सुविधा के अनुसार बदल दिया है। ऐसे में यही कहा जा सकता है कि हम अपनी जड़ों से या तो कट चुके हैं या फिर कटने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। जो व्यक्ति या समाज अपनी जड़ों से कट जाता है वह निश्चित ही पतन की ओर ही जाता है।

भारत के प्रमुख त्यौहारों में शामिल होली को पूरा भारत देश मनाता है। होली के त्यौहार का सांस्कृतिक आधार देखा जाए तो यह वर्ष में हुए परस्पर मनमुटाव को समाप्त करने का एक माध्यम है। भारत की संस्कृति अत्यंत श्रेष्ठ भी इसीलिए ही कही जाती है कि यहां आपसी सामंजस्य का बोध है। यहां के सभी त्यौहार आपसी सामंजस्य को बढ़ावा देने वाले होते हैं। इसी प्रकार रंगों का पर्व होली का त्यौहार भी सामंजस्य को बढ़ावा देता है। जिस प्रकार से होली के अवसर पर सभी रंग आपस में घुल मिल जाते हैं, उसी प्रकार से व्यक्तियों के मिलने की भी कल्पना की गई है। इस त्यौहार पर दुश्मनों के भी भाव बदल जाते हैं, और सारे देश में दोस्ती का वातावरण निर्मित होता हुआ दिखाई देता है। वर्तमान में होली के बारे में हम कहते हैं कि पहले जैसी होली अब नहीं होती। यह सत्य है कि कि इसमें परिवर्तन आया है, लेकिन क्या हमने सोचा कि ऐसा परिवर्तन आने के पीछे कारण क्या हैं। वास्तव में इसके लिए हम ही दोषी हैं। पांच दिन के इस त्यौहार की मस्ती को हमने समेट कर रख दिया है और मात्र एक या दो घंटे में पूरा त्यौहार मना लिया जाता है। ऐसे में मात्र एक घंटे में होली का वह भाई चारा वाला स्वरूप कैसे दिखाई देगा।

होली के इस पावन पर्व पर हमारे समाज के कई लोग दुश्मनी मिटाना तो दूर, दुश्मनी पालने की कवायद करते हुए दिखाई देते हैं। पिछले कई वर्षों से देश के कई भागों में होली के अवसर पर लड़ाई झगड़े होते हुए भी दिखाई देने लगे हैं। इससे सवाल यह उठता है कि क्या हम होली को वास्तविक अर्थों में मनाने का मन बना पा रहे हैं। अगर नहीं तो तो हमें यह कहने का भी अधिकार भी नहीं है कि होली का स्वरूप पहले जैसा नहीं रहा। पौराणिक मान्यताओं के आधार पर होली के पावन पर्व का निष्कर्ष निकाला जाए तो यही परिलक्षित होता हुआ दिखाई देता है कि जिसके मन में विकार होता है, उसे समाप्त करने का होली का त्यौहार सबसे अच्छा अवसर है, अगर हमने अपने अंदर पैदा हुए विकास को समाप्त करने का प्रयास नहीं किया तो भगवान उस विकार को समाप्त करने का काम कर देंगे। हम जानते हैं कि भगवान नरसिंह ने राक्षस हिरण्यकश्यप को इसलिए मार दिया कि उसके अंदर कई प्रकार के विकास समाहित हो गए थे। भगवान के भक्त प्रह्लाद ने कई बार चेताया भी, लेकिन उसने अपने अंदर के अहम को समाप्त नहीं किया।

रंगों का पर्व होली हिन्दुओं का पवित्र त्यौहार है। यह मौज-मस्ती व मनोरंजन का त्योहार है। सभी हिंदू जन इसे बड़े ही उत्साह व सौहार्दपूर्वक मनाते हैं। यह त्योहार लोगों में प्रेम और भाईचारे की भावना उत्पन्न करता है। जिस प्रकार बसंत के मौसम में रंग बिखरते हैं, उसी प्रकार से होली के अवसर पर भी रंग बिखरते हुए दिखाई देते हैं। रंगों का अर्थ है, मन में बसंत की बहार का उल्लास। अगर होली के अवसर पर हमारे मन में उल्लास नहीं है तो फिर होली के मायने ही क्या हैं? इसलिए होली पर मन की प्रफुल्लता बहुल जरूरी है। प्राकृतिक रूप से फाल्गुन की पूर्णिमा ही नहीं अपितु पूरा फाल्गुन मास होली के रंगों से सराबोर हो जाता है। होली का त्यौहार ज्यों-ज्यों निकट आता जाता है त्यों-त्यों हम नए उत्साह से ओत-प्रोत होने लगते हैं।

होली का पर्व प्रतिवर्ष फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस पर्व का विशेष धार्मिक, पौराणिक व सामाजिक महत्व है। इस त्योहार को मनाने के पीछे एक पौराणिक कथा प्रसिद्ध है। प्राचीनकाल में हिरण्यकश्यप नामक असुर राजा ने ब्रह्मा के वरदान तथा अपनी शक्ति से मृत्युलोक पर विजय प्राप्त कर ली थी। अभिमानवश वह स्वयं को अजेय समझने लगा। सभी उसके भय के कारण उसे ईश्वर के रूप में पूजते थे परंतु उसका पुत्र प्रह्लाद ईश्वर पर आस्था रखने वाला था। जब उसकी ईश्वर भक्ति को खंडित करने के सभी प्रयास असफल हो गए तब हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका को यह आदेश दिया कि वह प्रह्लाद को गोद में लेकर जलती हुई आग की लपटों में बैठ जाए, क्योंकि होलिका को आग में न जलने का वरदान प्राप्त था। परंतु प्रह्लाद के ईश्वर पर दृढ़-विश्वास के चलते उसका बाल भी बांका न हुआ बल्कि स्वयं होलिका ही जलकर राख हो गई। तभी से होलिका दहन परंपरागत रूप से हर फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस बात से कहा जा सकता है कि कुटिलता पूर्वक चली गई चाल कभी सफल नहीं हो सकती है। भगवान की भक्ति के समक्ष सारी कुटिलता धरी की धरी रह जाती है। हम सभी भगवान की भक्ति के समक्ष कुछ भी नहीं हैं। व्यक्ति वाहे कितना भी सामर्थ्यवान हो जाए, लेकिन जिन लोगों पर भगवान का आशीर्वाद है, उनका कभी कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

होलिका दहन के दिन रंगों की होली होती है जिस दुल्हैड़ी भी कहा जाता है। इस दिन बच्चे, बूढ़े और जवान सभी आपसी वैर भुलाकर होली खेलते हैं। सभी होली के रंग में सराबोर हो जाते हैं। वे एक-दूसरे पर रंग डालते हैं तथा गुलाल लगाते हैं। ब्रज की परंपरागत होली तो विश्वविख्यात है जिसे देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं। ब्रज क्षेत्र में होली का पर्व देखते ही बनता है। कहा जाता है कि भारत में जिसने ब्रज की होली नहीं देखी उसने कुछ भी नहीं देखा।

होली का त्योहार प्रेम और सद्भावना का त्योहार है परंतु कुछ असामाजिक तत्व प्रायः अपनी कुत्सित भावनाओं से इसे दूषित करने की चेष्टा करते हैं। वे रंगों के स्थान पर कीचड़, गोबर अथवा वार्निश आदि का प्रयोग कर वातावरण को बिगाड़ने की चेष्टा करते हैं। ऐसे लोग होली के मूल और सांस्कृतिक स्वभाव को बिगाड़ने का प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं। वास्तव में ऐसे लोगों को होली से कोई मतलब नहीं है। होली पर नशा करना भी आज देखा जा रहा है, कभी-कभी शराब आदि का सेवन कर महिलाओं व युवतियों से छेड़छाड़ की कोशिश करते हैं। हमें ऐसे असामाजिक तत्वों से सावधान रहना चाहिए। आवश्यकता है कि हम सभी एकजुट होकर इसका विरोध करें ताकि त्योहार की पवित्रता नष्ट न होने पाए। ऐसे लोगों से हम यही कहना चाहते हैं कि उन्हें होली की पवित्रता को ध्यान में रखकर ही होली मनानी चाहिए। जिस प्रकार से भगवान नरसिंह ने धरती से बुराई का नाश किया, उसी प्रकार से हम भी अपने समाज में फैली बुराइयों का अंत करने में सहयोग करें। इसके लिए सबसे पहले अपने स्वयं के भीतर बुराई का त्याग करना होगा। तभी होली का सार्थकता मानी जाएगी। होली का पावन पर्व यह संदेश लाता है कि मनुष्य अपने द्वेष तथा परस्पर वैमनस्य को भुलाकर समानता व प्रेम का दृष्टिकोण अपनाए। मौज-मस्ती व मनोरंजन के इस पर्व में हँसी-खुशी सम्मिलित हों तथा दूसरों को भी सम्मिलित होने हेतु प्रेरित करें। यह पर्व हमारी संस्कृतिक विरासत है। हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम मूल भावना के बनाए रखें ताकि भावी पीढ़ियाँ गौरवान्वित हो सकें।

बीमारी, दवा और सावधानी

विजय गर्ग

देसी दवाइयों के नाम पर भी जो गड़बड़ घोटाला हो रहा है, उसके बारे में खबरें आती तो हैं, लेकिन हम लोगों को व्हाट्सएप से कहां इतनी फुर्सत है कि हम उस पर ज़्यादा सोचें। देसी से मेरा मतलब आयुर्वेदिक नहीं है, वह तो एक अहम भारतीय चिकित्सा पद्धति है। लेकिन कुछ स्वार्थी तत्व देसी के नाम पर ऐसे ही कुछ अजीबोगरीब बेचते रहते हैं जिससे फायदा तो दूर, नुकसान ज़रूर हो जाते हैं। तीस-चालीस साल पहले सुनते थे कि घुटने के दर्द के लिए शर्तिया इलाज की दुहाई देने वालों की पोल तब खुलती जब पता चलता कि स्टीरॉयड नाम की दवा मिला दी जाती थी। यह तो एक मिसाल है, लेकिन ऐसा और क्या-क्या, कहां-कहां हो रहा है, कोई कुछ कह नहीं सकता।

आज मुझे लंबे अरसे के बाद यह स्टीरॉयड वाली बात इसलिए याद आई कि हमारे एक साथी डॉक्टर ने एक अखबार की क्लिपिंग शेयर की, जिसे पढ़कर किसी के भी पैरों तले से ज़मीन खिसक जाए। खबर में बताया गया है कि देसी दवाइयां, जो मधुमेह के लिए बेची जा रही थीं, उनमें मधुमेह की एलोपैथिक दवाइयों की दस गुना मात्रा पाई गई। इस गोलमाल का पर्दाफाश तब हुआ जब कोई वीआईपी ऐसी दवाई ले रहा था। तीन दिन बाद ही उसका ब्लड शुगर स्तर इतना नियंत्रण में आ गया कि उसे इंसुलिन लेने की ज़रूरत ही न पड़ी। उसने आयुर्वेदिक विशेषज्ञों से बात की। वे भी इस चमत्कार पर हैरान हुए। उन्होंने दवाई की टेस्टिंग की सलाह दी। तब मामले का खुलासा हुआ।

सोचने वाली बात तो यह है कि एलोपैथिक डॉक्टर तो इस तरह की दवाइयां लिखते वक्त कई तरह के जमा-घटा करते हैं, मरीज़ की उम्र, वजन, उससे जुड़े अन्य पैरामीटर्स देखकर, जांच कर मधुमेह की दवाई की डोज़ तय करते हैं, लेकिन देखिए किस तरह से दस गुना डोज़ देसी दवाई के नाम पर उन्हें परोसी जा रही थी। यह मामला सामने आ गया, न जाने कितनी जगह ऐसा चल रहा होगा।

आपको क्या लगता है इनकी क्या सज़ा होनी चाहिए? 'रोटी' फिल्म का एक गीत था, जो 1974 में आई थी। उसका गाना 'यह जो पब्लिक है, सब जानती है' रोमांचित करता था। लेकिन आज पचास साल बाद यही लगता है कि पब्लिक कुछ नहीं जानती, बड़ी ताकतें, राजनीतिक, व्यापारिक और धार्मिक सब कुछ जानती हैं कि कैसे जनता का इस्तेमाल करना है। और कुछ नहीं, बस, आराम से गाना सुनिए। सावधान रहिए।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कहानी: चौथी रोटी

विजय गर्ग

एक मित्र ने पत्नी के स्वर्ग वास हो जाने के बाद अपने दोस्तों के साथ सुबह शाम पार्क में टहलना और गप्पें मारना, पास के मंदिर में दर्शन करने को अपनी दिनचर्या बना लिया था।

हालांकि घर में उन्हें किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं थी। सभी उनका बहुत ध्यान रखते थे, लेकिन आज सभी दोस्त चुपचाप बैठे थे।

एक दोस्त को वृद्धाश्रम भेजने की बात से सभी दुःखी थे₹ , ।

तभी एक दोस्त ने कहा

आप सब हमेशा मुझसे पूछते थे कि मैं भगवान से तीसरी रोटी क्यों माँगता हूँ? आज बतला देता हूँ।₹

कमल ने पूछा ₹क्या बहू तुम्हें सिर्फ तीन रोटी ही देती है ?₹

बड़ी उत्सुकता से एक दोस्त ने पूछा? ₹नहीं यार! ऐसी कोई बात नहीं है, बहू बहुत अच्छी है।

असल में ₹रोटी, चार प्रकार की होती है।"

पहली ₹सबसे स्वादिष्ट₹ रोटी ₹माँ की ₹ममता₹ और ₹वात्सल्य₹ से भरी हुई। जिससे पेट तो भर जाता है, पर मन कभी नहीं भरता।

एक दोस्त ने कहा, सोलह आने सच, पर शादी के बाद माँ की रोटी कम ही मिलती है।₹ उन्होंने आगे कहा ₹हाँ, वही तो बात है।

दूसरी रोटी पत्नी की होती है जिसमें अपनापन और ₹समर्पण₹ भाव होता है जिससे ₹पेट₹ और ₹मन₹ दोनों भर जाते हैं।₹, क्या बात कही है यार ?₹ ऐसा तो हमने कभी सोचा ही नहीं।

फिर तीसरी रोटी किस की होती है ?₹ एक दोस्त ने सवाल किया।

₹तीसरी रोटी बहू की होती है जिसमें सिर्फ ₹कर्तव्य₹ का भाव होता है जो कुछ कुछ स्वाद भी देती है और पेट भी भर देती है और वृद्धाश्रम की परेशानियों से भी बचाती है₹, थोड़ी देर के लिए वहाँ चुप्पी छा गई।

₹लेकिन ये चौथी रोटी कौन सी होती है ?₹ मौन तोड़ते हुए एक दोस्त ने पूछा-

₹चौथी रोटी नौकरानी की होती है। जिससे ना तो इन्सान का ₹पेट₹ भरता है न ही ₹मन₹ तृप्त होता है और ₹स्वाद₹ की तो कोई गारँटी ही नहीं है₹, तो फिर हमें क्या करना चाहिये यार?

माँ की हमेशा पूजा करो, पत्नी को सबसे अच्छा दोस्त बना कर जीवन जिओ, बहू को अपनी बेटी समझो और छोटी मोटी ग़लतियाँ नज़रन्दाज़ कर दो, बहु भी खुश रहेगी तो बेटा भी ध्यान रखेगा।

यदि हालात चौथी रोटी तक ले आये तो भगवान का आभार जताओ कि उसने जीवित रखा हुआ है और अब स्वाद पर ध्यान मत दो केवल जीने के लिए थोड़ा कम खाओ ताकि आराम से बुढ़ापा कट जाए। बड़ी खामोशी से दोस्त सोच रहे थे वाकई हम कितने खुशकिस्मत हैं ।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कहानी: औरत का रूप

विजय गर्ग

मुमताज शादी कर के आई थी. उस के भी कुछ अरमान थे, पर उस के शौहर अब्दुल को मानो एक कुंआरी लड़की के अरमानों की कोई फिक्र ही नहीं थी.

आखिरकार मुमताज ने एक दिन अपनी सास से अपने मन की बात कह ही दी, ''अम्मी' जब से मैं शादी कर के आई हूं, तब से ये रोज रात में कहीं निकल जाते हैं और सुबह को ही घर लौटते हैं' और मुझे हाथ भी नहीं लगाते' मैं शादी से पहले जैसी थी, वैसी ही आज भी हूं.''

''अच्छा' थोड़ा मूडी तो है मेरा बेटा' और फिर कामधंधे का भी तनाव रहता है उस पर. ऐसे में एक बीवी की जिम्मेदारी होती है कि वह घर के साथसाथ अपने शौहर को भी संभाले. अगर शौहर उस पर किसी वजह से ध्यान नहीं दे रहा है, तो अपनी अदाओं से उसे रि ?ाए और शौहर की मरजी के हिसाब से चल कर उसे खुश रखे.'

अब्दुल की अम्मी बातोंबातों में मुमताज को रास्ता दिखा गई थीं.

आज शाम को जब अब्दुल घर आया, तो मुमताज ने होंठों पर गहरे रंग की लिपस्टिक लगाई हुई थी और मैरून रंग का लिबास पहना हुआ था.

मुमताज को देखते ही अब्दुल को भी यह अहसास हो गया था कि आज वह कुछ अलग लग रही है, इसलिए जब अब्दुल बाथरूम से नहा कर निकला तो उस ने मुमताज को अपनी बांहों में भर लिया और होंठों से अपने इश्क की छाप उस के जिस्म पर लगाने लगा

मुमताज का कुंआरा जिस्म धधक उठा था और आंखें मदहोशी से मुंदने लगीं. दोनों के जिस्म एकदूसरे में समाने को बेताब थे.

अब्दुल ने मुमताज के ऊपरी कपड़े भी हटा दिए. शर्म से मुमताज ने अपने हाथों से कैंची बना कर अपने गोरे उभारों को ढक लिया, पर इस कोशिश में वह नाकाम रही, क्योंकि उस के हाथों को अब्दुल ने खोल दिया था और अब हुस्न का ज्वालामुखी अब्दुल के सामने था.

अब्दुल ने अपने होंठ आगे बढ़ाए, पर इतने में अब्दुल का मोबाइल बज उठा. ऐसे वक्त किसी का भी फोन आना अब्दुल को अखर रहा था, ''अरे मुमताज, थोड़ा काम याद आ गया है' अभी निबटा कर आता हूं.'

'भला अपनी नई दुलहन को इस तरह छोड़ कर जाता है कोई' और फिर ये इस तरह से कहां चले जाते हैं,' गहरी सोच में पड़ गई थी मुमताज

अगली सुबह तकरीबन 9 बजे की बात है, जब मुमताज अपने कमरे से बाहर आ रही थी, तो उस ने बरामदे में नौकरानी सबरीना और अब्दुल को एकसाथ खड़े हुए देखा. वे दोनों बहुत धीमी आवाज में एकदूसरे से बातें कर रहे थे.

उसी समय अब्दुल ने अपनी जेब से कुछ पैसे निकाले और सबरीना को दिए और सबरीना ने जल्दी से वे पैसे अपनी कुरती में रख लिए.

मुमताज एक पल को ठिठक गई थी. क्या अब्दुल और सबरीना के बीच कुछ चल रहा है

'अरी मुमताज, जिस नेकदिल शौहर ने अपने काम के आगे अभी तक तेरे कुंआरे जिस्म को छुआ तक नहीं है, वह भला एक नौकरानी के साथ' तू भी न जाने क्याक्या सोच लेती है'' अपने सिर को ?ाटक कर अब्दुल की तरफ मुसकराते हुए बढ़ गई मुमताज.

एक दिन मेज पर कुछ कागजात सही करतेकरते एक पुरानी किताब नीचे गिर गई और उस में से एक तसवीर बाहर निकल गई. मुमताज की नजर उस तसवीर पर टिकी तो हटी ही नहीं. हटती भी कैसे' यह तो उस के शौहर अब्दुल की तसवीर है, जो सिर पर सेहरा बांधे किसी और के साथ है' मतलब, अब्दुल की शादी पहले भी किसी और से हो चुकी है?

आंखों में आंसुओं का सैलाब ले कर मुमताज दौड़ीदौड़ी अपनी सास के पास पहुंची, ''अम्मी, यह क्या' यह इन के साथ कौन है? क्या अब्दुल पहले से ही शादीशुदा हैं?'' एकसाथ कई सवाल मुमताज के जेहन में घूम रहे थे.

''बेटी मुमताज, हम ने तुम से यह राज जरूर छिपाया है, पर यकीन मानो हमारी मंशा कुछ भी गलत नहीं थी. अब्दुल का निकाह जिस लड़की से हुआ था, वह दिमागी रूप से बीमार थी. उस के घर वालों ने अपने सिर की बला टालने के लिए हम से ?ाठ बोल कर अब्दुल के साथ अपनी लड़की को बांध दिया.''श

''पर अम्मी, जो धोखा आप के साथ हुआ, वही आप लोगों ने मेरे साथ दोहरा दिया. आप लोगों ने हम से यह बात क्यों छिपाई? हमें यह बताने की जरूरत ही नहीं सम ?ा गई कि अब्दुल का बीता समय ऐसे हादसे से भरा रहा है और क्या अब आप लोगों का इस तरह राज छिपाना मेरे और अब्दुल के बीच तलाक की वजह नहीं बन सकता है''

''मुमताज बेटी' तुम्हारा गुस्सा जायज है, पर जरा यह भी तो सोचो कि अब उस लड़की का अब्दुल की जिंदगी में कोई वजूद नहीं है. वह लड़की एक दिन पता नहीं घर छोड़ कर कहां चली गई. हम लोगों ने चारों तरफ उसे बहुत ढूंढ़ने की कोशिश की, पर वह नहीं मिली''

अब्दुल की अम्मी ने लंबी सांस ले कर बोलना जारी रखा, ''वह तो भला हो डाक्टर खान का, जिन्होंने इस हादसे से उबरने में अब्दुल की मदद की. अब अगर तुम उसे छोड़ कर जाना चाहती हो तो जा सकती हो' मेरे अब्दुल के नसीब में औरत का साथ ही नहीं है शायद,'' अम्मी की आंखों में आंसू तैर आए थे.

मुमताज अपने कमरे में लौट आई और अपनेआप को घर के कामों में मसरूफ कर लिया.

''बेटी मुमताज' मैं ने तुम्हें डाक्टर खान के बारे में बताया था न, जिन्होंने अब्दुल का इलाज किया था' उन से हमारे घरेलू संबंध हैं और वे लोग आज शाम को हमारे घर खाने पर आ रहे हैं, इसलिए कुछ अच्छा सा बना लेना,'' अम्मी ने कहा.

''जी अम्मी, ठीक है' मैं सब संभाल लूंगी.''

दिनभर किचन की मेहनत के बाद शाम को खाने की मेज पर जब उस के बनाए खाने की तारीफ होने लगी, तो मुमताज के दिल को सुकून मिला.

''अरे मुमताज, जरा हमारे साथ भी तो बैठ लो,'' मिसेज खान कहतेकहते उठ कर किचन में आ गई थीं.

''प्यार तो खूब करता होगा अब्दुल तुम्हें?'' मिसेज खान ने पूछा

''जी, अभी तो इन्हें काम में ही काफी देर हो जाती है और फिर मेरे पास भी काफी काम रहता है' ऐसे में''' आगे की बातों को मुमताज ने मन में ही रोक लिया था.

''अच्छा तो यह बात है' कोई बात नहीं, मैं तुम्हें ऐसे नुसखे बताती हूं, जिन से तू अपने शौहर के दिल पर राज करेगी,'' मिसेज खान ने मुमताज को अपने शौहर को बस में रखने के गुर बताए.

पहली ही मुलाकात में मिसेज खान ने मुमताज के मन को मोह लिया था और दोनों ने एकदूसरे के ह्वाट्सएप नंबरों को भी ले लिया था

एक शाम को अब्दुल की गाड़ी की आवाज आई, तो मुमताज की नजर गेट के बाहर चली गई. उस ने देखा कि अब्दुल के साथ कोई साथी सवारी थी, जो औरत थी. उस ने अपने मुंह पर कपड़ा लपेटा हुआ था. वह औरत अब्दुल की गाड़ी से उतर कर एक कैब की ओर बढ़ गई.

'तो मेरा शक सही था' अब्दुल का जरूर किसी के साथ चक्कर चल रहा है'' मुमताज अब्दुल की अम्मी के पास गई और बोली, ''अम्मी, मेरा शक सही था' मैं ने इन के साथ एक औरत को देखा है. जो इन की गाड़ी से उतर कर जा रही थी.''

''अरी मुमताज, तू बेवजह शक कर रही है. मेरा बेटा बहुत रहमदिल है, इसलिए महल्ले में रहने वाली किसी औरत को उस ने बिठा लिया होगा'' अम्मी ने सिरे से ही मुमताज की बात खारिज कर दी.

मुमताज परेशान हो उठी. वह जानती थी कि यह बात अम्मी ने अभी तक मानी नहीं और मायके में भी बताने से कोई फायदा नहीं होगा'

रात में जब अब्दुल आया, तो मुमताज ने उसे बताया कि उस के अब्बू की तबीयत अचानक खराब हो गई है और इसलिए उसे 2 दिन के लिए अपने मायके जाना पड़ेगा.

उस की इस बात पर अब्दुल ने ऐंठ कर कहा कि उस के पास समय नहीं है, इसलिए वह अम्मी के साथ चली जाए.

मुमताज का मायका इसी शहर में था, इसलिए वह अम्मी को ले कर चली गई.

मुमताज और अम्मी के मायके जाने के बाद अब्दुल किसी को मोबाइल पर फोन करने लगा, ''हां सुनो' आज मुमताज और अम्मी दोनों बाहर गई हैं और वह भी पूरे 2 दिन के लिए' ऐसा करो, तुम अभी आ जाओ' हम दोनों खूब जम कर मस्ती करेंगे' और हां, अपने हाथ की बनी बिरयानी जरूर लाना''

कुछ देर बाद ही अब्दुल के घर पर कोई औरत आ गई, जिसे अब्दुल ने अपनी बांहों में भर लिया और उस के पूरे जिस्म को चूमने लगा.

''अरे, इतनी भी क्या जल्दी है' पहले बिरयानी तो खा लो'' उस औरत ने कहा.

''जिस की आंखों के सामने तुम्हारे जैसी लाजवाब गोश्त वाली हूर हो, वह भला ये बिरयानी क्यों खाएगा'' यह कहने के साथ ही अब्दुल ने उस औरत के कपड़ों को उतारना शुरू कर दिया और कुछ ही देर में वे दोनों एकदूसरे में समा जाने की पुरजोर कोशिश कर रहे थे. अब्दुल ने उस औरत के साथ कई बार अपनी प्यास बु ?ाई.

''तुम्हें मुझे में ऐसा क्या दिख गया, जो तुम ने मु ?ो अपना जिस्म सौंप दिया?'' अब्दुल ने उस औरत से सवाल किया.

''मेरे शौहर दिनभर मेहनत कर के आते हैं और जल्दी ही सो जाते हैं,'' उस औरत ने बेशर्मी से हंसते हुए कहा.

अब्दुल उस औरत के इश्क में डूबउतर ही रहा था कि अचानक से दरवाजे की घंटी बजी, तो अब्दुल चौंक गया, ''भला इस समय कौन हो सकता है?''

अब्दुल ने एक चादर अपने बदन पर डाली और दरवाजा खोला, तो सामने मुमताज को देख कर चौंक गया, ''तुम' पर, तुम तो 2 दिन के लिए गई थीं न, आज तो पहला दिन ही हुआ है.''

''पर, तुम हमें देख कर परेशान क्यों हो रहे हो' जरा अंदर तो आने दो.''

तभी अंदर से आवाज आई, ''अरे क्या हुआ जानू, कौन है जो हमारा मजा खराब कर रहा है?''

''मैं बताती हूं कि कौन है''' इतना कह कर मुमताज अंदर चली गई. अंदर कमरे में बिस्तर पर और कोई नहीं, बल्कि मिसेज खान लेटी हुई थीं.

मिसेज खान के ऊपर के शरीर पर एक भी कपड़ा नहीं था. मुमताज को सामने देख कर वे चौंक गई थीं और जल्दबाजी में कपड़े पहनने लगीं.

''तो तुम ही हो, मेरे शौहर के बिजी होने की वजह. तुम्हें मेरा घर तोड़ते हुए शर्म नहीं आई''' यह कहते हुए मुमताज ने अपना मोबाइल निकाल लिया था और मिसेज खान की वीडियो क्लिप बनाने लगी.

''अच्छा हुआ जो तुम सब जान गई हो' अब्दुल, तुम देख क्या रहे हो' पकड़ो इस को और मिट्टी का तेल डाल कर आग लगा दो इस के बदन में' अब हमें इस का भी वही हाल करना पड़ेगा, जो हम ने तुम्हारी पहली बीवी का किया था,'' मिसेज खान की यह बात सुन कर चौंक गई थी मुमताज.

''तो तुम क्या सोच रही हो कि मेरी पहली बीवी पागल थी. नहीं, वह तो तुम से भी ज्यादा खूबसूरत थी. बस, उस की गलती यही थी कि उस ने हमें रंगरलियां मनाते हुए देख लिया था''

मुमताज के हाथों में मोबाइल का कैमरा अब भी सबकुछ रिकौर्ड कर रहा था.

तभी अब्दुल ने एक डंडा मुमताज के सिर पर दे मारा. मुमताज की आंखों के सामने अंधेरा छा गया और वह फर्श पर बेहोश हो कर गिर गई.

मुमताज को कितनी देर बाद होश आया था उसे याद नहीं, पर जब होश आया तो उस ने अपनेआप को बिस्तर पर पाया और आंखों के सामने अम्मी थीं.

अम्मी उसे देख कर मुसकरा उठीं, ''अब चिंता की कोई बात नहीं है मुमताज. भले ही तुम मेरी बहू हो, पर मेरे लिए अब्दुल से बढ़ कर हो' अब्दुल और उस चुड़ैल को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है.''

''पर अम्मी, वे लोग तो मु ?ो मार कर जलाने जा रहे थे, फिर आप यहां कैसे पहुंच गईं?'' मुमताज ने पूछा.

''मुमताज, अब्दुल ने अपनी पहली बीवी को मार कर मु ?ो ?ाठी कहानियां सुनाई थीं और मु ?ो भी उस की बातों पर यकीन हो गया था, पर तु ?ा से निकाह करने के बाद भी उस ने तुम में बेरुखी ही दिखाई, तभी मेरी पारखी आंखों ने अब्दुल के बदलते मिजाज को भांप लिया था, पर मिसेज खान ही मेरे बेटे को अपने कब्जे में कर के अपना मुंह काला करेंगी, यह मैं ने ख्वाब में भी नहीं सोचा था.''

''पर अम्मी, मिसेज खान तो शादीशुदा हैं और फिर उन के शौहर शहर के एक अच्छे डाक्टर हैं, फिर उन्होंने अब्दुल के साथ ऐसा क्यों किया?'' मुमताज ने पूछा.

''क्या बताऊं मुमताज, अगर औरत अपने जमीर को ऊंचा उठाती है, तो वह आसमां की बुलंदियों को छू लेती है. वह अच्छी मां बनती है, अच्छी बहन बनती है और अच्छी बीवी भी बनती है और अगर वह नीचे गिरती है, तो गड्ढे में गिरती ही चली जाती है और मिसेज खान बन जाती है''' औरत का एक रूप यह भी होता है।

दुबई में क्यों सस्ता है गोल्ड, कितना सोना लाने पर नहीं देना शुल्क...

परिवहन विशेष न्यूज

बहुत से लोग सोने के दुबई से गहने या आभूषण खरीदना पसंद करते हैं। इसकी वजह है कि वहां सोने का भाव भारत के मुकाबले सस्ता है . लेकिन कभी आपने सोचा है कि ऐसा क्यों है? आइए जानते हैं कि आप दुबई से कितना सोना बिना किसी कस्टम ड्यूटी के ला सकते हैं। दुबई से सोना लाने के लिए क्या-क्या कायदे-कानून है।

नई दिल्ली। इन दिनों कन्नड़ अभिनेत्री रान्या राव का गोल्ड स्मगलिंग का मामला काफी चर्चा में है। रान्या तकरीबन 14.2 किलोग्राम सोने की तस्करी करते हुए बेंगलुरु एयरपोर्ट पर पकड़ी गई थी। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, रान्या हर 15 दिनों के भीतर दुबई का चक्कर लगाती रहती थी। रान्या अभिनेत्री होने के साथ-साथ एक सीनियर आईपीएस ऑफिसर की बेटी भी हैं। यह दुबई से सोने की तस्करी का कोई पहला मामला नहीं है। इससे पहले भी दुबई से चोरी-छिपे सोना लाने के कई मामले आ चुके हैं। आइए जानते हैं कि दुबई से इतना ज्यादा सोने की स्मगलिंग की क्यों होती है।

दुबई से गोल्ड स्मगलिंग की बड़ी वजहें?

दुबई से गोल्ड स्मगलिंग ज्यादा होने की वजह है, वहां सोने का सस्ता होना। दुबई में सोना की कीमत कम होने की कई वजहें हैं। अगर आप दुबई से सोना खरीदते हैं, तो आपको काफी कम कीमत पर सोना मिल जाएगा। इसकी वजह है कि दुबई में सोना खरीदने पर कोई टैक्स नहीं लगता। इसकी वजह से लोगों को दुबई में काफी कम दाम पर सोना मिल जाता है। वहां सोने की खरीदारी पर कोई भी इंपोर्ट ड्यूटी यानी आयात शुल्क नहीं देना पड़ता।

इसका तीसरा कारण, दुबई में सोने बेचने वालों की आधिक मात्रा है. दुबई में सोना बेचने वालों की संख्या काफी आधिक है। यही वजह है कि आपको यहां सोना काफी कम कीमत पर मिल जाता है। इसके अलावा अगर आप दुबई का इतिहास भी देखें तो, यह जगह अपने बेहतरीन सोने की क्वालिटी के लिए काफी प्रसिद्ध है।

कितना लाया जा सकता है कस्टम ड्यूटी फ्री सोना ?

पुरुष यात्री दुबई से कम से कम 20 ग्राम सोना बिना किसी कस्टम ड्यूटी के ला सकते हैं। इसकी कीमत 50 हजार रुपये तक होनी चाहिए. वहीं महिलाओं को 40 ग्राम सोना तक लाने की अनुमति है। इसकी कीमत 1 लाख रुपये से आधिक ना हो। 15 साल से कम उम्र के बच्चों को भी 40 ग्राम सोना लाने की छूट है, लेकिन रिलेशनशिप प्रमाणित करना जरूरी होगा। भारत में केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (CBIC) ने सोना लाने पर शुल्क निर्धारित कर रखा है। अगर आप शुल्क चुका देते हैं, तो फिर चाहे जितना गोल्ड खरीदकर ला सकते हैं।

कितना है भारत और दुबई में सोने का दाम?

आज मंगलवार (11 मार्च) को भारत में 24 कैरेट सोने का दाम 87,490 प्रति 10 ग्राम है। वहीं अगर दुबई की बात करें तो आज दुबई में 24 कैरेट सोने की कीमत 3497.50 यूएई दिरहम है। इसकी भारतीय कीमत 83,211 रुपये है. इसका मतलब है कि भारत के मुकाबले में दुबई में सोना 4,279 रुपये सस्ता है। यानी गोल्ड स्मगलर अगर एक किलो सोना लाते हैं, तो उन्हें 4.27 लाख रुपये का सीधा फायदा होगा।

ट्रंप के टैरिफ युद्ध से वैश्विक बाजार में मंदी की आशंका, वॉल स्ट्रीट में बड़े पैमाने पर हुई बिकवाली

परिवहन विशेष न्यूज

न्यूयॉर्क में नैस्डैक में साल 2022 के बाद सबसे बड़ी गिरावट देखी गई। वहीं एस एंड पी 500, जो अमेरिका की सबसे बड़ी कंपनियों को ट्रैक करता है, वह भी फरवरी में सबसे उच्च स्तर पर पहुंचने के बाद से आठ प्रतिशत तक गिर गया है।

नई दिल्ली। अमेरिका सहित पूरी दुनिया के शेयर बाजारों में गिरावट का दौर जारी है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सभी देशों पर पारस्परिक टैरिफ लगाने के एलान के बाद से पूरी दुनिया के शेयर बाजारों में आशंकाओं का दौर जारी है और अब वैश्विक बाजारों में मंदी की आशंका गहरा गई है। निवेशकों को डर सता रहा है कि ट्रंप द्वारा मेक्सिको, कनाडा और चीन पर टैरिफ लगाने से व्यापार नीति में उतार-चढ़ाव आ सकते हैं और इससे उपभोक्ता मांग और कॉरपोरेट निवेश को झटका लग सकता है। न्यूयॉर्क में नैस्डैक में साल 2022 के बाद सबसे बड़ी गिरावट देखी गई। वहीं एसएंडपी 500, जो अमेरिका की सबसे बड़ी कंपनियों को ट्रैक करता है, वह भी फरवरी में सबसे उच्च स्तर पर पहुंचने के बाद से आठ प्रतिशत तक गिर गया है। बाजार में जारी उठा-पटक को लेकर राष्ट्रपति ट्रंप ने भले ही अभी तक कुछ नहीं कहा है, लेकिन ट्रंप प्रशासन के अधिकारी और सलाहकार निवेशकों के डर को शांत करने में जुट गए हैं।

डाउ जोंस में 1,000 से अधिक अंकों की गिरावट

अमेरिकी शेयर बाजारों में सोमवार को भारी गिरावट आई, क्योंकि अमेरिका में आर्थिक चिंताएं बढ़ रही हैं और राष्ट्रपति ट्रंप ने मंदी की संभावना से इनकार नहीं किया। निवेशकों को चिंता है कि ट्रंप की आक्रामक व्यापार नीतियों की वजह से मंदी आ सकती है। दोपहर के कारोबार में 1,000 से अधिक अंक गिरने के बाद, डाउ जोंस इंडस्ट्रियल एवरेज 890 अंक या 2.1% की गिरावट के साथ 41,912 पर बंद हुआ। चीन के साथ अमेरिका का व्यापार युद्ध सोमवार को और गरमा गया, जब बीजिंग ने अमेरिकी कृषि उत्पादों पर जवाबी टैरिफ लागू करना शुरू कर दिया, जिसके लिए चीन सबसे बड़ा बाजार है। इसमें अमेरिकी चिकन, गेहूं और मक्का पर 15% शुल्क, साथ ही सोयाबीन, पोर्क, बीफ और फलों पर 10% कर शामिल है। कनाडा के सबसे अधिक आबादी वाले प्रांत ओन्टारियो ने भी सोमवार को कहा कि वह अमेरिका को भेजे जाने वाले सभी बिजली निर्यातों पर 25% अधिभार जोड़ रहा है, जो कि कनाडाई उत्पादों पर व्हाइट हाउस के टैरिफ के प्रति अमेरिका की प्रतिक्रिया का हिस्सा है।

नैस्डैक को लगा झटका

एसएंडपी 500 2.7% या 187 अंक गिरकर 5,615 पर आ गया, जो इस साल का सबसे खराब दिन था, साथ ही यह सितंबर के बाद से सबसे निचला स्तर है। पिछले सप्ताह एसएंडपी में 3.1% की गिरावट आई, जो सितंबर के बाद से इसका सबसे खराब साप्ताहिक प्रदर्शन था। तकनीक-प्रधान नैस्डैक को और भी बड़ा झटका लगा, पिछले हफ्ते सुधार के बाद नैस्डैक में 728 अंक या 4% की गिरावट आई। टेस्ला के शेयरों में 15% से ज़्यादा की गिरावट आई, और अल्फाबेट, एप्पल और एनवीडिया के शेयरों में भी लगभग 5% की गिरावट आई।

अमेरिकी शेयर बाजार में हाहाकार क्यों मचा; बड़े शेयर क्यों गिर रहे, भारत पर क्या असर? जानिए सबकुछ

परिवहन विशेष न्यूज

सोमवार को अमेरिकी शेयरों में भारी गिरावट दिखी। इस कारण अमेरिका का अपने व्यापारिक साझेदारों के साथ टैरिफ विवाद और सरकारी नीतियों में अनिश्चितता रही। बाजार के गिरावट में शेयरों के उच्च मूल्यांकन, आर्थिक अनिश्चितता और कंपनियों की निराशाजनक आय ने भी नकारात्मक भूमिका निभाई। टेस्ला जैसे प्रौद्योगिकी शेयरों को भी भारी नुकसान का सामना करना पड़ा। बाजार में आई गिरावट के कारण क्या हैं? कौन-कौन से बड़े शेयर टूटे हैं? भारतीय निवेशकों पर गिरावट का क्या असर पड़ेगा? जानने के लिए आगे पढ़ें।

नई दिल्ली। सोमवार को अमेरिकी शेयर बाजार बुरी तरह फिसल गए। टैरिफ विवाद और संघीय सरकार के नीतियों की अनिश्चितता ने मंदी की आशंकाओं को हवा दे दी है। पिछले सप्ताह की तेज बिकवाली इस हफ्ते भी जारी रही। तीनों प्रमुख सूचकांक भारी गिरावट के शिकार हो गए। एसएंडपी 500 अब 19 फरवरी के अपने सर्वकालिक उच्च स्तर से 8% से अधिक नीचे है। वहीं नैस्डैक कंपोजिट दिसंबर के अपने शिखर से 10% से अधिक गिर चुका है। बाजार में आर्थिक अनिश्चितता, संभावित मंदी की आशंका और बढ़ते व्यापार तनाव ने बिकवाली का माहौल बनाया है जिससे निवेशकों को खरबों डॉलर का नुकसान उठाना पड़ा है।

बाजार में आई गिरावट के कारण क्या हैं? कौन-कौन से बड़े शेयर टूटे हैं? भारतीय निवेशकों पर गिरावट का क्या असर पड़ेगा, जानिए सबकुछ

1. अमेरिकी बाजार को अब तक कितना नुकसान हुआ है?

सोमवार को डाउ जोन्स इंडस्ट्रियल एवरेज 890 अंक या 2.1% की गिरावट के साथ 41,912 पर बंद हुआ। एसएंडपी 500 2.7% या 187 अंक गिरकर 5,615 पर आ गया। इसके साथ ही यह कारोबार के लिहाज से इस साल का सबसे खराब कारोबारी सत्र रहा। पिछले सप्ताह एसएंडपी में 3.1% की गिरावट आई, जो सितंबर के बाद से इसका सबसे खराब साप्ताहिक प्रदर्शन था। तकनीक शेयर प्रधान नैस्डैक को और झटका लगा, पिछले हफ्ते सुधार के बाद सोमवार को इसमें 728 अंक या 4% की गिरावट आई।

2. अमेरिकी बाजार में बिकवाली का क्या कारण है?

हालिया बिकवाली के कई कारण हैं। इनमें व्यापार नीति को लेकर अनिश्चितता, संभावित मंदी का डर और ऊंचे स्टॉक मूल्यांकन से जुड़ी चिंताएं शामिल हैं। लाजार्ड के सीईओ पीटर ऑर्सजैग के अनुसार ₹कनाडा, मेक्सिको और यूरोप के साथ टैरिफ विवाद के कारण जो अनिश्चितता पैदा हुई है, वह बोर्ड्स और सी-सूट्स को अपने आगे के रास्ते पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर कर रही है।₹

3. किन शेयरों को सबसे अधिक नुकसान हुआ है?

प्रौद्योगिकी शेयरों को सबसे अधिक नुकसान हुआ है। टेस्ला ने एक ही दिन में 125 बिलियन डॉलर का मूल्य खो दिया। इसके शेयरों में 15% से ज्यादा की गिरावट आई। जबकि अल्फाबेट, एप्पल और एनवीडिया के शेयरों में सभी में लगभग 5% की गिरावट दर्ज की गई। S&P 500 के प्रौद्योगिकी क्षेत्र में कुल मिलाकर 4.3% की गिरावट आई। इस बीच, डेल्टा एयरलाइन्स के शेयर में 14% की गिरावट आई। कंपनी ने अपनी पहली तिमाही के लाभ अनुमानों को घटाकर आधा कर दिया है, जिससके इसके शेयरों में गिरावट दिखी।

4. क्या निवेशक मंदी को लेकर चिंतित हैं?

हां, संभावित मंदी को लेकर निवेशकों की चिंताएं बढ़ गई हैं। रविवार को साक्षात्कार में, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मौजूदा स्थिति को ₹संक्रमण काल₹ बताया और मंदी की संभावना को खारिज नहीं किया। इसके बाद बाजार में निवेशकों की आशंका और बढ़ गई। जब फॉक्स न्यूज के ₹संडे मॉर्निंग फ्यूचर्स विद मारिया बार्टिरोमो₹ ट्रंप से पूछा गया कि क्या उन्हें इस साल मंदी की आशंका है, तो ट्रंप ने जवाब दिया, ₹मुझे ऐसी चीजों की भविष्यवाणी करना पसंद नहीं है। यह एक संक्रमण काल है क्योंकि हम जो कर रहे हैं वह बहुत बड़ा है।₹ बेयर्ड के निवेश रणनीतिकार रॉस मेफील्ड ने कहा, ₹ट्रम्प प्रशासन इस विचार को नहीं नकार रहा कि बाजार में गिरावट आ सकती है।

5. व्हाइट हाउस ने बाजार में उथल-पुथल पर क्या प्रतिक्रिया दी है?

हालांकि, व्हाइट हाउस ने मंदी की आशंकाओं पर अपना पक्ष रखा है। प्रशासन की ओर से कहा गया है कि बाजार में गिरावट के बावजूद अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है। नेशनल इकोनॉमिक काउंसिल के प्रमुख केविन हैसेट ने कहा, ₹अर्थव्यवस्था के भविष्य को लेकर बहुत आशावादी होने के कई कारण हैं। लेकिन निश्चित रूप से, इस तिमाही में, डेटा में कुछ कमियां हैं।₹ उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि टैरिफ के बारे में अनिश्चितता जल्द ही हल हो जाएगी, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कर कटौती से निवेश और वास्तविक वेतन को बढ़ावा मिलेगा। हालांकि, निवेशक संशय में हैं, क्योंकि बाजार में चल रही अस्थिरता व्यापक चिंताओं को दर्शाती है।

6. अमेरिकी शेयर बाजार में गिरावट का भारतीय बाजार पर क्या असर?

अमेरिका शेयर बाजार में गिरावट और वहां की अर्थव्यवस्था में आई कोई भी मंदी भारतीय बाजार पर अपना असर छोड़ेगी। भारतीय बाजार पहले से ही वैश्विक अनिश्चितता और विदेशी निवेशकों की भारी बिकवाली के कारण दबाव में है। ट्रंप की टैरिफ नीतियों ने आर्थिक विकास के बारे में अनिश्चितता को और बढ़ा दिया है। जिससे विदेशी पूंजी निकासी और भी तेज हो सकती है। विशेषज्ञ निवेशकों को घरेलू उपभोग से जुड़े शेयरों पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दे रहे हैं, क्योंकि आईटी और फार्मा जैसे निर्यात-उन्मुख क्षेत्रों में भारी अस्थिरता देखने को मिल सकती है। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वीके विजयकुमार ने कहा, ₹निवेशक घरेलू उपभोग से जुड़े शेयरों पर ध्यान केंद्रित करके खुद को सुरक्षित कर सकते हैं। ये संभावित टैरिफ वॉर से प्रभावित नहीं होंगे। आईटी और फार्मा जैसे निर्यात-उन्मुख क्षेत्रों पर अमेरिकी कार्रवाइयों से अस्थिरता आ सकती है।"

7. अब निवेशकों को बाजार में कौन सी रणनीति अपनानी चाहिए?

निवेशक बाजार से जुड़े कई प्रमुख कारकों पर नजर बनाए हुए हैं। इसमें महंगाई से जुड़ी रिपोर्ट, फेडरल रिजर्व के ब्याज दर पर फैसले और अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिए संभावित सरकारी उपाय शामिल हैं। निवेशकों के विश्वास में और गिरावट बाजारों को और भी नीचे धकेल सकती है। एजे बेल के एक निवेश विश्लेषक डैन कोट्सवर्थ के अनुसार निवेशक अमेरिकी इक्विटी के ऊंचे मूल्यांकन से चिंतित हैं। बाजार में सुधार के लिए वे एक सही मौके की तलाश कर रहे हैं।₹ बाजार में अस्थिरता के बीच निवेशकों को सतर्क रहना चाहिए और जोखिम को प्रबंधित करने के लिए अलग-अलग रणनीतियों पर बागे बढ़ना चाहिए।

'उपभोक्ता निकायों के सदस्यों को तत्काल वेतन और सुविधाएं दें'

परिवहन विशेष न्यूज

सुप्रीम कोर्ट ने सभी राज्य सरकारों को राज्य और जिला उपभोक्ता निवारण निकायों के अध्यक्षों और सदस्यों को मौजूदा नियमों के अनुसार वेतन और अन्य भत्तों का तत्काल भुगतान करने को कहा है। आइए इस बारे में विस्तार से जानें।

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सभी राज्य सरकारों को राज्य और जिला उपभोक्ता निवारण निकायों के अध्यक्षों और सदस्यों को मौजूदा नियमों के अनुसार वेतन और अन्य भत्तों का तत्काल भुगतान करने को कहा है। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने केंद्र को भी उपभोक्ता संरक्षण (राज्य आयोग और जिला आयोग के अध्यक्ष और सदस्यों के वेतन, भत्ते और सेवा की शर्तें) मॉडल नियम, 2020 में संशोधन करने पर भी विचार करने का निर्देश दिया।

बिना पूर्वाग्रह रखें सुविधाएं मुहैया कराएं राज्य: कोर्ट

पीठ ने कहा, ₹हम सभी राज्य सरकारों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश देते हैं कि इन मामलों में उठाए गए विभिन्न विवादों पर कोई पूर्वाग्रह रखे बिना, राज्य के मौजूदा नियमों के अनुसार अध्यक्षों/सदस्यों को वेतन और सुविधाएं तत्काल दें।₹ अदालत के इस निर्देश से राज्यों के उपभोक्ता निकायों में काम करने वाले कर्मचारियों को बड़ी राहत मिलने की संभावना है।

शीर्ष अदालत ने वेतन व सेवा शर्तों से जुड़ी याचिका पर सुनवाई के दौरान दिए निर्देश

अदालत ने कहा कि यदि भारत सरकार की ओर से संभावित संशोधन पर कोई निर्णय नहीं लिया जाता है, तो वह ₹संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत शक्ति का प्रयोग करने पर विचार करेगी।₹ शीर्ष अदालत ने 5 मार्च के आदेश में कहा, ₹यदि राज्य सरकारों की ओर से अनुपालन नहीं किया जाता है, तो संबंधित पक्ष जानकार न्यायमित्र को इस आशय का एक नोट सौंपने के लिए स्वतंत्र हैं ताकि अदालत उचित आदेश पारित कर सके।₹ पीठ ने उपभोक्ता मंच के सदस्यों के वेतन और सेवा शर्तों से संबंधित याचिका पर सुनवाई करते हुए ये निर्देश दिए।

परिवहन विधेयक पर मुहर, अंग्रेजों के जमाने के 1856 के कानून की जगह लेगा बिल

परिवहन विशेष न्यूज

विधायी थिंक-टैंक पीआरएस लेजिस्लेटिव के अनुसार, बिल ऑफ लैडिंग ऐसा दस्तावेज है, जो मालवाहक की ओर से शिपर को जारी किया जाता है। इसमें ले जाए जा रहे माल के प्रकार, मात्रा, स्थिति और गंतव्य जैसे विवरण होते हैं।

नई दिल्ली। पोत परिवहन क्षेत्र में व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों को बढ़ाने से जुड़े वहन पत्र (बिल ऑफ लैडिंग) विधेयक को लोकसभा की मंजूरी मिल गई। यह बिल वर्ष 1856 के वहन पत्र कानून की जगह लेगा। केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने दावा किया कि बिल में शामिल प्रावधानों के कारण यह भविष्य में पोत परिवहन के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव का कारण बनेगा।

विधायी थिंक-टैंक का तर्क

विधायी थिंक-टैंक पीआरएस लेजिस्लेटिव के अनुसार, बिल ऑफ लैडिंग ऐसा दस्तावेज है, जो मालवाहक की ओर से शिपर को जारी किया जाता है। इसमें ले जाए जा रहे माल के प्रकार, मात्रा, स्थिति और गंतव्य जैसे विवरण होते हैं। बिल पर हुई चर्चा का जवाब देते हुए सोनोवाल ने कहा कि पोत परिवहन आर्थिक समृद्धि के लिए बेहद अहम है।

इससे जुड़े सदियों पुराने ब्रिटिश कानून के कारण इस क्षेत्र में तेजी से विकास का रोडमैप तैयार करना मुश्किल था। मोदी सरकार विकसित भारत के निर्माण के लिए पोत परिवहन क्षेत्र के महत्व को समझती है। यही कारण है कि समय के अनुरूप इसमें जरूरी बदलाव लाने के लिए यह विधेयक लाया गया है। उन्होंने कहा कि एक स्वतंत्र लोकतांत्रिक आधुनिक देश होने के नाते और सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के नाते यह जरूरी है कि हमारे कानूनों में हमारी अस्मिता झलके और औपनिवेशिक मानसिकता नहीं हो, यह विधेयक इसी दिशा में सरकार का प्रयास है।

तरक्की के लिए बढ़ानी होगी जहाजों की संख्या

लक्षद्वीप के कांग्रेस सांसद मो. हमीदुल्ला सईद ने इस क्षेत्र में आगे बढ़ने और तरक्की के लिए जहाजों की संख्या बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड, शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया और लक्षद्वीप प्रशासन को निर्देश दें कि वे समन्वय करके केंद्रशासित प्रदेश में व्यापार सुगमता और लोगों के परिवहन की सुगमता पर ध्यान दें। भाजपा के विभू प्रसाद तराई ने पोत परिवहन क्षेत्र में नियमों के सरलीकरण के लिए विधेयक लाने जाने पर सरकार की प्रशंसा की।

हालांकि विपक्ष के कुछ सांसदों ने इसे सहकारी संघवाद के खिलाफ बताया। टीएमसी की प्रतिमा मंडल ने आरोप लगाया कि यह विधेयक छोटे कारोबारियों की जगह बड़े कारोबारियों के हितों का संरक्षण करने वाला है। उन्होंने विधेयक में मालवाहक शुल्क को विनियमित नहीं करने की आलोचना की।

इंडसइंड बैंक का शेयर 25% तक गिरकर 52 सप्ताह के निचले स्तर पर, जानिए क्या है इस बड़ी गिरावट का कारण

परिवहन विशेष न्यूज

एनएसई पर मंगलवार को इंडसइंड बैंक के शेयरों का भाव दोपहर 01 बजकर 45 मिनट पर 226 .90 रुपये या 25 .20% गिरकर 673 .60 रुपये प्रति शेयर पर आ गया। बैंक के शेयरों के लिए यह भाव 52 हफ्ते का न्यूनतम स्तर भी है। निजी क्षेत्र के बैंकों में आई इस बड़ी गिरावट का क्या कारण है, आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। इंडसइंड बैंक के शेयरों में लगातार पांचवें दिन गिरावट दिखी। मंगलवार को सुबह के कारोबार में बैंक के शेयर 25% से ज्यादा टूट गए। निजी क्षेत्र के इस बैंक ने अपने डेरिवेटिव पोर्टफोलियो में कुछ विसंगतियां होने की सूचना दी है।

एनएसई पर मंगलवार को इंडसइंड बैंक के शेयरों का भाव दोपहर 01 बजकर 45 मिनट पर 226.90 रुपये या 25.20% गिरकर 673.60 रुपये प्रति शेयर पर आ गया। बैंक के शेयरों के लिए यह भाव 52 हफ्ते का न्यूनतम स्तर भी है। वहीं, बंबई स्टॉक एक्सचेंज पर पर कंपनी का शेयर 227.70 रुपये यानी 25.28% गिरकर 673.00 रुपये प्रति शेयर पर आ गया। 30 शेयरों वाले बीएसई सेंसेक्स में यह शेयर सबसे अधिक गिरा।

दोपहर के सत्र में बाजार में सपाट ढंग से कारोबार होता दिखा। बाजार के बेंचमार्क सूचकांक लाल निशान पर पहुंच गए हैं। बीएसई सेंसेक्स 36.65 (0.04%) अंक गिरकर 74,096.50 पर है। वहीं, एनएसई का निफ्टी 19.50 (0.09%) अंक गिरकर 22,479.80 पर आ गया। सोमवार को नियामकीय फाइलिंग में इंडसइंड बैंक ने कहा कि डेरिवेटिव पोर्टफोलियो से संबंधित प्रक्रियाओं की आंतरिक समीक्षा के दौरान, उसे खातों के शेष में कुछ गड़बड़ियां दिखी हैं।

मुंबई स्थित इंडसइंड बैंक ने एक बयान में कहा कि उसकी विस्तृत आंतरिक समीक्षा में दिसंबर 2024 तक बैंक की निवल संपत्ति पर लगभग 2.35 प्रतिशत प्रतिकूल प्रभाव पड़ने का अनुमान है। यह समीक्षा, ऋणदाताओं के निवेश पोर्टफोलियो पर आरबीआई की ओर से सितंबर 2023 में जारी निर्देशों के बाद की गई। यह निर्देश पोर्टफोलियो के 'अन्य परिसंपत्ति और अन्य देयता' खातों से संबंधित थे। विशेषज्ञों के अनुसार, इससे इंडसइंड बैंक की नेट वर्थ पर 1,500 करोड़ रुपये का असर पड़ सकता है।

इस खुलासे के बाद, इंडसइंड बैंक ने एक एनालिस्ट कॉल का आयोजन किया और कहा कि एक बाहरी लेखा परीक्षक मामले की जांच कर रहा है, जिसकी रिपोर्ट मार्च 2025 के अंत तक आने की उम्मीद है। हालांकि, इंडसइंड बैंक ने स्पष्ट किया कि लाभप्रदता और पूंजी की उपलब्धता इस एकमुश्त प्रतिकूल प्रभाव को झेलने में सक्षम है। सोमवार को इंडसइंड बैंक के शेयरों में लगभग चार प्रतिशत की गिरावट आई। यह गिरावट भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की ओर से निजी क्षेत्र बैंक के मौजूदा सीईओ का कार्यकाल तीन साल के बजाय एक साल के लिए बढ़ाने के निर्णय के बाद आई थी।

"नई सोच" के साथ समाज सेवा की अनूठी पहल

डॉ. अंकुर शरण

ग्लोबल कॉन्फेडरेशन ऑफ एनजीओज़ द्वारा समाज सेवा में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित 'नई सोच' एनजीओ की संस्थापक ऋतु सिंह ने अपने अनोखे प्रयासों से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य किया है। उनकी पहल न केवल कपड़ा अपशिष्ट (कट्रन) के पुनर्चक्रण से पर्यावरण को बचाने की दिशा में एक बड़ा कदम है, बल्कि उनके द्वारा तैयार वस्त्र और बैग ज़रूरतमंदों तक भी पहुँचाए जाते हैं।

इस खास बातचीत में, डॉ. अंकुर शरण ऋतु सिंह से उनकी प्रेरणा, उनके कार्यों और भविष्य की योजनाओं के बारे में चर्चा कर रहे हैं।

डॉ. अंकुर शरण: नमस्कार ऋतु जी, सबसे पहले आपको ग्लोबल कॉन्फेडरेशन ऑफ एनजीओज़ द्वारा दिए गए इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए बधाई। यह आपके वर्षों के प्रयासों की सराहना का प्रतीक है। कैसा महसूस कर रही हैं आप?

ऋतु सिंह: नमस्कार, बहुत-बहुत धन्यवाद! यह पुरस्कार मेरे लिए बेहद खास है क्योंकि यह मेरे छोटे लेकिन निरंतर प्रयासों की मान्यता देता है। यह सम्मान मुझे और प्रेरित करता है कि मैं समाज के लिए और अधिक कार्य करूँ और पर्यावरण को कट्रन (टेक्सटाइल वेस्ट) से बचाने की दिशा में और मजबूत कदम उठाऊँ।

डॉ. अंकुर शरण: आपकी नई सोच एनजीओ पिछले आठ वर्षों से कट्रन से कपड़े और बैग बनाने और उन्हें जरूरतमंदों तक पहुँचाने का कार्य कर रही है। इस विचार की शुरुआत कैसे हुई?

ऋतु सिंह: जब मैंने देखा कि बुटीक, सड़क किनारे के दर्जी और फैशन इंडस्ट्री में भारी मात्रा में कपड़े का वेस्ट बचता है, जो सीधे कचरे में चला जाता है, तो मुझे लगा कि इसका बेहतर उपयोग किया जा सकता है। मुझे सिलाई-कढ़ाई का ज्ञान था, इसलिए मैंने इन कट्रन से कपड़े और बैग बनाना शुरू किया। धीरे-धीरे यह एक मिशन बन गया और हमने यह वस्त्र गुरुकुल, अनाथालयों और वृद्धाश्रमों में वितरित करने शुरू किए।

डॉ. अंकुर शरण: आपने हाल ही में निरंजनी अखाड़ा (कुंभ) के लिए भी बैग बनाए हैं। इस पहल के बारे में कुछ बताइए।

ऋतु सिंह: कुंभ मेला आस्था का एक बड़ा केंद्र है और वहाँ लाखों श्रद्धालु आते हैं। मेरी सोच थी कि वहाँ जाने वाले संतों और भक्तों को एक पर्यावरण-अनुकूल बैग दिया जाए, जिससे प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग कम हो। इसलिए, मैंने अपनी टीम के साथ मिलकर निरंजनी अखाड़ा के लिए विशेष बैग बनाए, जो पूरी तरह से पुनर्नवीनीकरण कट्रन से बने थे।

डॉ. अंकुर शरण: आपकी एक और अनोखी पहल है – लड़कियों को तलवारबाज़ी (Sword Fighting) सिखाना। यह आइडिया कैसे आया?

ऋतु सिंह: आत्मरक्षा हर लड़की के लिए बेहद ज़रूरी है। तलवारबाज़ी न केवल एक कला है, बल्कि यह आत्मविश्वास भी बढ़ाती है और महिलाओं को सशक्त बनाती है। हमारे समाज में आज भी कई लड़कियाँ खुद को असुरक्षित महसूस करती हैं, इसलिए मैंने यह सुनिश्चित किया कि उन्हें यह कौशल सिखाया जाए। यह उनके आत्मबल को बढ़ाता है और समाज में उनकी स्थिति को और मजबूत करता है।

डॉ. अंकुर शरण: टेक्सटाइल इंडस्ट्री विश्व की दूसरी सबसे बड़ी प्रदूषणकारी इंडस्ट्री मानी जाती है। आप इस दिशा में क्या समाधान देखती हैं?

ऋतु सिंह: हमें अधिक सतत फैशन (Sustainable Fashion) की ओर बढ़ना होगा। फास्ट फैशन के कारण कपड़ों की बर्बादी बहुत ज्यादा बढ़ गई है। मेरा मानना है कि हमें कपड़े पुनः उपयोग में लाने, कट्रन से नए उत्पाद बनाने और लोगों को इसके प्रति जागरूक करने पर ज़ोर देना चाहिए। साथ ही, हमें ज्यादा से ज्यादा अपसाइक्लिंग (Upcycling) को बढ़ावा देना चाहिए ताकि टेक्सटाइल वेस्ट को कम किया जा सके।

डॉ. अंकुर शरण: आपकी भविष्य की क्या योजनाएँ हैं?

ऋतु सिंह: मैं चाहती हूँ कि इस पहल को देशभर में फैलाया जाए। अधिक महिलाओं और युवाओं को इससे जोड़ा जाए ताकि यह एक बड़ा सामाजिक अभियान बन सके। साथ ही, मैं टेक्सटाइल इंडस्ट्री के बड़े नामों को भी इसमें शामिल करना चाहती हूँ ताकि अधिक संगठित प्रयासों के साथ पर्यावरण संरक्षण किया जा सके।

डॉ. अंकुर शरण: आपकी नई सोच एनजीओ के माध्यम से समाज के लिए किए गए कार्य सराहनीय हैं। क्या कोई संदेश है जो आप युवा पीढ़ी को देना चाहेंगी?

ऋतु सिंह: मैं बस यही कहना चाहूँगी कि हर छोटा कदम बड़ा बदलाव ला सकता है। अगर आपके पास कोई अनूठा विचार है, तो उसे ज़रूर आगे बढ़ाएँ। पर्यावरण और समाज के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी है, और हम सभी को अपनी क्षमता के अनुसार योगदान देना चाहिए।

ऋतु सिंह की कहानी इस बात का प्रमाण है कि नई सोच और सशक्त प्रयास से बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं। उनका मिशन न केवल पर्यावरण को बचाने का एक बेहतरीन उदाहरण है, बल्कि समाज के कमजोर वर्गों के लिए भी एक प्रेरणा है। हमें ऐसे प्रयासों का समर्थन करना चाहिए ताकि रनई सोचर सच में समाज को नई दिशा दे सके।

(डॉ. अंकुर शरण के साथ विशेष साक्षात्कार)

वोटर लिस्ट मामले में राज्यसभा में विपक्ष का हंगामा, नया प्रस्ताव दिया; नियम 176 पर चर्चा कराने की मांग

विपक्ष ने वोटर लिस्ट में कथित हेरफेर और मतदाता फोटो पहचान पत्र का मामला उठाया। नियम 267 के तहत नोटिस खारिज होने के बाद विपक्षी सासंदों ने नियम 176 के तहत चर्चा कराने का प्रस्ताव दिया। टीएमसी सांसद डेरेक ओ-ब्रायन ने कहा कि सदन की कार्यवाही को वह बाधित नहीं करना चाहते है। मगर इपिक का मुद्दा गंभीर है। इस पर सदन में चर्चा करना जरूरी है।

नईदिल्ली। मतदाता फोटो पहचान पत्र (इपिक) और वोटर लिस्ट में कथित हेर-फेर के मुद्दे पर कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस सहित दूसरे विपक्षी दलों ने बुधवार को फिर राज्यसभा में नियम 267 के तहत चर्चा कराने की मांग को लेकर हंगामा किया। बाद में बात बनते न देख विपक्षी दलों ने उपसभापति से नियम 176 के तहत ही इस मुद्दे पर चर्चा कराने का प्रस्ताव दिया। हालांकि इसके बाद भी उपसभापति की ओर से कोई आश्वासन नहीं मिला तो तृणमूल कांग्रेस के सांसदों ने नाराजगी जताते हुए सदन से बहिर्गमन कर गए। बाद में वह सभी एक-एक कर सदन में लौट आए।

नोटिस खारिज होने पर हुआ हंगामा

राज्यसभा में बुधवार को हंगामा उस समय शुरू हुआ, जब इपिक पर नियम 267 के तहत चर्चा कराने के लिए नौ विपक्षी सदस्यों की ओर से दिए गए नोटिस को फिर खारिज कर दिया गया। उपसभापति हरिवंश ने कहा कि इस मुद्दे पर वह पहले ही स्थिति स्पष्ट कर चुके है, ऐसे में विपक्ष सदन की कार्यवाही में अवरोध न डाले।

सदन में चर्चा जरूरी: डेरेक ओ-ब्रायन

इस पर तृणमूल सांसद डेरेक ओ-ब्रायन ने कहा कि सदन की कार्यवाही को वह भी बाधित नहीं करना चाहते है

लेकिन इपिक का मुद्दा इतना गंभीर है कि सदन में इस पर चर्चा जरूरी है। ऐसे में अगले सप्ताह नियम 176 के तहत ही इस मुद्दे पर चर्चा की मौका दिया जाए।

क्या है नियम 176 ?

कांग्रेस सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा कि लोकतंत्र की भावना केवल चुनाव कराने में ही नहीं है, बल्कि चुनाव निष्पक्ष भी रहे इनमें भी है। गौरतलब है कि नियम 176 के तहत कोई भी सांसद सार्वजनिक अपने मुद्दे सदन में उठा सकता है। इसके बाद अन्य सांसद इस मुद्दे पर चर्चा करते हैं। इसके बाद संबंधित मंत्री की ओर से इस पर जवाब दिया जाता है।

इन सांसदों ने दिया नोटिस

इपिक पर चर्चा के लिए नोटिस देने वालों में कांग्रेस के प्रमोद तिवारी व तृणमूल कांग्रेस की सागरिका घोष, डोला सेन, साकेत गोखले और सुष्मिता देव और आप के संजय सिंह शामिल थे। इस दौरान एमडीएमके सांसद वाइको और डीएमके सासंद पी विल्सन ने दक्षिणी राज्यों की परिसीमन से जुड़ी चिंताओं पर चर्चा कराने के लिए नोटिस दिया था।

तृणमूल कांग्रेस पश्चिम बंगाल में एक ही नंबर के इपिक के मामलों को सामने लाते हुए चुनाव आयोग पर लगातार निशाना साध रही है तो कांग्रेस महाराष्ट्र में वोटर लिस्ट में बड़ी संख्या में नाम जोड़े जाने को लेकर सवाल उठा रही है।

बीजद विधायकों ने स्पीकर से मुलाकात कर तारा का निलंबन वापस लेने की मांग की

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: आज बीजद विधायक कांग्रेस विधायक तारा प्रसाद बहिनीपति के समर्थन में उतर आए हैं। विपक्ष के उपनेता प्रसन्ना आचार्य के नेतृत्व में बीजद विधायकों ने विधानसभा अध्यक्ष सुरमा पाढ़ी से मुलाकात की और कांग्रेस विधायक तारा प्रसाद बहिनीपति का निलंबन समाप्त करने की मांग की।विपक्ष के उपनेता प्रसन्ना आचार्य ने कहा कि बीजद ने विधानसभा अध्यक्ष सुरमा पाढ़ी से मुलाकात की और कांग्रेस विधायक तारा प्रसाद बहिनीपति के

निलंबन के फैसले की समीक्षा की मांग की। उन्होंने तारा प्रसाद बहिनीपति पर लगाए गए निलंबन को रद्द करने की भी मांग की है। खबर है कि विपक्ष के उपनेता प्रसन्ना आचार्य के साथ प्रताप देब और अरुण साहू ने अध्यक्ष से मुलाकात की और तारा का निलंबन खत्म करने की मांग की।

बिजेड़ी बिधायक रणेन्द्र प्रताप स्वैन गोमांस बेच रहे हैं : भाजपा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : भाजपा ने तिगिरिया पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराया , गिरिया बरमन रिजर्व फॉरेस्ट में बड़े पैमाने पर गायों की हत्या और गोमांस की तस्करी में शामिल लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। भाजपा के प्रदेश किसान मोर्चा अध्यक्ष महेश्वर साहू, भाजपा नेता अभय बारिक, शंकरशंकर मोहंती, पार्टी कार्यकर्ताओं और कार्यकर्ताओं ने तिगिरिया थाना प्रभारी से शिकायत की है।कई वर्षों से कुछ असामाजिक युवक ओडिशा के विभिन्न हिस्सों से गाय, बैल और सांडों

को पंकल और बारामरन के जंगलों में लाकर उनकी निर्मम हत्या करते हैं और मांस तथा मूल्यवान हड्डियों की तस्करी देश-विदेश में करते हैं।

भाजपा ने आरोप लगाया है कि स्थानीय बीजद नेता रणेन्द्र प्रताप स्वैन, जो 20 वर्षों से उनके कारोबार को बढ़ाने में मदद कर रहे हैं, अब उन्हें वित्तीय सहायता दे रहे हैं। यहां तक कि स्थानीय अधिकारी भी विधायक रणेंद्र प्रताप स्वाईं के प्रभाव में आकर चुप बैठे हैं। रणेन्द्र प्रताप व्यक्तिगत रूप से ऐसी बेईमान गतिविधियों में शामिल हैं। इसलिए शिकायत पत्र में स्वैन के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की गई है।

जहां अनुराग और रंग हैं वहां होली है ! (होली विशेष आलेख)

14 मार्च 2025 को होली है। रंगों का त्योहार होली की बात ही कुछ निराली है।होली के दिन जहां एक ओर रंग उड़ते हैं, तो वहीं दिल से दिल भी मिलते हैं। इस दिन लोग आपसी गिले-शिकवे भुलाकर एक-दूसरे को गालों पर रंग(गुलाल-अबीर) लगाते हैं और ये रंग दिलों में मिठास घोलने का काम करतें हैं। हंसी-ठिठोली, हुड़दंग बाजी, उल्लास और खुशियों से सरोबार करने वाला बहुत ही पावन और पवित्र त्योहार है होली। रंगों बिना जीवन हमेशा फीका होता है, इसलिए जीवन में भी रंगों का होना बहुत ही जरूरी है। वास्तव में देखा जाए तो होली 'राग' का त्योहार है, 'रंगों' का त्योहार है। 'राग' का तात्पर्य होता है- 'अनुराग' या 'प्रेम'। जहां 'अनुराग' और 'रंग' है, वहां होली है और जहां 'होली' है वहां हंसी है,खुशी है, पवित्रता है, स्नेह है, आपसी सद्भाव है, प्यार है, प्रेम है, बंधुत्व की भावना है। द्वेष और वैर-भाव से परे है होली। होली तो दिलों को मिलाने का मौसम है, आपसी दूरियां सभी मिटाने का मौसम है, होली का त्योहार ही ऐसा है, रंगों में डूब जाने का मौसम है। प्रकृति भी अपने पावन रंगों में होती है, जब होली के त्योहार का आगमन होता है। कहना चाहूंगा कि

राग-रंग से परे होकर रंग जाना ही तो होली है। वास्तव में फाल्गुन के महीने(फाग महीना) में ही जीवन और प्रकृति में उल्लास छाने लगता है, जो होली पर अपने चरम पर होता है। सच तो यह है कि होली न सिर्फ बाहर से बल्कि भीतर से भी रंग जाने की सीख देती है। होली नेह की ज्योति को जगमग करता है। यह रोमांच और प्रेम-आह्वान का त्योहार है ।जब होली आती है तो प्रकृति के मनोहारी व लुभावने रूप को निहार कर हर जीव के भीतर राग हिलोरें लेने लगता है। ये भीतर की हिलोरें, जब बाहर प्रकट होती हैं तो उत्सव का रूप ले लेती हैं और रंगों का पर्व होली मनाया जाता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि होली शीत ऋतु की विदाई और ग्रीष्म ऋतु के आगमन का सांकेतिक पर्व है ।यह वह समय होता है जब पलाश के फूल खिलते हैं और आम्र की मंजरिया महक-महक सी उठतीं हैं। हवाएं, फिजाएं अपना बासंती रंग प्रकृति के कण-कण में उड़ेलती नजर आतीं हैं। ढ़ोलक की थाप, स्वांग निकालना, चंग-डफ, बांसुरी मन को जैसे मोह लेते हैं ।जगह-जगह पर धमाल की धमक हृदय को सुकून और असीम आनंद की अनूभूति प्रदान करती है। होली में रंग हैं और रंग ही जीवन हैं। बिना रंगों के जीवन कुछ भी नहीं है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि रंगों में तीन रंग सबसे प्रमुख माने गए हैं- लाल, हरा और नीला। इस जगत में मौजूद बाकी सारे रंग इन्हीं तीन रंगों से पैदा किए जा सकते हैं। जो रंग सबसे ज्यादा हमारा ध्यान अपनी ओर खींचता है- वह है लाल रंग, क्योंकि सबसे ज्यादा चमकीला लाल रंग ही है। मानवीय चेतना में अधिकतम कंपन लाल रंग ही पैदा करता है। जोश और उल्लास का रंग लाल ही है। लाल रंग उत्साह, सौभाग्य, उमंग, साहस और नवजीवन व जोश का प्रतीक है। होली में भी यही है। होली में उत्साह होता है, सौभाग्य का प्रतीक है होली। होली हमें नवजीवन का संदेश देती है, यह होली ही जो हमारी रगो में स्फूर्ति और आनंद का संचालन करती है। देवी (चैतन्य का नारी स्वरूप) इसी जोश और उल्लास का प्रतीक है। वास्तव में, उनकी ऊर्जा में भरपूर कंपन और उल्लास होता है। देवी से संबंधित कुछ खास किस्म की साधना करने के लिए लाल रंग की जरूरत होती है। महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी भी अपनी एक कविता में रलाल गुलाल' की बात करते हैं। वे कहते हैं -'केशर की, कलि की पिचकारी पात-पात की गात संवारी। राग-पराग-कपोल किए हैं, लाल-गुलाल अमोल लिए हैं तरू-तरू के तन खोल दिए हैं, आरती जोत-उदोत उतारी-गन्ध-पवन की धूप धवारी। गाए खग-कुल-कण्ठ गीत शत, संग मृदंग तरंग-तीर-हत भजन-मनोरंजन-रत अविरत, राग-राग को फलित किया री विकल-अंग कल गगन विहारी।' वहीं हरा रंग विश्वास, उर्वरता, खुशहाली, समृद्धि और प्रगति का प्रतीक है। उर्वरता का तात्पर्य यहां विचारों की उर्वरता से है। हमारे विचार, हमारा मन द्वेष से परे होता है ।हरा रंग समृद्धि से जुड़ा है, हमारा जीवन हर प्रकार से समृद्ध हो, यही होली का संदेश है। वैसे भी दर्शन शास्त्र के अनुसार, हरे रंग को उत्सव के माहौल से भी जोड़ा जाता है। इसलिए होली खेलने में इस रंग (हरे रंग का) महत्व विशेष हो जाता है। प्रकृति से जुड़ा यह रंग हमारे विचारों में हरियाली का आविर्भाव करता है। वहीं पर नीला रंग सबको समाहित करके चलने का रंग है ।आकाश नीला होता है, समुद्र भी नीला ही दिखता है। नीला रंग शांति और स्थिरता का प्रतीक है ।आप देखिए कि इस जगत में जो कोई भी चीज बेहद विशाल और हमारी समझ से परे है, उसका रंग आमतौर पर नीला है। आकाश और समुद्र इन विशाल चीजों में से एक हैं। वास्तव में नीला रंग शुद्धता, सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक भी माना जाता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार अगर हम किसी दिन स्वयं को बहुत उदास महसूस करते हैं, तो हम नीले रंग की किसी चीज को ध्यान से देखते रहें, इससे हमें थोड़ी राहत महसूस होगी ।नीले रंग को एकाग्रता, शांत और चिंतनशील होने से जोड़कर देखा जाता है ।जिस प्रकार पानी बहता रहता है और उसकी तरलता किसी भी चीज को साफ कर देती है, उसी तरह पानी भी किसी के नकारात्मक विचारों को साफ करके किसी व्यक्ति को अच्छी चीजों को देखने का नजरिया

देता है। पानी जिस तरह बहता रहता है, उसे निकलने के लिए एक छोटी-सी जगह चाहिए होती है, उसी तरह नीला रंग भी रंगों के बीच में अपनी अलग जगह बना ही लेता है। नीला रंग विशुद्ध चक्र (थ्रोट चक्र) को संतुलित रखने में हमारी मदद करता है। विशुद्ध चक्र संचार और अभिव्यक्ति से जुड़ा होता है। समय के साथ होली के रंग व स्वरूप बदलने लगे हैं। कुछ दशकों पहले व अब की होली में काफी अंतर आया है। आज डिजिटल होली खेली जाने लगी है ।पहले के दौर में होली सिर्फ रंगों का खेल नहीं, बल्कि यह त्योहार एक सामूहिक उत्सव के रूप में मनाया जाता था ।लोग समूह में, टोलियों में एक-दूसरे के घर जाकर होली खेलते थे। बड़े-बुजूर्गों का आशीर्वाद लेने की परंपरा थी ।समय के साथ इसमें कमी आयी है। पलाश के फूल, हल्दी, मुल्तानी मिट्टी व प्राकृतिक रंगों की होली खेली जाती थी। पाठकों को बताता चलूं कि हमारे वेदों और महाकाव्यों में रंगों का उल्लेख मिलता है, जिसमें इनका धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व था। उस समय रंग प्राकृतिक तत्वों से बनाए जाते थे - जैसे हल्दी से पीला, चुकंदर से लाल, फूलों से गुलाबी और नीम के पत्तों से हरा रंग। इन रंगों का उपयोग न केवल सौंदर्य के लिए, बल्कि त्वचा के उपचार के लिए भी किया जाता था। हल्दी का पीला रंग त्वचा को सुरक्षा प्रदान करता था, जबकि चुकंदर से बना लाल रंग रक्त को शुद्ध करने में मदद करता था। इन रंगों का एक और फायदा था कि ये त्वचा के लिए भी सुरक्षित होते थे और शरीर के लिए लाभकारी थे ।रासायनिक और अप्राकृतिक रंगों को उतना स्थान नहीं था, जितना कि अब है। अप्राकृतिक व रासायनिक रंग हमारी त्वचा, आंखों के साथ हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर छोड़ते हैं। आज रंगों में सल्फर, असबाब, और भारी धातुओं का इस्तेमाल किया जाने लगा है, पहले लोग गुलाल-अबीर से होली मनाते थे ।रासायनिक रंगों के प्रयोग से जलन, रैशेज, आंखों में जलन, और एलर्जी जैसी समस्याएं उत्पन्न होने लगी हैं। साथ ही, पर्यावरण पर भी इन रंगों का बुरा असर पड़ने लगा है। पानी, हवा और मिट्टी को प्रदूषित करने के कारण ये रंग अब एक समस्या बन गए हैं ।होली गीतों ,फाग गीतों में कोई भी अश्लीलता नहीं होती थी। अलग-अलग मंडली बना कर ढोल -नगाडा, गीत, रंग-अबीर के साथ होली का पर्व खेला जाता था। स्वांग, हंसी-ठिठोली, हुड़दंग होता था। नशे के सेवन पर काफी हद तक नियंत्रण था। अब तो डीजे संस्कृति आ गई है, सेल्फी का दौर है ।पहले अमीर-गरीब बिना किसी भेदभाव के एक साथ होली मनाते थे। तीन-चार दशकों के पहले की होली की बात ही कुछ निराली थी। गाय के गोबर के बड़कूले बनाए जाते थे, अब बड़कूले गायब से हो गये हैं ।पहले हमारे गांवों की होली शहर की होली से अलग थी। महीने भर पहले भी डफ, ढ़ोल, चंग, बांसुरी गूंजने लगते थे ।होली के आगमन के सप्ताह भर पहले से ही इसकी खूब तैयारी होती थी ।खोखले बांस से पिचकारी बनायी जाती थी ।होली का त्योहार भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है, जो उल्लास, खुशी और रंगों के पर्व के रूप में मनाया जाता है। यह दिन न केवल रंगों के खेल के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह एक-दूसरे से गले मिलने, बुरा-भला भूलने और प्रेम तथा भाईचारे का संदेश देने का अवसर भी है। पहले की तरह आज आत्मीयता- भाईचारा कम दिखाई देता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज हानिकारक केमिकल रंगों-गुलालों का व्यवहार बढ़ा है। इतना ही नहीं, अब बड़ों से आशीर्वाद लेने की परंपरा भी लुप्त हो रही है। तीन-चार दशक पहले बसंत के आगमन के साथ होली का पर्व शुरू होता था। रंग-अबीर उड़ने लगते थे ।महीने भर के उमंग के बाद फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन होलिका दहन होता था। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि होली का त्योहार भी आदमी की आत्मा, उसके मन-मस्तिष्क में जगह बनाता है, वह नकारात्मक ऊर्जा, नकारात्मक विचारों को साफ करने का काम करता है। होली है तो द्वेष और नकारात्मक ऊर्जा रह ही नहीं सकती है। इसलिए आइए ! इस होली हम अपने जीवन में लाल, हरे व नीले रंगों को भरें और जीवन को उल्लासित, खुशियों से सरोबार करते हुए, द्वेष, आपसी कटुता और वैर-भाव से परे मदमस्त होकर होली की पावन और सनातन संस्कृति को भरपूर जीएं। अंत में यही कहूंगा कि -'रंगों में घुली मिठास है, हर चेहरे पर उल्लास है, दिल से दिल की हो पहचान, खुशियों से भर जाए हर अरमान।' होली पर्व की हार्दिक बधाई, मंगलकामनाएं।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

पसंद आती है हमको ये बेरुखी तेरी।

क्यों सरकार हम को तुम सताते हो,
इंतज़ार, वादा करते हो भूल जाते हो।
पसंद आती है हमको ये बेरुखी तेरी।
अच्छा है तुम्हें मनाएंगे, रुठ जाते हो।
मेरी रातों की कुछ ख़बर भी है, तुमको।
ख्वाब में आते हो, रातों से छूट जाते हो।
मुस्कुराना गजब कर गया तेरा मेरे यारा।
मदहोशी ये मेरी आंखों से जो पिलाते हो।
बिन तेरे जीना अब मुमकिन ही नहीं है।
वादों से मुश्ताक तुम तो मुकर जाते हो।

तरसती रहीं मेरी आंखे उजालों के लिए।

एक बात मुझे तेरी अब भी बहुत सताती है।
ख्वाबों में तू आती है, नींद मेरी खुल जाती है।
रब से दुआ में करता रहता हूं, तू मिल जाए मुझे।
दुआओं में असर नहीं, न जाने किधर ये जाती है।
वो तेरी खिड़की गली की जानिब जो खुलती है।
पलके झपकना आंखें मेरी फिर तो भूल जाती हैं।
वैसे तो तरसती रहीं मेरी आंखे उजालों के लिए।
हाय रब्बा चांदनी गैर के आंगन में बैठ जाती है।
साथ चलते चलते राहें बदल गई, उफ मेरे अल्लाह।
मुहब्बत सजा है, माना, दिल अक्सर ही तोड़ जाती है।
एक मुद्दत गुजरी हिकायत अपनी पुरी न हो सकी।
हर मुलाकात मुश्ताक उम्मीद हंसी छोड़ जाती है।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
सरदा मध्य प्रदेश

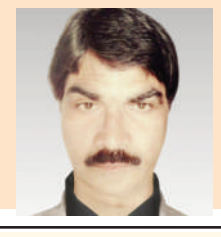

डेमेग्राफिक बदलाव,संथाल परगना अलग राज्य की मांग अब संसद में गूंजा

ज़रूरत पड़ी तो लगे राष्ट्रपति शासन : निशिकांत दुबे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। संथाल परगना मे बांग्लादेशी घुसपैठियों की संख्या में बढ़ोतरी का मुद्दा बुधवार को लोकसभा में झारखंड के सांसद निशिकांत दुबे ने उठाया है । अबकी बार झारखंड की आगामी परिसीमन में इलाका अलग से बनाने की मांग के साथ आदिवासियों की घटती सीटों की वकालत दुबे ने की है । उन्होंने सदन में शून्यकाल के दौरान यह विषय उठाते हुए सरकार से यह आग्रह भी किया कि इस समस्या के समाधान के लिए संथाल परगना को अलग राज्य बनाना चाहिए। इस दौरान निशिकांत दुबे ने कहा कि यदि जरूरत हो तो झारखंड में राष्ट्रपति शासन लगाने पर भी विचार किया जाए। झारखंड के विगत चुनाव में बांग्लादेशी घुसपैठिए का मामला का अब लोकसभा में पहुंचा है । साथालपरगना में घुसपैठिए की मुद्दा उठाने वाले दुबे ने कहा कि यह मुद्दा हिंदू-मुसलमान का नहीं है। निशिकांत दुबे ने साथालपरगना में डेमोग्राफिक बदलाव की तरफ इशारा करते हुए कहा कि 1951 से 2011 के बीच पूरे देश में मुस्लिम आबादी चार प्रतिशत बढ़ी, लेकिन संथाल परगना में 15 प्रतिशत बढ़ी। यह बांग्लादेशी घुसपैठियों के कारण हुआ है। उनके मुताबिक, 1951 में संथाल परगना में आदिवासियों की आबादी 45 प्रतिशत थी जो 2011 में घटकर सिर्फ 28 प्रतिशत रह गई, जबकि इसी अवधि में मुसलमानों की आबादी 9 प्रतिशत से बढ़कर 24 प्रतिशत हो गई। निशिकांत दुबे ने इस मामले पर चिंता जाहिर की है। दुबे ने कहा कि मेरा आग्रह है कि परिसीमन बांग्लादेशियों को अलग करके ही किया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि इस पूरे इलाके को एक राज्य बना सकते हैं तो बनाइये ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023